www.newsparivahan.com
सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 223, नई दिल्ली, सोमवार 20 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

शुभ दीपावली
आप और आपके परिवार को दीपोत्सव पर्व दीपावली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

03 जीआरएपी की मौजूदा अनुसूची के चरण-II ('बहुत खराब' वायु गुणवत्ता)....
06 बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण भारत में धूप का समय घट रहा है
08 बिना रॉयल्टी जंगल की मिट्टी की खुली लूट व बेधड़क पेड़ कटाई ...

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

डिस्ट्रिक्ट वेस्ट आपदा मित्र & आपदा सखी & सिविल डिफेंस

दीवाली के दौरान आग से सुरक्षा के लिए क्या करें:

- लाइसेंस प्राप्त विक्रेताओं से पटाखे खरीदें।
- खुली जगहों पर पटाखे जलाएँ।
- सूती कपड़े पहनें।
- सुरक्षित दूरी बनाए रखें।

आपात स्थिति में डायल करें : 101

DDMA हेल्पलाइन 1077 पुलिस हेल्पलाइन 112

सुरक्षित दिवाली – हमारी ज़िम्मेदारी

नवदीप सिंह

साथियों, दिवाली का त्योहार खुशियों का प्रतीक है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि हमारे बेजुबान दोस्त — — इस दिन क्या अनुभव करते हैं?

पटाखों का शोर, धुआँ और चमक उनके लिए डर, दर्द और तकलीफ लेकर आता है। कई जानवर भाग जाते हैं, चोटिल हो जाते हैं या खाना-पीना छोड़ देते हैं।

आइए, इस बार कुछ अलग करें —
शोर नहीं, शांति फैलाएँ
पटाखों की जगह प्यार बाँटें
और अपने आसपास के जानवरों की सुरक्षा सुनिश्चित करें
क्योंकि वो बोल नहीं सकते, इसलिए हमें बोलना होगा।

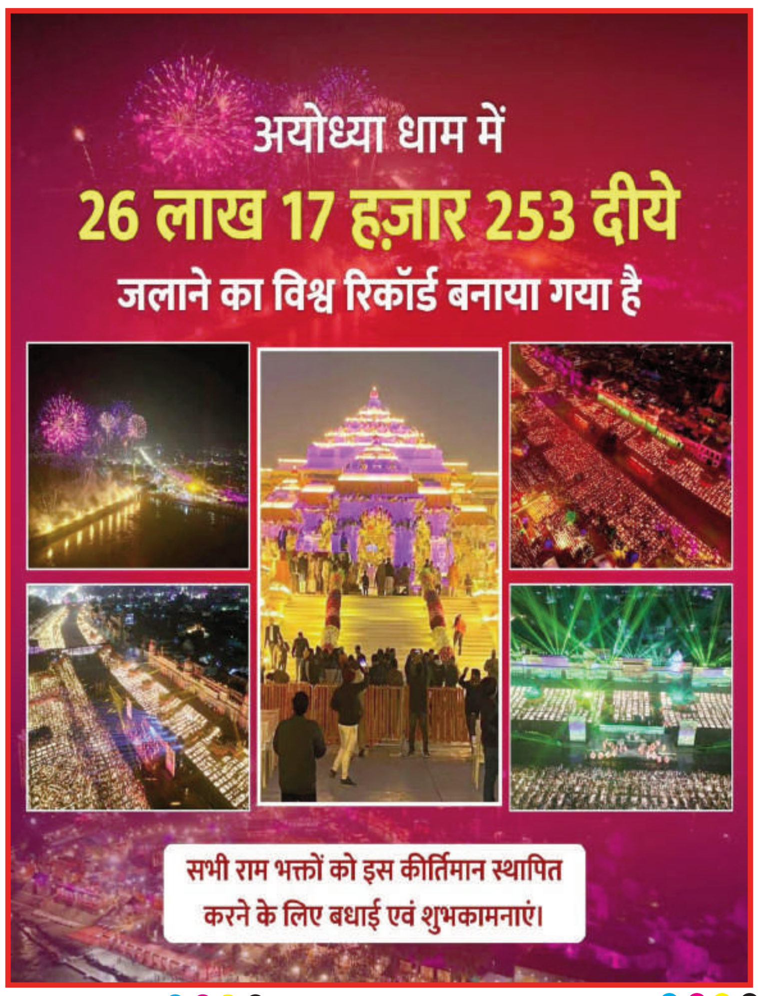

दीपावली आज

हर वर्ष कार्तिक अमावस्या को दिवाली का त्योहार मनाया जाता है। दिवाली को दीपावली भी कहा जाता है। मान्यता है कि इस दिन मां लक्ष्मी पृथ्वी लोक पर भ्रमण करती हैं और जो भक्त उनकी विधि-विधान से पूजा-अर्चना करता है, उसकी प्रार्थना स्वीकार करती हैं और अपनी कृपा बरसाती हैं। इस दिन मां लक्ष्मी के स्वागत के लिए लोग घरों में दीपक लगाते हैं।

दीपावली 2025 की तारीख

==========================

दीपावली की तारीख को लेकर उलझन इसलिए है क्योंकि अमावस्या तिथि 20 अक्टूबर को दोपहर 3:44 बजे शुरू होकर 21 अक्टूबर को शाम 5:50 बजे तक रहेगी। ऐसे में दोनों दिनों को लेकर चर्चा है। लेकिन दीपावली का मुख्य पर्व रात में मनाया जाता है। शास्त्रों में लक्ष्मी पूजा प्रदोष काल और निशीथ काल में करने का विधान है। इस बार ये दोनों मुहूर्त 20 अक्टूबर की रात को ही हैं। इसलिए यह दिन दीपावली मनाने के लिए अधिक शुभ माना जा रहा हैं।

दिवाली लक्ष्मी गणेश पूजन मुहूर्त

======================

इस बार दिवाली पर पूजन के लिए दो मुहूर्त मिलेंगे। पहला शुभ मुहूर्त प्रदोष काल में है। इस दिन प्रदोष काल शाम 05 बजकर 46 मिनट से रात्रि 08 बजकर 18 मिनट के बीच रहेगा, जिसमें वृषभ काल शाम 7 बजकर 08 मिनट से लेकर रात 9 बजकर 03 मिनट तक रहेगा। इसमें भी मां लक्ष्मी का पूजन किया जा सकता है।

इसके अलावा, लक्ष्मी पूजा के लिए सबसे खास शुभ मुहूर्त शाम 07 बजकर 08 मिनट से शाम 08 बजकर 18 मिनट के बीच का रहेगा. यानी लक्ष्मी पूजन के लिए आपको 1 घंटे 11 मिनट का समय मिलेगा।

दिवाली पूजन विधि

=============

दिवाली पर पूर्व दिशा या ईशान कोण में एक चौकी रखें। चौकी पर लाल या गुलाबी वस्त्र बिछाएं। पहले गणेश जी की मूर्ति रखें। फिर उनके दाहिने ओर लक्ष्मी जी को रखें। आसन पर बैठें और अपने चारों ओर जल छिड़क लें। इसके बाद संकल्प लेकर पूजा आरम्भ करें। एक मुखी घी का दीपक जलाएं। फिर मां लक्ष्मी और भगवान गणेश को फूल और मिठाइयां अर्पित करें।

इसके बाद सबसे पहले गणेश और फिर मां लक्ष्मी के मंत्रों का जाप करें। अंत में आरती करें। और शंख ध्वनि करें। घर में दीपक जलाने से पहले थाल में पांच दीपक रखकर फूल आदि अर्पित करें। इसके बाद घर के अलग-अलग हिस्सों में दीपक रखना शुरू करें। घर के अलावा कुएं के पास और मंदिर में दीपक जलाएं। दीपावली का पूजन लाल, पीले या चमकदार रंग के वस्त्र धारण करके करें। काले, भूरे या नीले रंग से परहेज करें।

दिवाली का महत्व

============

दिवाली के दिन भगवान राम लंका पर विजय प्राप्त करके वापस अयोध्या आए थे। इस दिन से हर साल कार्तिक अमावस्या पर दिवाली मनाई जाती है। दिवाली पर माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की विधिवत पूजा अर्चना की जाती है, साथ ही भगवान राम के आने की खुशी में दीप जलाए जाते हैं।

दिवाली की रात का शगुन

======================

दिवाली के दिन महालक्ष्मी अपने वाहन उल्लू पर सवार होकर पृथ्वी भ्रमण के लिए आती हैं। इसलिए लोग अपने घर और छत की सफाई करते है। घर में रंगोली बनाकर देवी लक्ष्मी का स्वागत करते हैं। कहते हैं कि इस रात कुछ ऐसे शगुन होते हैं जो बताते हैं कि महालक्ष्मी का घर में आगमन हुआ है।

दीवाली पर शिववास योग समेत बन रहे हैं कई मंगलकारी संयोग, बरसेगी मां लक्ष्मी की कृपा

कार्तिक अमावस्या पर दिवाली मनाई जाती है, जिसमें देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा प्रदोष काल में की जाती है। वर्ष 2025 में, कार्तिक अमावस्या 20 अक्टूबर को शुरू होकर 21 अक्टूबर को समाप्त होगी, इसलिए दिवाली 20 अक्टूबर को मनाई जाएगी। पूजा के लिए शुभ मुहूर्त शाम 05 बजकर 46 मिनट से 08 बजकर 18 मिनट तक है। इस दिन शिववास योग सहित कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं, जो साधक के सुख और सौभाग्य में वृद्धि करते हैं।

कार्तिक माह की अमावस्या तिथि देवी मां लक्ष्मी को समर्पित है। इस शुभ अवसर पर भक्ति भाव से देवी मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। दीवाली के दिन लक्ष्मी गणेश जी की पूजा प्रदोष काल में होती है। इस दौरान मां लक्ष्मी की पूजा करने से दोगुना फल मिलता है।

ज्योतिषियों की मानें तो कार्तिक अमावस्या तिथि पर शिववास योग समेत कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं। इन योग में लक्ष्मी गणेश जी की पूजा करने से साधक के सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है। साथ ही जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के संकटों से मुक्ति मिलेगी। आइए, पूजा का शुभ मुहूर्त और योग जानते हैं-

कब मनाई जाती है दीवाली?

हर साल कार्तिक माह की अमावस्या तिथि पर दीवाली मनाई जाती है। इस साल कार्तिक माह की अमावस्या तिथि 20 अक्टूबर को शाम 03 बजकर 44 मिनट से शुरू होगी और 21 अक्टूबर को शाम 05 बजकर 54 मिनट पर समाप्त होगी। इसके बाद यानी 21 अक्टूबर को शाम 05 बजकर 54 मिनट के बाद कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि शुरू होगी। इसके लिए 20 अक्टूबर को दीवाली मनाई जाएगी।

कब की जाती है दीवाली पूजा?

दीवाली के दिन प्रदोष काल में देवी मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। ज्योतिषियों की मानें तो स्थिर लग्न में लक्ष्मी गणेश जी की पूजा करने से घर में मां लक्ष्मी का वास होता है। इसके लिए दीवाली के दिन प्रदोष काल में लक्ष्मी गणेश जी की पूजा की जाती है। दीवाली के दिन प्रदोष काल शाम 05 बजकर 46 मिनट से शुरू होगी। इस समय से लेकर शाम 08 बजकर 18 मिनट तक पूजा के लिए शुभ मुहूर्त है।

दीवालीपूजा 2025 शुभ मुहूर्त

दीवाली पर पूजा के लिए शुभ समय संध्याकाल में 07 बजकर 08 मिनट से लेकर 08 बजकर 18 मिनट तक है। प्रदोष काल में पूजा के लिए शुभ समय शाम 05 बजकर 46 मिनट से लेकर 08 बजकर 18 मिनट तक है। इसके साथ ही वृषभ काल में पूजा के लिए शुभ समय शाम 07 बजकर 08 मिनट से लेकर 09 बजकर 03 मिनट तक है। इसके अलावा, निशिता काल में देवी मां लक्ष्मी की पूजा का समय रात 11 बजकर 41 मिनट से 12 बजकर 31 मिनट तक है। साधक अपनी सुविधा अनुसार समय पर देवी मां लक्ष्मी की पूजा कर सकते हैं।

दीवाली पूजा 2025 शुभ योग

कार्तिक अमावस्या पर दुर्लभ शिववास योग का संयोग बन रहा है। शिववास योग का संयोग दोपहर के बाद बन रहा है। शिववास योग का संयोग दोपहर 03 बजकर 44 मिनट से है, जो पूर्ण रात्रि तक है। इस दौरान देवों के देव महादेव कैलाश पर मां पार्वती के साथ रहेंगे। शिववास योग के दौरान शिव-शक्ति की पूजा करने से साधक को अमोघ और अक्षय फल की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही अभिजीत मुहूर्त का भी संयोग है। वहीं, हस्त और चित्रा नक्षत्र का दुर्लभ संयोग है।

पंचांग

सूर्योदयः सुबह 06 बजकर 25 मिनट पर
सूर्यास्तः शाम 05 बजकर 46 मिनट पर
ब्रह्म मुहूर्तः सुबह 04 बजकर 44 मिनट से 05 बजकर 34 मिनट तक
विजय मुहूर्तः दोपहर 01 बजकर 59 मिनट से 02 बजकर 45 मिनट तक
गोधूलि मुहूर्तः शाम 05 बजकर 46 मिनट से 06 बजकर 12 मिनट तक
निशिता मुहूर्तः रात 11 बजकर 41 मिनट से 12 बजकर 31 मिनट तक

गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े, दिखावा नहीं।

गोवर्धन पूजा केवल भगवान कृष्ण का पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति, गाय और धरती के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति दिखावे में नहीं, संवेदना में है। आज जब पूजा इंस्टाग्राम की तस्वीर बन चुकी है और गोबर की जगह प्लास्टिक ने ले ली है, तब ज़रूरत है श्रद्धा के वास्तविक अर्थ को समझने की। गोवर्धन पर्व हमें याद दिलाता है कि मिट्टी, जल और जीव-जंतु की सेवा ही असली आराधना है। पूजा तब पूर्ण होती है जब धरती मुस्कुराती है, न कि सिर्फ़ कैमरा।

डॉ. सत्यवान सौरभ

दीपों की कतारें अभी बुझी भी नहीं होतीं कि अगली सुबह गोवर्धन पर्व आ जाता है। यह त्योहार केवल भगवान कृष्ण की पूजा नहीं, बल्कि प्रकृति, गोवंश और सामूहिक श्रम के प्रति कृतज्ञता का उत्सव है। यह पर्व उस सादगी, मिट्टी की सुगंध और मन की पवित्रता का प्रतीक है, जो भारतीय संस्कृति की जड़ों में रची-बसी है। लेकिन जब श्रद्धा का अर्थ केवल दिखावे, फोटो और स्टेटस तक सीमित रह गया हो, तब "गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े" कहना एक कामना भी है और एक चेतावनी भी।

कृष्ण की कथा में गोवर्धन पूजा का मूल भाव बहुत गहरा है। जब इंद्र के अहंकार से तंग आकर गोकुलवासी भीषण वर्षा में डूबने लगे, तब बालक कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठा लिया। इस घटना को केवल एक चमत्कार के रूप में देखना उसके अर्थ को छोटा करना है। असल में यह एक सामाजिक प्रतीक है। यह हमें बताती है कि जब सत्ता अहंकार में अंधी हो जाती है, तब जनसाधारण को अपने सामूहिक साहस से संकट से निकलना पड़ता है। कृष्ण ने गोवर्धन पूजा की परंपरा इसलिए शुरू की ताकि लोग प्रकृति, गोमाता और अपनी श्रमशक्ति को देवत्व के रूप में स्वीकारें—क्योंकि वही असली सहायक हैं, न कि केवल आकाश के देवता।

गोवर्धन पूजा दरअसल प्रकृति पूजा है। गाय, गोबर, गोचर भूमि—ये सब उस पारिस्थितिकी का हिस्सा हैं जिसने भारतीय जीवन को आत्मनिर्भर बनाया। जब हम गोबर, मिट्टी और फूलों से गोवर्धन बनाते हैं, तो वह धरती और पर्यावरण के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक होता है। वह एक स्मरण है कि यह मिट्टी ही हमारी असली माता है, जो हर बीज को अंकुरित कर हमें अन्न देती है। लेकिन आज के दौर में यह सब प्रतीक धीरे-धीरे खोते जा रहे हैं। गोबर की जगह प्लास्टिक की सजावट ने ले ली है, मिट्टी की गंध पर परफ्यूम का कब्जा हो गया है। गोवर्धन पूजा अब इंस्टाग्राम पोस्ट बन गई है—जिसमें "हैप्पी गोवर्धन पूजा" के स्टिकर तो हैं, पर गाय के लिए चारा नहीं। श्रद्धा अब धरती पर नहीं, स्क्रीन पर चमकती है।

कृष्ण ने कहा था—"कर्मण्येवाधिकारस्ते।" लेकिन हमने कर्म छोड़कर कर्मकांड को पकड़ लिया। पूजा अब उस भावना से दूर जा रही है जिसमें सामूहिकता, सहयोग और संवेदना थी। पहले गाँवों में सब मिलकर गोवर्धन बनाते थे, बच्चे गोबर लाते, महिलाएँ फूल सजातीं, पुरुष दीप रखते। वह सामूहिक श्रम और सादगी का पर्व था, जिसमें न कोई प्रतियोगिता थी, न तुलना। आज हर घर में अलग-अलग पूजा होती है—मानो यह अहंकार का गोवर्धन हो गया हो। श्रद्धा भी अब प्रदर्शन बन गई है, जिसमें पूजा का असल अर्थ खो गया है।

भारत का सबसे बड़ा विरोधाभास यही है कि हम गाय को "माता" कहकर आँसू बहाते हैं, लेकिन सड़कों पर वही गाय भूख और दर्द से मरती है। गोवर्धन पूजा का केंद्र ही गाय है, और हम उसी केंद्र को भुला चुके हैं। यह कैसी श्रद्धा है जो दीप जलाती है पर एक मुट्ठी चारा देने में कंजूसी करती है? पूजा का अर्थ केवल आरती नहीं, जिम्मेदारी भी है। जब तक हम गोवंश, जल, मिट्टी और वृक्षों के प्रति करुणा नहीं दिखाएँगे, तब तक हमारी पूजा अधूरी रहेगी।

त्योहार अब भक्ति नहीं, भोग का उत्सव बनते जा रहे हैं। गोवर्धन पूजा भी अब "सेल्फी सीज़न" का हिस्सा बन गई है। प्रसाद, थाल और पूजा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर अपलोड करने की होड़ लग जाती है। लेकिन असली भोग—जो सेवा, संतोष और सादगी में था—वह कहीं खो गया है। हमारी दादी-नानी के समय यह पर्व मिट्टी और मेहनत की खुशबू से भरा होता था। अब यह कृत्रिम रोशनी और दिखावे का तमाशा बन गया है। श्रद्धा अब कैमरे की फ्लैश पर निर्भर है, आत्मा की रोशनी पर नहीं।

अगर कृष्ण आज होते, तो शायद पूछते—क्या तुम सच में गोवर्धन बना रहे हो, या गोवर्धन के मूल अर्थ को मिटा रहे हो? क्या तुम्हारी पूजा में धरती की गंध है या केवल मॉल की सुगंध? क्या तुम्हारी आरती में गाय की घंटी की आवाज़ है या मोबाइल के नोटिफिकेशन की? ये सवाल हमारे भीतर की श्रद्धा की जाँच करते हैं। क्योंकि भक्ति तभी सार्थक होती है जब वह दूसरों के सुख-दुख में सहभागी बनती है।

ग्रामीण भारत में आज भी यह पर्व आत्मीयता से मनाया जाता है। गाँव की गलियों में बच्चे नंगे पैर गोबर इकट्ठा करते हैं, महिलाएँ पारंपरिक गीत गाती हैं—"गोवर्धन धर्यो गिरधारी।" वहाँ पूजा में सादगी है, पर दिल है। वहीं शहरी भारत में गोवर्धन पूजा "रील" बन चुकी है—पाँच मिनट की पूजा, फिर पिज़्ज़ा पार्टी। यह फर्क बताता है कि विकास ने हमें सुविधा तो दी, पर संवेदना छीन ली। हमारी आधुनिकता ने हमें अपने ही मूल से काट दिया है।

जब जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट मानवता के सामने सबसे बड़ा खतरा बन चुके हैं, तब गोवर्धन पूजा का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि ईश्वर से प्रार्थना करने से पहले हमें धरती के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। यह वह समय है जब हमें गोवर्धन पूजा की व्याख्या को नये अर्थों में देखना चाहिए—केवल धर्म नहीं, बल्कि जीवनशैली के रूप में। अगर हम इस दिन पेड़ लगाएँ, गोशाला में सेवा करें, तालाब साफ़ करें, पशुओं को भोजन दें—तो वही सच्ची श्रद्धा होगी।

श्रद्धा का अर्थ केवल झुकना नहीं, जुड़ना है—धरती से, जल से, पशु से, मनुष्य से। जब श्रद्धा जिम्मेदारी के साथ जुड़ती है, तभी वह भक्ति बनती है। वरना वह सिर्फ रस्म रह जाती है। कृष्ण का गोवर्धन पर्व हमें यही सिखाता है—कि असली धर्म दूसरों के लिए खड़ा होना है।

कृष्ण ने इंद्र का अहंकार तोड़ा था, लेकिन आज हमारे भीतर भी ऐसे सैकड़ों इंद्र पल रहे हैं—लालच, ईर्ष्या, उपभोग, दिखावा और अधिकार की अंधी चाह। हमें इन इंद्रों को शांत करने के लिए अपने भीतर एक गोवर्धन उठाना होगा। वह गोवर्धन कोई पत्थर का पहाड़ नहीं, बल्कि विवेक, संयम और करुणा का पहाड़ है, जिसे हम सबको मिलकर थामना है।

गोवर्धन पूजा का एक और गहरा पक्ष है—यह पर्व सामूहिकता का उत्सव है। जब गोवर्धन के नीचे सारा गोकुल एकत्र हुआ था, तब किसी ने किसी की जात, पद या संपत्ति नहीं पूछी थी। सब एक ही छत के नीचे थे—बराबर, सुरक्षित, जुड़ाव में। यह दृश्य बताता है कि संकट के समय समाज को एकता में रहना चाहिए। पर आज हम अपने-अपने घरों के भीतर बंद हैं, पूजा भी निजी हो गई है, और समाज से संबंध केवल औपचारिक रह गए हैं। हमें फिर वही सामूहिकता लौटानी होगी, जिसमें साथ रहना भी पूजा है।

यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि शक्ति का अर्थ केवल भौतिक बल नहीं होता। जब बालक कृष्ण ने पर्वत उठाया था, तब वह शारीरिक नहीं, नैतिक शक्ति थी। आज के युग में वह नैतिक शक्ति सबसे बड़ी कमी बन गई है। हमें हर घर में, हर हृदय में एक छोटा-सा गोवर्धन बनाना होगा—जहाँ श्रद्धा, सादगी और करुणा एक साथ बसें।

अगर गोवर्धन पूजा का सच्चा पालन करना है, तो तीन संकल्प लेने होंगे। पहला, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता—हर पूजा के बाद एक पेड़ लगाना या किसी पशु को भोजन देना। दूसरा, सादगी का पुनर्जागरण—दिखावे की जगह सच्चे भाव अपनाना। और तीसरा, सामूहिकता का पुनर्स्थापन—पूजा को फिर से मिल-जुलकर मनाने की परंपरा लौटाना, ताकि समाज में संवाद और संवेदना जिंदा रहे।

आज का समय ऐसा है जब श्रद्धा की परिभाषा बदल रही है। श्रद्धा अब विज्ञापनों और प्रचार में दिखने लगी है, पर जीवन से गायब हो रही है। हम मंदिरों में झुकते हैं, पर किसी घायल गाय या भूखे इंसान के आगे नहीं रुकते। हम दीये जलाते हैं, पर अपने मन के अंधकार से डरते हैं। यही वह विच्छेदन है जो हमें भीतर से खोखला बना रहा है। गोवर्धन पूजा उस खोखलेपन को भरने का अवसर है—अगर हम चाहें तो।

यह पर्व केवल धार्मिक कृत्य नहीं, बल्कि नैतिक अनुबंध है—मनुष्य और प्रकृति के बीच। यह याद दिलाता है कि देवता की पूजा से पहले धरती की सेवा जरूरी है। गोवर्धन पर्वत अब कोई भौतिक शिला नहीं, बल्कि हमारे भीतर का आत्मबल है, जो संकट के समय खड़ा रहता है। इंद्र अब कोई स्वर्गीय देव नहीं, बल्कि हमारी इच्छाओं का प्रतीक है, जो हर सुख पर वर्षा की तरह गिरना चाहता है। और कृष्ण वह विवेक है जो उसे संयम सिखाता है।

जब हम कहते हैं "गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े", तो इसका अर्थ केवल पूजा-पाठ की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि आस्था की गहराई से है। श्रद्धा वह शक्ति है जो हमें कर्तव्य के प्रति सचेत करती है। अगर श्रद्धा बढ़ी, तो समाज में संवेदना बढ़ेगी; अगर श्रद्धा गहरी हुई, तो राजनीति में नैतिकता लौटेगी; अगर श्रद्धा सच्ची हुई, तो पर्यावरण बचेगा।

हमारे समाज को आज एक ऐसे गोवर्धन की ज़रूरत है जो दिखावे के नहीं, दायित्व के पत्थरों से बना हो। एक ऐसे पर्व की, जो हमें सजावट नहीं, सच्चाई सिखाए। एक ऐसी श्रद्धा की, जो सोशल मीडिया पर नहीं, समाज के भीतर बसे। गोवर्धन पूजा का सार यही है—जहाँ प्रकृति, पशु और मनुष्य एक सूत्र में बंधे हों।

कृष्ण का संदेश बहुत सीधा है—"जब संकट आये, तो पर्वत उठाओ, पर मिलकर।" यही वह पंक्ति है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी। अगर हम गोवर्धन पूजा के दिन अपने भीतर यह संकल्प लें कि हम दिखावे से अधिक जिम्मेदारी निभाएँगे, तो यही पूजा सबसे पवित्र होगी।

गोवर्धन पूजा हमें याद दिलाती है कि मिट्टी में ही जीवन की सबसे सच्ची सुगंध है, और उसी मिट्टी से हमारी श्रद्धा भी अंकुरित होती है। वह मिट्टी जो गाय के खुरों से पवित्र होती है, किसान के श्रम से सींची जाती है, और आकाश की धूप से सुनहरी बनती है। जब तक हम इस मिट्टी का आदर नहीं करेंगे, तब तक कोई भी पूजा पूर्ण नहीं होगी।

इसलिए इस बार जब दीप जलाएँ, तो साथ एक वचन भी लें—कि गोवर्धन पूजा से केवल घर नहीं, मन भी उजले होंगे। श्रद्धा केवल आरती की लौ में नहीं, व्यवहार की रोशनी में भी दिखेगी। तभी हम सच्चे अर्थों में कह सकेंगे—

"गोवर्धन पूजा से श्रद्धा बढ़े, दिखावा नहीं।"

क्योंकि श्रद्धा बढ़ी तो ईश्वर अपने आप हमारे भीतर उतर आएगा, और शायद तब हमें किसी गोवर्धन की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी—क्योंकि हर मन स्वयं पर्वत बन जाएगा।

बदलते समय में भाई दूज: प्रेम और अपनापन कैसे बना रहे

> "त्योहार अब सिर्फ़ रस्म नहीं, रिश्तों की परीक्षा बनते जा रहे हैं — सवाल यह है कि क्या हमारे दिलों में अब भी वही स्नेह बचा है?" भाई दूज सिर्फ़ तिलक और मिठाई का त्योहार नहीं, बल्कि रिश्तों की वह डोर है जो समय की रफ़्तार में भी स्नेह का रंग बनाए रखती है। पर बदलते दौर में जहाँ मुलाकातें वीडियो कॉल पर सिमट गई हैं और तिलक डिजिटल इमोजी बन गया है, वहाँ यह सवाल उठता है — क्या रिश्तों की गर्माहट अब भी वैसी ही है? भाई दूज हमें याद दिलाता है कि प्रेम केवल परंपरा नहीं, आत्मीयता का अभ्यास है। यह त्योहार हमें अपने व्यस्त जीवन में अपनापन लौटाने का अवसर देता है।

— डॉ. प्रियंका सौरभ

दीवाली के बाद का शांत उजाला जब धीरे-धीरे घरों में उतरता है, तब आती है भाई दूज की सुबह — मिठास और ममता से भरी। बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाती हैं, आरती करती हैं और मन ही मन यह कामना करती हैं कि उनका भाई सदा सुखी रहे। बदले में भाई बहन को उपहार देता है और यह वादा कि जीवनभर उसका साथ निभाएगा। यह दृश्य जितना सरल लगता है, उतना ही गहरा भी है। क्योंकि यह सिर्फ एक तिलक नहीं, रिश्तों में भरोसे, सुरक्षा और प्रेम की लकीर खींचने का संस्कार है।

लेकिन आज जब समय बदल रहा है, रिश्तों की परिभाषाएँ बदल रही हैं, तब यह सवाल उठता है कि क्या भाई दूज का वही अपनापन और स्नेह अब भी पहले जैसा है? क्या भाई-बहन का रिश्ता अब भी उतना ही सहज, निर्भीक और भावनाओं से भरा है, जैसा कभी गाँव की मिट्टी और आँगन की धूप में होता था?

कभी भाई दूज सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन का उत्सव हुआ करता था। बहनें सवेरे से तैयार होकर भाई की प्रतीक्षा करती थीं, घरों में पकवानों की खुशबू फैल जाती थी। भाई दूर-दूर से बहन के घर पहुँचते थे, क्योंकि यह दिन मिलन का होता था। न कोई दिखावा, न औपचारिकता—बस भावनाओं का सच्चा प्रवाह। उस समय रिश्तों में दूरी नहीं, दिलों की गर्माहट थी।

आज भी भाई दूज मनाया जाता है, पर उसकी आत्मा कहीं धुंधली पड़ने लगी है। अब भाई दूज का तिलक कई बार व्हाट्सएप पर भेजे गए इमोजी से लग जाता है, राखी और तिलक दोनों ऑनलाइन ग्रीटिंग्स में सिमट गए हैं। "भाई दूज मुबारक" का संदेश सोशल मीडिया पर चमकता है, पर उसके पीछे की नज़रों में अब वो अपनापन नहीं दिखता जो किसी बहन की आँखों में तब झलकता था जब वह अपने भाई का चेहरा देखती थी।

यह बदलाव केवल तकनीक का नहीं, संवेदना का भी है। समय ने हमें जोड़ा जरूर है, पर जोड़े हुए रिश्ते अब दिलों से ज़्यादा डिवाइसों में रहने लगे हैं। भाई दूज जैसे पर्व जो निकटता, स्नेह और संवाद के प्रतीक थे, अब "स्टेटस अपडेट" बनते जा रहे हैं। इस बदलाव की जड़ें आधुनिक जीवन की भागदौड़, व्यावसायिकता और आत्मकेंद्रित सोच में हैं, जिसने हमें अपनों से दूर कर दिया है।

भाई दूज का पर्व केवल बहन की पूजा नहीं, बल्कि उस भावनात्मक संतुलन का प्रतीक भी है, जिसमें भाई सुरक्षा देता है और बहन संवेदना। दोनों एक-दूसरे की जरूरत बनकर रिश्तों के समाज का ढांचा खड़ा करते हैं। लेकिन आज की पीढ़ी में यह रिश्ता धीरे-धीरे औपचारिक होता जा रहा है। शहरों में बढ़ती व्यस्तता, प्रवास, और आत्मनिर्भर जीवनशैली ने भाई-बहन के रिश्तों को एक 'मौके की मुलाकात' बना दिया है।

जहाँ पहले भाई अपनी बहन के घर जाकर दिन भर का समय उसके परिवार के साथ बिताता था, अब वह मुलाकात कुछ मिनटों या वीडियो कॉल तक सीमित रह जाती है। बहनें भी अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, भावनात्मक रूप से मज़बूत हैं, और जीवन के हर फैसले खुद लेती हैं। यह बदलाव सकारात्मक भी है, क्योंकि अब बहनें "सुरक्षा की मोहताज" नहीं, बल्कि बराबरी के आत्मसम्मान की प्रतीक हैं। मगर इस बराबरी के दौर में भी रिश्तों की गर्माहट बनी रहना जरूरी है।

त्योहारों का उद्देश्य ही यही होता है—रिश्तों को दोबारा गढ़ना, दूरी मिटाना। भाई दूज हमें हर साल यह याद दिलाती है कि रिश्तों का पोषण केवल खून से नहीं, व्यवहार से होता है। लेकिन आधुनिकता की रफ्तार ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हम भावनाओं को भी समय-सारिणी में बाँधने लगे हैं। कभी-कभी लगता है कि रिश्ते अब कैलेंडर पर टिके कुछ त्योहारी दिनों के मेहमान बन गए हैं।

आज की बहनें केवल उपहार नहीं, भावनात्मक साझेदारी चाहती हैं। उन्हें यह नहीं चाहिए कि भाई बस त्यौहार पर पैसे या गिफ्ट दे दे; वे चाहती हैं कि भाई उन्हें समझे, उनका सम्मान करे, उनके निर्णयों में साथ खड़ा रहे। और भाई भी चाहते हैं कि बहन सिर्फ स्नेह की मूर्ति नहीं, बल्कि सहयोग और संवेदना की साझेदार बने। यही रिश्ते का नया रूप है—बराबरी और आत्मीयता का संतुलन।

भाई दूज अब केवल बहन की सुरक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि आपसी सम्मान और संवाद का भी प्रतीक बनना चाहिए। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि भाई-बहन का रिश्ता सिर्फ बचपन का नहीं होता, वह उम्रभर का साथ है। भले जीवन के रास्ते अलग हों, पर दिलों के रास्ते जुड़े रहने चाहिए।

आज का समाज रिश्तों को "प्रोडक्टिविटी" और "प्रोफेशनलिज़्म" की कसौटी पर तौलने लगा है। हम दोस्ती में भी फायदे ढूँढ़ते हैं, तो पारिवारिक रिश्ते भी कभी-कभी बोझ लगने लगते हैं। भाई दूज ऐसे ही समय में हमें झकझोरती है—कि प्रेम का कोई विकल्प नहीं होता। तकनीक रिश्ते बना सकती है, पर आत्मीयता केवल स्पर्श, मुस्कान और अपनापन से आती है।

यह सही है कि समय बदल रहा है और रिश्तों की शैली भी बदलनी चाहिए। लेकिन हर बदलाव में भावनाओं का बीज बचा रहना जरूरी है। भाई दूज के पर्व को नया अर्थ देना होगा—जहाँ भाई और बहन दोनों एक-दूसरे की भावनाओं, संघर्षों और स्वतंत्रता का सम्मान करें। त्योहार तभी जीवित रहते हैं जब वे समय के साथ अपनी आत्मा को बचाए रखते हैं।

आज की बहनें अपने भाइयों से केवल सुरक्षा नहीं, बल्कि समानता चाहती हैं; और भाई भी यह समझने लगे हैं कि बहन की स्वतंत्रता उसकी शक्ति है, विद्रोह नहीं। यह समझदारी इस रिश्ते को और गहरा बना सकती है। भाई दूज अब उस सामाजिक ढांचे का प्रतीक बन सकता है जहाँ पुरुष और स्त्री के बीच सहयोग और संवेदना का रिश्ता हो, न कि संरक्षण और निर्भरता का।

कभी-कभी लगता है कि त्योहारों की भी अपनी भाषा होती है, जो हमें वह सब याद दिलाती है जिसे हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भूल जाते हैं। भाई दूज की भाषा है—स्मृति और स्नेह की। यह पर्व हमें उस समय में ले जाता है जब हम बिना कारण किसी की परवाह करते थे, जब रिश्ते लेन-देन नहीं, जीवन का आधार थे। इस पर्व के बहाने हमें अपने भीतर झाँकना चाहिए—क्या हम अब भी उतने ही आत्मीय हैं जितने बचपन में थे?

अगर इस सवाल का उत्तर 'हाँ' है तो यह त्योहार जीवित है। और अगर उत्तर 'न' है, तो हमें इसे फिर से जीवित करना होगा—किसी सोशल मीडिया पोस्ट से नहीं, बल्कि सच्चे व्यवहार से। किसी बहन के घर जाकर उसका हाल पूछने से, किसी भाई को गले लगाने से, किसी बचपन की याद को फिर से जीने से।

भाई दूज का असली अर्थ यही है कि रिश्तों की दीवारों पर समय की धूल जम जाने के बावजूद उनका रंग न फीका पड़े। यह पर्व हमें सिखाता है कि प्रेम का रिश्ता कभी पुराना नहीं होता, बस हमें उसे झाड़-पोंछकर चमकाना आना चाहिए।

आज जब दुनिया 'डिजिटल रिश्तों' की ओर बढ़ रही है, तो ऐसे पर्व हमें धरती से जोड़ते हैं। हमें बताते हैं कि मानवीय भावनाएँ अब भी सबसे बड़ी पूँजी हैं। इसलिए भाई दूज का तिलक केवल माथे पर नहीं, मन पर लगाना चाहिए—जहाँ अपनापन, स्मृति और कृतज्ञता की लकीरें स्थायी रहें।

भाई दूज का संदेश बहुत सीधा है—रिश्तों को निभाने के लिए कोई बड़ी रस्म नहीं चाहिए, बस छोटी-छोटी संवेदनाएँ चाहिएं। कभी एक फोन कॉल, कभी एक पत्र, कभी बिना कारण किया गया धन्यवाद—यही वो छोटे तिलक हैं जो भाई-बहन के रिश्ते को जीवित रखते हैं।

समय बदलेगा, त्यौहार भी रूप बदलेंगे, पर प्रेम और अपनापन अगर मन में बसा रहा, तो रिश्ते कभी टूटेंगे नहीं। भाई दूज हमें यह याद दिलाने आया है कि जीवन चाहे जितना तेज़ हो जाए, एक दिन रुककर किसी प्रिय को तिलक लगाना, उसकी आँखों में अपनेपन की रोशनी देखना—यही सच्चा त्योहार है।

इसलिए इस बार जब तिलक लगाएँ, तो साथ यह वचन भी लें—कि रिश्तों की डोर कभी ढीली नहीं पड़ने देंगे। भाई दूज की यह रौशनी सिर्फ दीयों में नहीं, दिलों में भी जले। प्रेम और अपनापन केवल तस्वीरों में नहीं, व्यवहार में बहे। तभी इस पर्व का सार बचा रहेगा, और हम कह सकेंगे—

बदलते समय में भी, भाई दूज से प्रेम और अपनापन बना हुआ है।

जीआरएपी की मौजूदा अनुसूची के चरण-II ('बहुत खराब' वायु गुणवत्ता) के अंतर्गत कार्रवाई का कार्यान्वयन दिल्ली में तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है

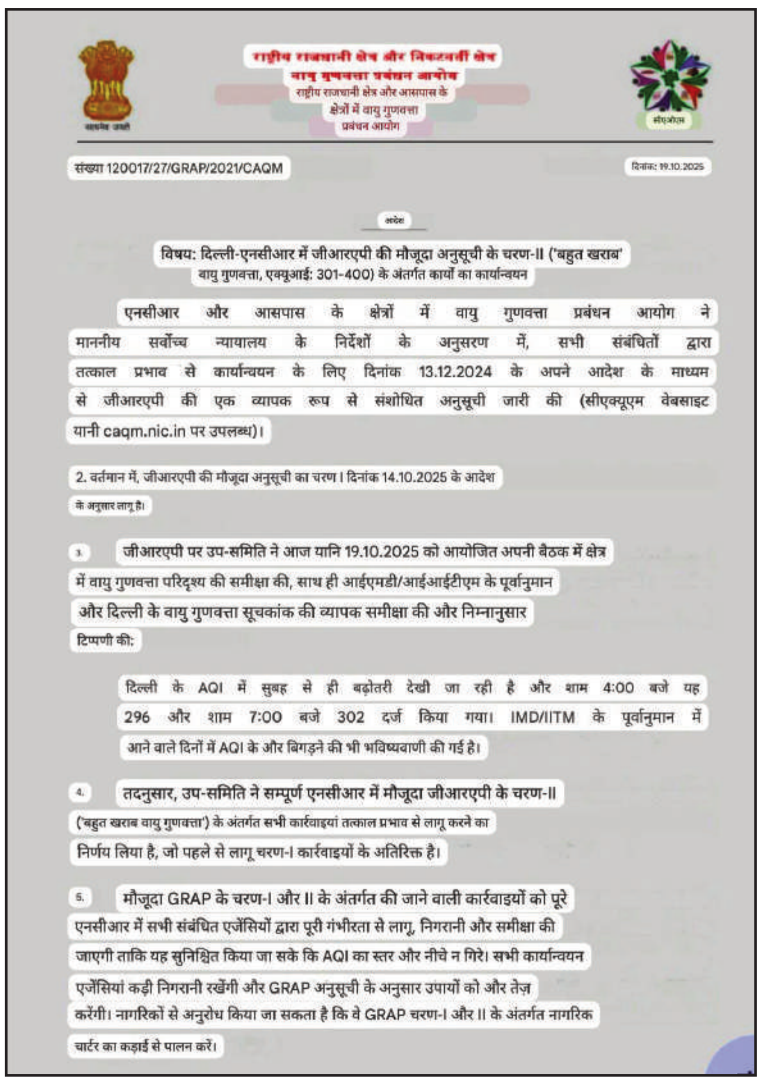

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और निकटवर्ती क्षेत्र
वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग

संख्या 120017/27/GRAP/2021/CAQM
दिनांक: 19.10.2025

आदेश

विषय: दिल्ली-एनसीआर में जीआरएपी की मौजूदा अनुसूची के चरण-II ('बहुत खराब' वायु गुणवत्ता, एक्यूआई: 301-400) के अंतर्गत कार्यों का कार्यान्वयन

एनसीआर और आसपास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसरण में, सभी संबंधितों द्वारा तत्काल प्रभाव से कार्यान्वयन के लिए दिनांक 13.12.2024 के अपने आदेश के माध्यम से जीआरएपी की एक व्यापक रूप से संशोधित अनुसूची जारी की (सीएक्यूएम वेबसाइट यानी caqm.nic.in पर उपलब्ध)।

2. वर्तमान में, जीआरएपी की मौजूदा अनुसूची का चरण। दिनांक 14.10.2025 के आदेश के अनुसार लागू है।

3. जीआरएपी पर उप-समिति ने आज यानि 19.10.2025 को आयोजित अपनी बैठक में क्षेत्र में वायु गुणवत्ता परिदृश्य की समीक्षा की, साथ ही आईएमडी/आईआईटीएम के पूर्वानुमान और दिल्ली के वायु गुणवत्ता सूचकांक की व्यापक समीक्षा की और निम्नानुसार टिप्पणी की:

दिल्ली के AQI में सुबह से ही बढ़ोतरी देखी जा रही है और शाम 4:00 बजे यह 296 और शाम 7:00 बजे 302 दर्ज किया गया। IMD/IITM के पूर्वानुमान में आने वाले दिनों में AQI के और बिगड़ने की भी भविष्यवाणी की गई है।

4. तदनुसार, उप-समिति ने सम्पूर्ण एनसीआर में मौजूदा जीआरएपी के चरण-II ('बहुत खराब वायु गुणवत्ता') के अंतर्गत सभी कार्रवाइयां तत्काल प्रभाव से लागू करने का निर्णय लिया है, जो पहले से लागू चरण-I कार्रवाइयों के अतिरिक्त है।

5. मौजूदा GRAP के चरण-I और II के अंतर्गत की जाने वाली कार्रवाइयों को पूरे एनसीआर में सभी संबंधित एजेंसियों द्वारा पूरी गंभीरता से लागू, निगरानी और समीक्षा की जाएगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि AQI का स्तर और नीचे न गिरे। सभी कार्यान्वयन एजेंसियां कड़ी निगरानी रखेंगी और GRAP अनुसूची के अनुसार उपायों को और तेज़ करेंगी। नागरिकों से अनुरोध किया जा सकता है कि वे GRAP चरण-I और II के अंतर्गत नागरिक चार्टर का कड़ाई से पालन करें।

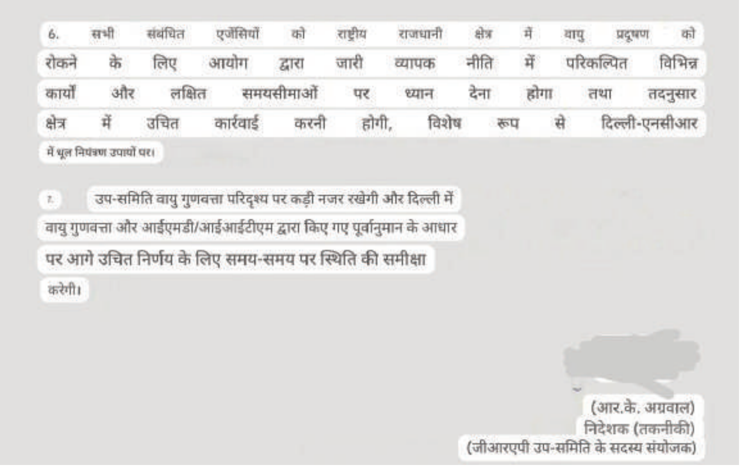

6. सभी संबंधित एजेंसियों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण को रोकने के लिए आयोग द्वारा जारी व्यापक नीति में परिकल्पित विभिन्न कार्यों और लक्षित समयसीमाओं पर ध्यान देना होगा तथा तदनुसार क्षेत्र में उचित कार्रवाई करनी होगी, विशेष रूप से दिल्ली-एनसीआर में धूल नियंत्रण उपायों पर।

7. उप-समिति वायु गुणवत्ता परिदृश्य पर कड़ी नजर रखेगी और दिल्ली में वायु गुणवत्ता और आईएमडी/आईआईटीएम द्वारा किए गए पूर्वानुमान के आधार पर आगे उचित निर्णय के लिए समय-समय पर स्थिति की समीक्षा करेगी।

(आर.के. अग्रवाल)
निदेशक (तकनीकी)
(जीआरएपी उप-समिति के सदस्य संयोजक)

258 दिन बाद दिल्ली की हवा हुई 'बहुत खराब', ग्रेप-2 के प्रतिबंध लागू; पाबंदियों की लंबी लिस्ट

दिल्ली में दिवाली से पहले वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुँच गई है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने ग्रेप-2 के प्रतिबंध लागू कर दिए हैं। अब केवल इलेक्ट्रिक, सीएनजी या बीएस छह इंजन वाली बसें ही दिल्ली में प्रवेश कर पाएंगी। प्रदूषण नियंत्रण उपकरण के बिना डीजल जनरेटर के उपयोग पर रोक लगा दी गई है। लोगों से सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने की अपील की गई है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। लगातार बिगड़ी वायु गुणवत्ता के बीच दीवाली से एक दिन पहले रविवार को ही दिल्ली की वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंच गई। शाम सात बजे दिल्ली का एयर इंडेक्स 302 पहुंच गया। हालांकि शाम चार बजे यह 296 था। पूर्वानुमान के अनुसार हाल फिलहाल इस स्थिति में सुधार के आसार भी नहीं हैं। इसी के मद्देनजर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने आपात बैठक कर एनसीआर ने ग्रेप (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) के दूसरे चरण के 11 सूत्री प्रविधानों एवं प्रतिबंधों को लागू कर दिया है।

मालूम हो दिल्ली में इससे पहले दो फरवरी 2025 को एक्यूआइ 326 रहा था। तब से 258 दिन बाद अब रविवार को यह 300 के ऊपर पहुंचा है।

ग्रेप दो की इन पाबंदियों से प्रभावित होंगे आप

ग्रेप दो की पाबंदियों में सबसे अहम यह है कि राजधानी में अब केवल वही अंतरराज्जीय बसें प्रवेश पा सकेंगी, जोकि इलेक्ट्रिक, सीएनजी या बीएस छह इंजन वाली हो। ऐसे में अन्य राज्यों से दिल्ली में आने वाले यात्रियों को काफी परेशानी उठानी पड़ सकती है।

एनसीआर में इमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर आवासीय, व्यावसायिक और औद्योगिक इकाइयों में बिजली आपूर्ति के लिए ऐसे किसी भी क्षमता के डीजल जनरेटर (डीजी) के इस्तेमाल पर रोक रहेगी, जिनमें प्रदूषण नियंत्रित करने के उपकरण नहीं लगे हैं।

सीएक्यूएम ने पार्किंग शुल्क बढ़ाने के निर्देश भी दिए हैं ताकि सड़कों पर सड़कों पर निजी वाहनों का दबाव कम हो सके।

एनसीआर से संबंधित राज्य सरकारों से सड़कों पर सीएनजी व इलेक्ट्रिक बसें बढ़ाने और दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) से मेट्रो के फेरे बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं।

डीएमआरसी मेट्रो के फेरे भी बढ़ाएगा। सीएक्यूएम ने लोगों से आवागमन के लिए निजी वाहन छोड़कर सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने की अपील की है।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) सहित एनसीआर में प्रदूषण की रोकथाम से संबंधित सभी एजेंसियों को ग्रेप-2 के नियमों को सख्ती से लागू करने का निर्देश दिया है।

रविवार को एनसीआर के शहरों का एयर इंडेक्स

जिला	एक्यूआई	प्रभाव
फरीदाबाद	125	मध्यम
गुरुग्राम	245	खराब
गाजियाबाद	333	बहुत खराब
ग्रेटर नोएडा	287	खराब
नोएडा	329	बहुत खराब

इन इलाकों की हवा रही 'बहुत खराब' से 'गंभीर'

क्षेत्र	एक्यू
आनंद विहार	435
अशोक विहार	308
बवाना	303
द्वारका सेक्टर आठ	341
इहबास	326
जहांगीरपुरी	321
नेहरू नगर	311
पंजाबी बाग	313
आरके पुरम	323
सीरीफोर्ट	318
विवेक विहार	353
वजीरपुर	365

दीपावली का अर्थ यही कि, हर छाया से संवाद करें

डॉ मुश्ताक अहमद शाह

मिट्टी के ये दीप बताते हम सबको सृष्टि भी क्षणभंगुर है,
जब प्रेम की लौ जलती हो, हर क्षण आयु का अंकुर है।

अंधकार शत्रु नहीं, अवसर है, प्रकाश को पहचानने का,
मौन में जो संगीत बसे, वही सत्य है जीवन जानने का।

दीपावली का अर्थ यही कि, हर छाया से संवाद करें,
अपने भीतर के रावण को, राम के दीप से याद करें।

संसार के द्वार सजते रहेंगे, पर आत्मा का कक्ष जगाना है,
लक्ष्मी जी भी आएंगी द्वारे, दीप प्रेम का हमें जलाना है।

जगमगाएं दीप मन मंदिर में, स्नेह, क्षमा और साधना के,
सच्ची रोशनी वही है, जो आती है आत्मपथ विवेचना से।

अन्धेरे में दीप जलें

अन्धेरे में दीप जलें,
रोशनी का अम्बर
जगमगाता रहे हर दिन,
हो हमारी शुभ दीपावली।

जुगनुओं के टिमटिमाते इस आसमां में,
तारों की रोशनी का अपना संसार हो
दीप पर्व पर सारा जग प्रकाशमय हो जाए,
हो हमारी शुभ दीपावली।

मन में हो विश्वास,
महकें घर-आँगन खुशियों से
दीप से दीप जलें जीवन का अंधियारा दूर हो।
भगवान राम के नाम पर एक दीप जरूर जले...,
हो हमारी शुभ दीपावली॥

रचनाकार हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया इन्दौर

दीप पर्व विशेष: पर्यावरण चिंतन : दीपावली : दीप जलाएं, पटाखे नहीं

डॉ घनश्याम बादल

आज दीपावली धूम धड़ाके, रोशनी एवं पटाखों का सबसे बड़ा उत्सव बनकर सामने है व्यापार, बाज़ार एवं सरकार तथा धार्मिकसंस्थान सब दीपावली को अपने तरीके से परिभाषित करते रहे हैं लेकिन जैसा कि नाम से स्पष्ट है दीपावली दीपों का पर्व है और इसका वर्णन पुराणों में भी दीपपर्व के रूप में मिलता है न कि पटाखापर्व के रूप में।

दीवाली शब्द संस्कृत के दो शब्दों 'दीवा' और 'अवली' यानि पंक्ति से मिलकर बना है जिसका एक अर्थ है कि पंक्ति में रखे हुए दीपक।

रोशनी और दीपक

स्कन्द पुराण में दीपक को रोशनी का प्रतिनिधि माना गया है। इतिहास की मानें तो सातवीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने दिवाली के पर्व को 'दीपप्रतिपादुत्सवः' बताया है।

श्रीराम, लक्ष्मी और दीवाली

जनश्रुतियों के अनुसार चौदह वर्ष के वनवास के बाद जब श्रीराम 14 वर्ष के वनवास पश्चात रावण का वध करके लक्ष्मण व सीता सहित अयोध्यआ लौटे तो उनके स्वागत में अयोध्या नगर को दीयों से जगमगाया गया था तभी से हिंदू धर्म में यह पर्व मनाया जाने लगा। एक मिथक यह भी है कि आज के दिन धन की देवी लक्ष्मी उल्लू पर सवार होकर पृथ्वी लोक पर आती है और धन संपदा का वितरण करती है।

मिठाई, सफ़ाई और सजावट

दीप जलाने के अलावा दीपावली से पहले साफ-सफाई व घर तथा व्यापारिक संस्थानों की सजावट करना, नए कपड़े पहनना, पकवान व मिठाई खाना, बांटना व बनाना, मां लक्ष्मी की पूजा करना आदि समय के साथ परंपरा रूप में जुड़ते चले गए।

दिवाली से जुड़ी ऐसी ही एक और परंपरा बन गई है, पटाखे जलाना। उच्चतम न्यायालय व कई राज्य सरकारों द्वारा वायु प्रदूषण रोकने के लिए पटाखों पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद पटाखे जलाना आज भी दिवाली समारोह का एक अभिन्न हिस्सा है।

> **इस बात का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि कब पटाखे जलाना दिवाली का हिस्सा बन गया मगर इतिहासकारों के अनुसार आतिशबाजी का उपयोग 1400 ईस्वी के बाद शुरू हुआ। युद्ध में इस्तेमाल होने वाले बारूद के आविष्कार और धमाकों ने लोगों को भयभीत भी किया और मोहित भी शायद इसी से दीपावली पर भी बारूद या पोटाश के बने हुए पटाखे चलाए जाने लगे मगर दिवाली के दौरान पटाखों का उपयोग 18वीं शताब्दी से पहले शुरू नहीं हुआ था तब मराठा शासकों ने आम जनता के लिए आतिश बाजी का आयोजन किया था।**

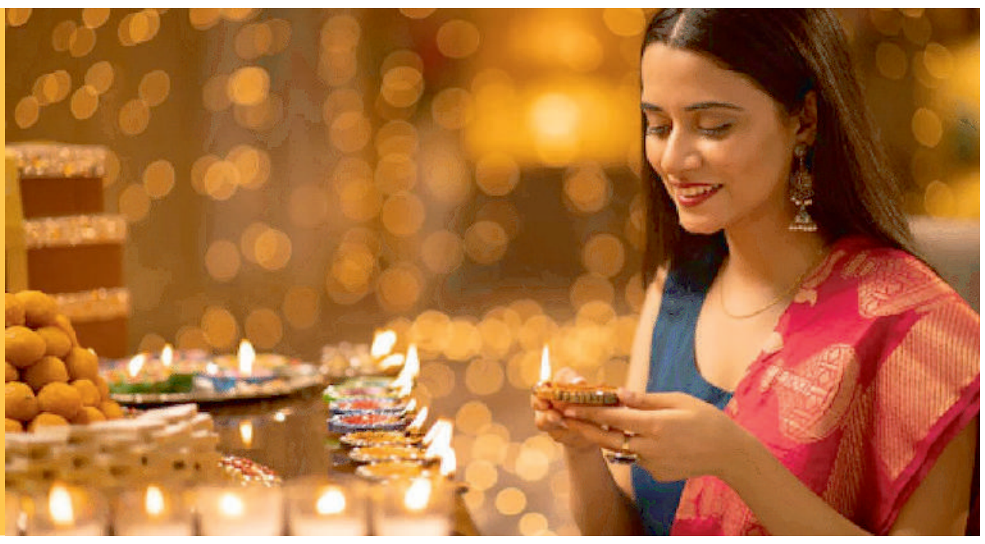

कब व कहां से आए पटाखे ?

इस बात का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि कब पटाखे जलाना दिवाली का हिस्सा बन गया मगर इतिहासकारों के अनुसार आतिशबाजी का उपयोग 1400 ईस्वी के बाद शुरू हुआ। युद्ध में इस्तेमाल होने वाले बारूद के आविष्कार और धमाकों ने लोगों को भयभीत भी किया और मोहित भी शायद इसी से दीपावली पर भी बारूद या पोटाश के बने हुए पटाखे चलाए जाने लगे मगर दिवाली के दौरान पटाखों का उपयोग 18वीं शताब्दी से पहले शुरू नहीं हुआ था तब मराठा शासकों ने आम जनता के लिए आतिश बाजी का आयोजन किया था।

आज़ादी के बाद भारतीय उद्योगों ने पटाखों का निर्माण शुरू किया और वे जल्दी ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो गए।

पटाखे मतलब प्रदूषण

किंतु आज देश महानगरों एवं शहरों तथा कस्बों तक में पटाखों के कारण विशेष तौर पर दिवाली के अवसर पर हवा में प्रदूषण का स्तर बहुत खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है और इसकी वजह से लोगों को सांस तक लेने में तकलीफ़ होती है। दीपावली के कई दिन बाद तक हवा की गुणवत्ता खराब रहती है। दिल्ली एवं गुड़गांव जैसे महानगरों में तो से ए आई क्यू 500 का आंकड़ा भी पार कर जाता है। जो आंखों, त्वचा, हृदय एवं सांस के रोगियों के लिए बहुत ही ख़तरनाक है।

दिवाली पर पटाखे जलाना खुशी मनाने का एक सबब बन गया है। हालांकि पर्यावरण प्रदूषण को देखते हुए हर साल पटाखे न फोड़ने की अपील सरकार व विभिन्न पर्यावरण तथा सामाजिक संगठनों द्वारा की जाती है। वहीं कुछ लोग दिवाली पर पटाखे फोड़ना शुभ मानते हैं।

सामने आया न्यायालय

एक जनहित याचिका के जवाब में अभी-अभी उच्चतम न्यायालय व कई राज्यों द्वारा पटाखों के उत्पादन, भंडारण और बिक्री को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाए गए हैं दिल्ली में तो उच्चतम न्यायालय ने केवल ग्रीन पटाखे और वह भी सीमित समय तथा सीमित मात्रा में जलाने की ही छूट दी है लेकिन देखना यह है कि इन आदेशों का पालन कहां तक हो पाता है।

जहां पर्यावरणविद् पटाखों के जलाने पर रोक लगाने की बातें करते हैं वहीं परंपरावादी हिंदू इस बात पर आपत्ति भी करते हैं कि दीपावली पर ही इस प्रकार के बंधन क्यों ? जबकि ईद क्रिसमस, उत्सव, शादी विवाह व खुशियों के अवसर पर भी पटाखे खूब चलाए जाते हैं। उनका प्रश्न है कि क्या तब प्रदूषण नहीं होता ? यदि देखें तो उनकी बात ग़लत भी नहीं है लेकिन कटु सत्य यह भी है कि पटाखों का दिवाली से धार्मिक दृष्टि से कोई संबंध नहीं है. यह तो बाद में उसमें जुड़ी हुई एक कुरीति की तरह ही है जो आज दीपावली के हर्ष को लील रही है।

दीप जलाएं, पटाखे नहीं

बेहतर हो कि सरकार केवल दीपावली पर ही नहीं अपितु अन्य अवसरों पर भी पटाखे तथा प्रदूषण फैलाने वाले दूसरे घटकों पर रोक लगाएं। इससे भी अच्छा यह रहे कि हम अपनी इच्छा से लगातार बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण एवं बीमारियों को ध्यान में रखते हुए पटाखों को 'ना' कहें तथा इस बार दिवाली पर देसी दीयों से अपने घरों को सजाएं, घरों में दीपक जलाएं मगर पटाखे जलाने से बचें। ऐसा करके हम अपने पैसे वातावरण पर्यावरण एवं स्वास्थ्य तीनों की ही रक्षा कर रहे होंगे।

तूणक छन्द में : दीप-पर्व

======

एक दीप देश के विकास के लिए जला, एक राष्ट्र-प्रेम की मिठास के लिए जला।
आस पास सन्धि के कयास के लिए जला, शेष अन्धकार में उजास के लिए जला।।

गाँव-गाँव की गली-गली प्रकाशमान हो, खील सी खिले कली छली न विद्यमान हो।
सूर्य सा प्रकाश दीप-दीप में समान हो, दीप-पर्व दीप्त हो अनन्त कीर्तिमान हो।।

लिंग-वर्ग-जाति भेद दूर हों समाज के, झोपड़ी गरीब की प्रसाद देवराज के।
शंख से विरोध भाव हो न मीत सीप का, दीप पर्व है मिले सनेह दीप-दीप का।।

एक दीप मौसमी बहार के लिए जला, एक दुष्ट-भ्रष्ट के सुधार के लिए जला।
एक संस्कार के प्रसार के लिए जला, शेष दुर्निवार अन्धकार के लिए जला।।

रात है अमावसी समित्र चाँद ध्यान में, कालिमा कलंक सी निरभ्र आसमान में।
तारिका समूह शक्ति क्षीण है वितान में, अन्धकार का विराट राज है जहान में।।

बावरी अमा भरी विभावरी सँवार तू, एक क्या हजार सूर्य भूमि ला उतार तू।
ज्ञान के प्रकाश को विनम्र हो पुकार तू, और ज़िन्दगी खुली किताब सी निहार तू।।

एक दीप देश में फकीर के लिए जला, एक दिव्य-भव्य से अमीर के लिए जला।
आँधियाँ न सर चढ़ें समीर के लिए जला, शेष द्वेष दम्भ काम कीर के लिए जला।।

आ रहा अधैर्य आज सिन्धु के स्वभाव में, सूखने लगे सुकुण्ड नीर के अभाव में।
मूल्यवान नीतियाँ अनीति के वचाव में, पाप और पुण्य पक्ष पश्चिमी प्रभाव में।।

रोशनी सनी वसुन्धरा तरंगिणी बने, दीपिका निशीथ की नवीन बोधिनी बने।
दीप हो सुहाग और लौ सुहागिनी बने।
राग की सुहागिनी सजीव रागिनी बने।।

ज्ञान का प्रतीक दीप प्राण का प्रमाण हो, आन बान का सबिम्ब मान का निशान हो।
मातृभूमि के लिए जले भले किसान हो, वृद्ध हो कि बाल दीप देश का जवान हो।।

लालिमा ललाम फेंक कालिमा निकाल दे, निर्मला सुबुद्धि दीपज्योति सी उजाल दे।
हाथ में निशानियों भरी हुई मशाल दे, प्यार की खुशी बढ़े सुप्रेम की मिसाल दे।।

एक दीप देश के ललाट के लिए जला, एक दिव्य वामनी विराट के लिए जला।
एक विश्व की अनूप हाट के लिए जला, शेष अन्धकार बीच बाट के लिए जला।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

चलो इस बार स्वयं दीपक बनें

जांजगीर-चांपा। दीपों का पर्व दीपावली जहाँ एक ओर रोशनी, उत्साह और उल्लास का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के भीतर झाँकने का भी अवसर देता है।
हर घर की दहलीज़ रंगोली और दीयों से जगमगाती है, पटाखों की गूंज आसमान तक जाती है, पर क्या कभी हमने उस शोर के पीछे की सच्चाई पर ध्यान दिया है?

ध्वनि प्रदूषण से हृदय रोगी और नवजात शिशु प्रभावित होते हैं,
फुलझड़ियों और पटाखों के धुएं से वायु प्रदूषण का खतरा बढ़ जाता है।
फिर भी लोग ऊँचे स्वर में संगीत बजाने और दिखावे की होड़ में जुटे रहते हैं।

उधर समाज का एक वर्ग — गरीब, मजदूर, असहाय —
आज भी दीपावली की मिठास से दूर है।
जहाँ एक घर रोशनी से भरा होता है,
वहीं दूसरा घर दीपक के लिए तरसता है।
एक उत्सव मनाता है, दूसरा ग़म में डूबा मातम मनाता है।

उनके चेहरों की मायूसी कोई नहीं देखता,
उनके हाथों में झूठे दोने-पत्तल आते हैं,
मगर उनके मन में भी वही चाह होती है —
मिठाई का स्वाद, नए कपड़ों की ख़ुशी और थोड़ी सी रौशनी की आस।

कहते हैं पैसा बहुत है, पर देने को चिल्लर नहीं,
कितना भी नोट छाप लो, सोच अगर छोटी है तो गरीबी मिट नहीं सकती।
दिखावे की दुनिया में संवेदनाएं कहीं खो-सी गई हैं।

डॉ. क्षमा पाटले "अनंत" कहती हैं —
₹चलो इस बार स्वयं दीपक बनें,
गरीब-बेसहारों के जीवन को खुशियों से भरें।
हम हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई बाद में हैं,
पहले तो इंसान हैं।
इंसानियत से बढ़कर कोई धर्म नहीं यारों।₹

आओ इस दीपावली पर संकल्प लें —
हर घर तक रौशनी पहुँचाने का,
हर चेहरे पर मुस्कान लाने का,
और सच्चे अर्थों में "शुभ दीपावली" मनाने का।

शुभ दीपावली!

डॉ. क्षमा पाटले "अनंत"
(अनंत अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार एवं समाजसेवी)
जांजगीर-चांपा, छत्तीसगढ़

श्रीराधा उपासना कुंज में दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ ब्रज अकादमी का 47वां स्थापना दिवस व श्रीहनुमज्जयंती महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मोतीझील स्थित श्रीराधा उपासना कुंज में ब्रज के प्रख्यात संत श्रीपाद बाबा महाराज के द्वारा संस्थापित ब्रज अकादमी का 47वां त्रिदिवसीय स्थापना दिवस व श्रीहनुमज्जयंती महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ प्रारम्भ हो गया है। ।महोत्सव का शुभारंभ श्रीराधा कृष्ण, श्रीहनुमानजी महाराज एवं स्वामी श्रीपाद बाबा महाराज के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया ।इसके साथ ही अखंड श्रीराम चरित मानस पाठ, श्रीमद्भक्तमाल अर्चा व श्रीहरिनाम संकीर्तन आदि के आयोजन भी प्रारंभ हुए।

इस अवसर पर श्रीराधा उपासना कुंज के महंत बाबा संत दास महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन श्रीपाद बाबा महाराज परम रससिद्ध संत, अध्यात्म योगी व परम वीतरागी थे ।उन्होंने ब्रज संस्कृति, ब्रज भाषा व ब्रज के प्राचीन स्थलों को संरक्षित करने के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किए, उनके लिए समस्त सनातन धर्मावलंबी पूज्य बाबा महाराज को सदैव याद करते रहेंगे।

ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया ने कहा कि ब्रज अकादमी की स्थापना श्रीपाद बाबा महाराज ने प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक उन्नयन एवं नैतिकतावादी मूल्यों पर आधारित शिक्षा पद्धति के पुनरोत्थान के लिए की थी ।जो अपने उद्देश्यों पर आज भी अटल है।

₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि ब्रह्मलीन श्रीपाद बाबा महाराज ने प्रख्यात वाणी कारों की वाणियों की पांडुलिपियां व अन्य हस्तलिखित ग्रंथों को ब्रज अकादमी के द्वारा संग्रहित व प्रकाशित कर ब्रज संस्कृति व श्रीधाम के प्राचीन स्वरूप का पुनरोद्धार करने का अभूतपूर्व कार्य किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत सायं काल ब्रज के प्रख्यात रासाचार्य स्वामी भुवनेश्वर वशिष्ठ के निर्देशन में रासलीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया ।साथ ही सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।

महोत्सव में सन्त प्रवर स्वामी महेशानंद सरस्वती महाराज, विरक्त वैष्णव परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत सनत कुमार दास महाराज, महंत सुन्दर दास महाराज, सन्त सेवानंद ब्रह्मचारी, महंत संतोषानंद महाराज, महंत अशोक महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, अश्वनी माथुर (दुबई), पिंकी माथुर, प्रिया माथुर, उमेश गंभीर (अलीगढ़), श्रीमती सुनीता गंभीर, अंकित कश्यप (दिल्ली), भगवान सिंह, सन्त दीनबन्धु दास, धनीराम (आगरा), धर्मवीर, रामायणी जी (आगरा), ब्रज अकादमी के निदेशक डॉ. बी.बी. माहेश्वरी, मदन पाल, श्रीराम गौतम, ईशान तिवारी, इंद्रनील वैष्णव, आयुष शर्मा, उत्तम त्रिपाठी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

ब्रज अकादमी की सचिव साध्वी डॉक्टर राकेश हरिप्रिया ने महोत्सव में पधारे सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत उत्तरीय उढ़ा कर, स्मृति चिन्ह और प्रसाद आदि भेट करके किया ।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया।

दीपावली पर पटाखे भारत की परम्परा नहीं, मुगलों की देन है

संदीप सृजन

भारतीय संस्कृति उत्सव प्रधान है और उत्सव की प्राचीन परंपरा उल्लास और उच्चता से जुड़ी हुई है, जब जीवन में उल्लास हो और तन और मन की उच्चता हो वह समय उत्सव है। दीपोत्सव की परंपरा अनादि काल से भारतीय संस्कृति की अक्षुण्ण पहचान है, वैदिक काल हो या उत्तर वैदिक काल हो, दीपावली के साथ कोई न कोई प्रसंग और सामाजिक या धार्मिक परम्परा जुड़ी हुई है। काल प्रवाह में इस परंपरा में कई नई व्यवस्थाएं और परंपराएं सम्मिलित हुई है।

वैदिक वांग्मय में दीपोत्सव मनाने के लिए केवल घी के दीये जलाए जाने का उल्लेख है। और विशेष प्रायोजन से खाद्य तेल के दीए जलाने का उल्लेख मिलता है। वर्तमान आधुनिक युग में कृत्रिम विद्युत और मोमबत्ती तक यह परंपरा आ चुकी है। यहॉ तक तो ठीक है लेकिन प्राचीन परम्परागत संस्कृति में पटाखों का प्रवेश एक विकृति है।

दीपावली पर पटाखों के उपयोग के प्रमाण मुगलकाल से मिलते है। मुगलकाल से पहले भारत में पटाखों का उपयोग नहीं होता था। केवल बारुद का उपयोग वन्य पशुओं को भगाने के लिए किया जाता था लेकिन जब मुगल साम्राज्य भारत में स्थापित हुआ तो मिट्टी के पात्र और कागज में लपेट कर पटाखों की शुरुआत भारत में हुई। मुगल अपने यहॉ विवाह आदि अवसरों पर धमाकों के लिए बारुद का उपयोग करते थे और उत्सव मनाते थे। चूंकि उस काल में मुगल ही भारत के शासक थे तो यथा राजा तथा प्रजा के अनुसार भारत के मुगल आश्रित सेवकों ने उनका अनुसरण करना प्रारंभ किया। चूंकि दीपावली भारत का सबसे प्रमुख त्योहार माना जाता है तो इस त्योहार पर उल्लास प्रकट करने के लिए मुगल काल में पटाखों से धमाके करने की परम्परा शुरू हुई जिसका शनै-शनै भारत की जनता ने भी अनुसरण किया और यह एक परंपरा सी बन गई।

प्राचीन काल में जनसंख्या का घनत्व कम था और पर्यावरण प्रदूषण बिलकुल भी नहीं था जिसके कारण बारुद से हुआ वायु और ध्वनि प्रदूषण कुछ समय में समाप्त हो जाता था लेकिन वर्तमान समय में प्रदूषण चरम पर है और आज तो कोरोना के भयावह प्रभाव से सारा विश्व परेशान है। आज जब सांस संबंधी रोगों से बचाव के लिए सरकार बार-बार जनता से अनुरोध कर रही है और हम खुद भी पिछले 8-10 महीनों से यह महसूस कर रहे है कि कोरोना का सबसे ज्यादा प्रभाव श्वसन तंत्र पर हो रहा है, ऐसे में केमिकल से बने पटाखों से निकलने वाला धुंआ और कोरोना के लिए आग में घी डालने जैसा है।

प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये के पटाखे जलाए जाते है जो व्यवहारिक रूप से धन में आग लगाने जैसा है। कुछ लोगों का तर्क है कि पटाखे खुशी प्रकट करने का माध्यम है तो वे यह जान लें कि पटाखों की पहली फेक्ट्री शिवकाशी में सन 1940 में लगी थी। इससे पहले भारत में पटाखे नहीं बनते थे। तो क्या इससे पहले लोग खुशी व्यक्त नहीं करते थे? इसके पहले उत्सव नहीं मनाए जाते थे? पटाखों के कारण समाज या देश को कोई बड़ा लाभ होता है, ऐसा भी नहीं है। आज के समय में जब जीवन और स्वास्थ्य से संघर्ष कर व्यक्ति धन कमा रहा है। उस धन को आग लगाना किसी मूर्खता से कम नहीं है। हमें चाहिए कि जनहित और स्वहित दोनों को दृष्टिगत रखते हुए पटाखों का उपयोग स्वेच्छा से हम नहीं करे। दीपावली दीप जलाकर मनाएँ स्वयं सुरक्षित रखें परिवार और समाज को भी सुरक्षित रखें।

दीवाली से पहले का वनवास

कभी अँधेरा ज़्यादा गहराने लगे,
तो मत समझना कि सूरज सो गया है।
हर दीये के जलने से पहले,
थोड़ा सा तेल क्यों खो गया है।

जब भी लगे कि अब थक गए हो,
ज़रा अपने सपनों को याद करो।
जो रात सबसे अंधेरी लगती है,
वही सुबह का वादा करती है।

राम को भी चौदह बरस लगे थे,
दीवाली के दीप जलाने में,
तो तुम क्यों डरते हो कुछ साल
अपने सपनों के पीछे जाने में?

हर गिरना, बस उठने की तैयारी है,
हर हार, जीत की जिम्मेदारी है।
जिंदगी कभी आसान नहीं होती,
पर खूबसूरत, हाँ, वही होती है।

जो साथ चले — वो सच्चा होता है,
जो अंधेरे में भी रोशनी ढूँढे —
वो अपना होता है।
सीता की तरह विश्वास रखो,
लक्ष्मण-सा साहस रखो,
राम-सा धैर्य रखो —
फिर हर वनवास भी तुम्हारा उत्सव बनेगा।

क्योंकि दीवाली तभी तो चमकती है,
जब दिल ने अँधेरों को हराया हो,
और रौशनी ने कहना सीखा हो —
"मैं डर के बाद भी आया हूँ।"

- डॉ. प्रियंका सौरभ

भगवान महावीर : जिन्होंने देह छोड़ी, पर दिशा छोड़ गए

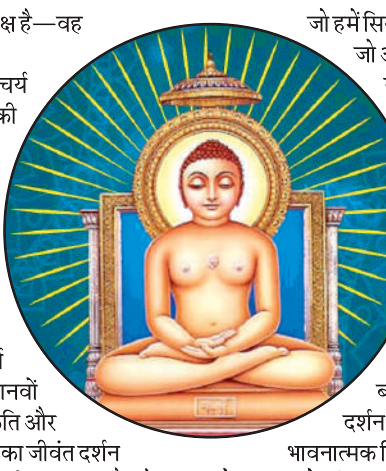

कार्तिक अमावस्या की उस गहन, रहस्यमयी रात्रि में, जब ब्रह्मांड अंधकार की गहरी चादर में लिपटा था, पावापुरी की पवित्र धरती पर एक ऐसी अलौकिक ज्योति प्रज्वलित हुई, जो युगों तक मानवता के हृदय को प्रदीप्त करेगी। यह थी भगवान महावीर की अमर आत्मा की अनुपम ज्योति, जिसने नश्वर देह का त्याग कर अनंत शांति, परम ज्ञान और मोक्ष के शिखर को स्पर्श किया। "महावीर निर्वाणोत्सव" न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि आत्म-जागरण का वह महापर्व है, जो हमें आत्मशुद्धि, आत्मविजय और करुणा के सनातन मार्ग पर प्रेरित करता है।

पावापुरी की पवित्र भूमि पर, जब भगवान महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया, निर्वाण के बाद उनके शिष्यों ने और देवताओं ने उनकी याद में अंधकार को चीरते हुए असंख्य दीप प्रज्वलित किए। यह अमर परंपरा आज दीपावली के रूप में चमकती है, जो न केवल बाहरी जगमगाहट का प्रतीक है, बल्कि हमारे अंतर्मन के अज्ञान, क्रोध और लोभ को भस्म कर आत्मिक ज्योति को प्रदीप्त करने का प्रेरक संदेश देती है। जैन ग्रंथों में वर्णित है कि उसी पावन रात्रि को उनके परम शिष्य गौतम स्वामी ने केवल ज्ञान की अनुपम प्राप्ति की, जो इस पर्व को गुरु-शिष्य के अटल आध्यात्मिक बंधन और ज्ञान की सर्वोच्च जयघोष का प्रतीक बनाता है। निर्वाणोत्सव हमें यह गहन सत्य सिखाता है कि मृत्यु कोई अंत नहीं, अपितु चेतना के परम शिखर का साक्षात्कार है—वह अवस्था, जहाँ आत्मा समस्त कर्मों के बंधन तोड़कर अनंत शांति और आनंद में समाहित हो जाती है।

भगवान महावीर का जीवन त्याग, करुणा और अटल आत्मबल की एक ऐसी अमर गाथा है, जो युगों-युगों तक प्रेरणा देती रहेगी। 599 ईसा पूर्व वैशाली के राजसी कुल में जन्मे वर्धमान ने बाल्यकाल से ही वैराग्य और करुणा के बीज अंकुरित किए। मात्र तीस वर्ष की आयु में उन्होंने राजमहलों का वैभव तजकर साधना का कठोर पथ अपनाया। बारह वर्षों की तीव्र तपस्या, मौन और अडिग आत्म-संयम के पश्चात उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई—वह ज्ञान, जिसने संसार के दुखों और कर्म बंधनों की गहनता को उजागर किया। उनका अमर उपदेश, "जो अपने मन को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता है," आज भी हर हृदय में आत्म-जय का संदेश गूँजता है। "जीवो जीवस्य जीवति" जैन धर्म का एक सूत्र है, जो सभी जीवों के प्रति अहिंसा और करुणा का अटूट मार्ग प्रशस्त करता है। महावीर का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा धर्म बाहरी आडंबरों में नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण, शुद्ध आचरण और अंतर्मन की खोज में निहित है।

निर्वाणोत्सव केवल पूजा, दीपदान या अनुष्ठानों का उत्सव नहीं, अपितु आत्म-चिंतन का वह पवित्र क्षण है, जो हमें अपनी आत्मा की गहराइयों में झाँकने का आह्वान करता है। प्रत्येक प्रज्वलित दीपक केवल मिट्टी का दीया नहीं, बल्कि हमारे अंतर्मन के अंधकार—अज्ञान, क्रोध और लोभ—को भस्म करने का प्रतीक है। आज के युग में, जब भौतिकवाद, लालसा और अंतहीन प्रतिस्पर्धा ने मानव जीवन को जकड़ लिया है, यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्चा सुख क्षणिक उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और संतुलन में निहित है। महावीर का शाश्वत संदेश हमें स्मरण कराता है कि जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष है—वह अवस्था, जो सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य और ब्रह्मचर्य के पथ पर चलकर ही प्राप्त की जा सकती है। यह उत्सव हमें न केवल दीप जलाने, बल्कि अपने भीतर के प्रकाश को प्रज्वलित करने की प्रेरणा देता है।

निर्वाणोत्सव का एक अनूठा पहलू इसका पर्यावरण के प्रति गहरा संदेश है। जैन धर्म का अहिंसा सिद्धांत केवल मानवों तक सीमित नहीं, बल्कि प्रकृति और समस्त जीवों के प्रति करुणा का जीवंत दर्शन है। आज, जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव-विविधता का ह्रास विश्व के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ बन चुके हैं, भगवान महावीर का संदेश पर्यावरण संरक्षण की प्रबल प्रेरणा देता है। दीपावली में पटाखों के बजाय मिट्टी के दीपकों की कोमल ज्योति, ऊर्जा संरक्षण और न्यूनतम कचरे का संकल्प इस पर्व को प्रकृति के प्रति समर्पित बनाता है। यह हमें सिखाता है कि हमारी छोटी-छोटी आदतें जैसे बिजली का विवेकपूर्ण उपयोग, पुनर्चक्रण, या प्रकृति के प्रति जागरूकता न केवल हमारी जिम्मेदारी को रेखांकित करती हैं, बल्कि धरती के भविष्य को संवारने का मार्ग भी प्रशस्त करती हैं। निर्वाणोत्सव का दिन जैन समुदाय के लिए आत्मिक उत्थान और भक्ति का पवित्र अवसर है। गौतम स्वामी के केवल्य ज्ञान की प्राप्ति की स्मृति इस पर्व को और भी गहन बनाती है, जो हमें सिखाती है कि सच्चा ज्ञान वही है, जो अहंकार और बंधनों को भस्म कर आत्मा को मुक्ति की ओर ले जाए।

भगवान महावीर के सिद्धांत आज के युग की जटिल समस्याओं का सशक्त समाधान प्रस्तुत करते हैं। "अहिंसा परमो धर्मः" केवल शारीरिक हिंसा से परहेज का आदेश नहीं, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवन दर्शन है, जो मानसिक और भावनात्मक हिंसा—क्रोध, घृणा और भेदभाव—से मुक्ति का मार्ग दिखाता है। सत्य का सिद्धांत हमें न केवल सत्य बोलने, बल्कि सत्य को जीने की प्रेरणा देता है—एक ऐसी आवश्यकता, जो आज के दुष्प्रचार और असत्य के दौर में और भी प्रासंगिक है। अपरिग्रह का सिद्धांत हमें भौतिक लालसाओं से मुक्त कर सादगी और संतोष की ओर ले जाता है, जो आत्मिक शांति का आधार है। भूखे को अन्न देना, दुखी को सांत्वना प्रदान करना, या क्रोध को मौन में परिवर्तित करना—ये छोटे-छोटे कार्य ही वर्तमान युग का सच्चा तप हैं। यही महावीर का मार्ग है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन को उन्नत करता है, बल्कि समाज और विश्व को शांति, समरसता और सकारात्मकता की नई दिशा प्रदान करता है।

निर्वाणोत्सव का संदेश एक वैश्विक पुकार है, जो केवल जैन समुदाय तक सीमित नहीं, बल्कि हर उस हृदय तक पहुँचता है, जो जीवन में शांति, सार्थकता और सत्य की खोज में है। आज, जब विश्व युद्ध, हिंसा और असमानता की आग में जल रहा है, भगवान महावीर का अमर संदेश—"जियो और जीने दो"—एक समावेशी, शांतिपूर्ण और करुणामय समाज की नींव रखता है। यह हमें सिखाता है कि प्रत्येक जीव की आत्मा एक समान पवित्र है, और हर प्राणी के प्रति सम्मान, करुणा और सहानुभूति ही सच्चा मानव धर्म है। यह पर्व हमें न केवल आत्मिक जागृति की ओर प्रेरित करता है, बल्कि विश्व को एकता और शांति के सूत्र में बाँधने का सशक्त आह्वान करता है।

जब निर्वाणोत्सव पर हम दीप प्रज्वलित करते हैं, तो यह केवल परंपरा का निर्वहन नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन और नवीकरण का पवित्र क्षण है। प्रत्येक दीपक एक गहन संदेश देता है—"अंधकार कितना भी प्रबल हो, एक छोटी सी ज्योति उसे चीर सकती है।" आइए, इस निर्वाणोत्सव पर हम दृढ़ संकल्प लें कि हम अपने अंतर्मन में अहिंसा, सत्य और करुणा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे। यह प्रकाश न केवल हमारे जीवन को आलोकित करेगा, बल्कि समाज को भी शांति, समरसता और सकारात्मकता की ओर ले जाएगा। भगवान महावीर का निर्वाण हमें यह सत्य सिखाता है कि विश्व को बदलने की शुरुआत स्वयं से होती है। जो अपने हृदय के अंधेरे को पहचान लेता है, वही उसमें छिपे अनंत प्रकाश को जगा सकता है। यही वह आत्मदीप है, जो आज भी मानवता को सत्य और शांति के पथ पर मार्गदर्शन दे रहा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

दीपावली 2025-वैश्विक आलोक का पर्व- अंधकार से प्रकाश, दरिद्रता से समृद्धि और मानवता से एकता की ओर

लक्ष्मी पूजन के शुभ मुहूर्त में माँ लक्ष्मी अपनी कृपा दृष्टि बरसाने निकली है, जिसपर नज़र पड़ी उसकी किस्मत निहाल धन धान्य से मालामाल, ऐसी मान्यता है– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनाना गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत सहित पूरी दुनियाँ में पौराणिक काल से भारतीयों के बीच ऐसी मान्यता है कि जो मां लक्ष्मी के सामने दिल से भावपूर्ण भाव से अपनी मनोकामना रखेगा मां लक्ष्मी उन शुद्ध निस्वार्थ ईमानदार भावों पर अपनी कृपा दृष्टि ज़रूर बरसाती है औरउनकी दरिद्रता गरीबी हर लेती है,व धन-धान्य की बारिश करती है जिसका सटीक दिन दीपावली और पल या क्षण लक्ष्मी पूजा है ।इस बार दीपावली की तारीख को लेकर दुनियाँ भर में असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। कार्तिक माह की अमावस्या तिथि को दीपावली मनाए जाने का विधान है ।भारत में अधिकतम राज्यों लोगों द्वारा सोमवार 20 अक्टूबर 2025 को दीपावली मनाई जा रही है अनेक स्कूलों में भी 19 तारीख से ही छुट्टियां घोषित की गई है,जम्मू कश्मीर सरकार ने दिवाली के पावन पर्व पर राज्य के छात्रों,शिक्षकों और कर्मचारियों को बड़ी राहत प्रदान करते हुए पूरे देश में सबसे अधिक 15 दिन की लंबी छुट्टियों की घोषणा कर दी है। राज्य सरकार ने 19 अक्टूबर से 2 नवंबर तक पूरे दो सप्ताह का दिवाली अवकाश घोषित किया है। यह निर्णय प्रदेश के सभी सरकारी और मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों पर लागू होगा। इस अवधि में प्रदेश के सभी शिक्षण संस्थान पूरी तरह से बंद रहेंगे और कोई शैक्षणिक गतिविधि नहीं होगी ।2025 में यह पर्व पहले से भी अधिक भव्य, आध्यात्मिक और विश्वव्यापी स्वरूप ले चुका है। इस वर्ष भारत के उत्तर प्रदेश में अयोध्या की पावन नगरी में होने वाला दीपोत्सव विश्व का सबसे बड़ा सामूहिक आलोक उत्सव बनने जा रहा है। वहीं दूसरी ओर, अमेरिका के टाइम्स स्क्वायर, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, सिंगापुर और खाड़ी देशों में बसे भारतीय समुदायोंने भी दीपावली को विश्व सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में मनाने की तैयारी कर ली है। इस बार का दीप पर्व न केवल घर-आंगन बल्कि विश्व के हृदय को भी रोशन करेगा।

साथियों बात अगर कर हम दीपावली पर्व 2025 की बेला आई भक्तों की मन्नतें और मां लक्ष्मी की आराधना को समझने की करें तो,दीपावली का अर्थ ही है, "अंधकार पर प्रकाश की विजय" ।यह त्योहार हर उस व्यक्ति के जीवन में नई आशा, विश्वास और समृद्धि का दीप जलाता है जो परिश्रम, श्रद्धा और सकारात्मकता में विश्वास रखता है। 2025 की दीपावली की बेला पर भक्तों ने मां लक्ष्मी से अपनी मन्नतें सुनाई,₹हे मां लक्ष्मी, दरिद्रता, गरीबी और कष्टों को दूर करो, हमारे घरों में धन, ज्ञान और स्वास्थ्य की वर्षा करो₹ ।इस भावना में केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन की भी आकांक्षा निहित है ।प्रत्येक घर में माँ लक्ष्मी का स्वागत विशेष भक्ति भाव से किया जाता है,द्वारपर रंगोली, आंगन में दीपमाला और पूजा स्थल पर धूप-दीप का समर्पण। यह वह क्षण होता है जब संपूर्ण वातावरण में एक दिव्य ऊर्जा का संचार होता है, जैसे स्वयं ब्रह्मांड भी भक्तों के आह्वान को सुनकर झिलमिलाने लगता है।

साथियों बात अगर हम लक्ष्मी पूजन का शुभ मुहूर्त,कृपा वर्षा का दिव्य क्षण को समझने की करें तो,दीपावली की सबसे प्रमुख संध्या होती है मां लक्ष्मी पूजन की रात्रि, जब पूरा परिवार एकत्र होकर देवी महालक्ष्मी, भगवान विष्णु, गणेश और कुबेर की पूजा-अर्चना करता है ।2025 के शुभ मुहूर्त के अनुसार, यह पूजन अत्यंत मंगलकारी संयोग में होगा,जहां ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति धन प्राप्ति, व्यापार उन्नति और सौभाग्य में वृद्धि का संकेत दे रही है ।मान्यता है कि लक्ष्मी पूजन के शुभ मुहूर्त में स्वयं देवी लक्ष्मी पृथ्वी पर अवतरित होकर अपने भक्तों पर कृपा दृष्टि बरसाने निकलती हैं। जिन घरों में स्वच्छता, शुद्धता और श्रद्धा का वातावरण होता है, वहां मां की विशेष कृपा बरसती है। कहा जाता है, "जिस पर लक्ष्मी की नज़र पड़ी,उसकी किस्मतनिहाल हो गई"वही कारण है कि इस रात हर घर दीपों से जगमगा उठता है, हर मन में नई उम्मीद जाग उठती है ।इस दिन लोग केवल धन की नहीं, बल्कि धर्म, ज्ञान और सद्बुद्धि की कामना भी करते हैं। क्योंकि भारतीय दर्शन के अनुसार धन तभी मंगलकारी होता है जब वह धर्म के मार्ग पर चलकर समाज की भलाई में प्रयुक्त हो।

साथियों बात अगर हम आओ सभी मिलकर, समाज, देश और विश्व की समृद्धि के लिए प्रार्थना करने की करें तो दीपावली केवल व्यक्तिगत सुख-संपत्ति का पर्व नहीं, यह सामूहिक समृद्धि और सामाजिक एकता का प्रतीक है। इस वर्ष का दीपोत्सव विशेष रूप से "सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय" की भावना को समर्पित है ।हर व्यक्ति को इस अवसर पर यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने परिवार,समाज और देश के कल्याण के लिए कुछ सकारात्मक योगदान देगा। दीप जलाना केवल प्रतीक नहीं, बल्कि यह हमारे भीतर के अंधकार,ईर्ष्या, घृणा, लोभ, और अहंकार को मिटाने का भी एक प्रयास है ।भारत सरकार और सुप्रीम कोर्ट ने इस वर्ष पटाखों और प्रदूषण को लेकर दिशा- निर्देश जारी किए हैं ।यह आवश्यक है कि दीपावली का उल्लास प्रकृति की मर्यादाओं के भीतर रहे। हम सभी को चाहिए कि इस पर्व को पर्यावरण-मित्र तरीके से मनाएँ,दीप जलाएँ, पर धुआँ नहीं फैलाएँ। बच्चों को भी यह सिखाना जरूरी है कि उत्सव का आनंद प्रकृति के साथ तालमेल में ही पूर्ण होता है।

साथियों बात अगर हम अयोध्या का दीपोत्सव 2025 के अवसर पर 26 लाख दीयों से जगमगाएगी सरयू घाट को समझने की करें तो,विश्व की सांस्कृतिक राजधानी बन चुकी अयोध्या में इस बार का दीपोत्सव इतिहास रचने जा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार, 19 अक्टूबर 2025 को सरयू घाट और आसपास के 50 से अधिक घाटों पर कुल 26,11,101 दीप जलाए जाएंगे ।यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भारत का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कराने की तैयारी भी है ।अयोध्या में यह दृश्य मानो किसी दिव्य लोक का प्रतीत होता है,सरयू के जल पर झिलमिलाते दीप, मंदिरों की आरतियाँ, राम जन्मभूमि परिसर में गूंजते भजन, और चारों ओर "जय श्रीराम" का जयघोष। यह वह क्षण है जब पूरी धरती मानो रामराज्य की अनुभूति करती है ।इस आयोजन में लाखों श्रद्धालु, पर्यटक और अंतरराष्ट्रीय मीडिया प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। ड्रोन और उपग्रहों से इस अद्भुत नजारे का सीधा प्रसारण दुनिया भर में किया जाएगा ।अयोध्या का यह आलोकोत्सव न केवल धार्मिक भावना का प्रतीक है बल्कि भारत की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का भी जीवंत उदाहरण है।

साथियों बात अगर हम विश्व में गूंजेगी दीपावली,टाइम्स स्क्वायर से लेकर सिडनी हार्बर तक को समझने की करें तो,अब दीपावली केवल भारतीय सीमाओं तक सीमित नहीं रही। अमेरिका के न्यूयॉर्क टाइम्स स्क्वायर में हर वर्ष की तरह इस बार भी "दिवाली एट टाइम्स स्क्वायर" का आयोजन होग़ा, जहाँ भारतीय मूल के हजारों लोग दीपों और रंगारंग प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन करेंगे ।ब्रिटेन के लंदन के ट्राफलगर स्क्वायर, सिडनी हार्बर (ऑस्ट्रेलिया), सिंगापुर के लिटिल इंडिया, दुबई के ग्लोबल विलेज, और कनाडा के टोरंटो सिटी हॉल में भी दीपावली महोत्सव मनाया जाएगा। इन आयोजनों में न केवल भारतीय समुदाय बल्कि स्थानीय नागरिक भी बड़ी संख्या में भाग लेते हैं, जिससे यह पर्व वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन गया है ।इन अंतरराष्ट्रीय उत्सवों का संदेश स्पष्ट है,चाहे धर्म,भाषा या भूगोल भिन्न हो,लेकिन प्रकाश का संदेश सार्वभौमिक है। अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का यह उत्सव पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरो देता है।

साथियों बात अगर हम आध्यात्मिक दृष्टि से दीपावली आत्मप्रकाश का उत्सव को देखने की करें तो,यदि धार्मिक अनुष्ठानों और परंपराओं से परे देखें तो दीपावली का गूढ़ अर्थ है,अपने भीतर के प्रकाश को जगाना। यह वह पर्व है जब व्यक्ति अपने कर्म, विचार और दृष्टिकोण में सुधार कर नई शुरुआत करता है ।भगवान श्रीराम का अयोध्या लौटना केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि यह धर्म, सत्य और करुणा की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। हर युग में जब अंधकार बढ़ता है, तब कोई न कोई दीप उसे मिटाने के लिए जलता है। दीपावली हमें यही प्रेरणा देती है कि हम भी अपने भीतर एक दीप बनें,जो अज्ञान के अंधकार को मिटाए, और समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैलाए।

साथियों बात अगर हम आर्थिक दृष्टि से दीपावली व्यापार,निवेश और रोजगार का पर्व समझने की करें तोदीपावली भारत की सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधि का भी समय है। इस अवसर पर बाजारों में करोड़ों रुपये का लेन-देन होता है,सोना-चांदी,ऑटोमोबाइल,इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, वस्त्र मिठाइयाँ और सजावटी वस्तुएँ, सबकी बिक्री में वृद्धि होती है ।2025 में भारत का खुदरा व्यापार संगठनके अनुसार, दीपावली सीजन में लगभग 3.5 लाख करोड़ रुपये के कारोबार की संभावना है। यह उत्सव न केवल अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देता है बल्कि लाखों छोटे व्यापारियों, कारीगरों और हस्तशिल्पकारों के जीवन में भी खुशियाँ लाता है।

साथियों बात अगर हम पर्यावरणीय जागरूकता,हरित दीपावली की ओर कदम को समझने की करें तो,2025 की दीपावली का विशेष संदेश है, "हरित दीपावली,स्वच्छ भारत।" सरकार और पर्यावरण संगठनों ने लोगों से आग्रह किया है कि वे मिट्टी के दीपक, प्राकृतिक रंगों और पर्यावरण- मित्र सजावट का उपयोग करें ।इस वर्ष कई स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों ने "एक दीप प्रकृति के नाम" अभियान शुरू किया है, जिसके तहत वृक्षारोपण, जल संरक्षण और प्लास्टिक-मुक्त उत्सव को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे दीपावली का वास्तविक उद्देश्य, "प्रकाश फैलाना"अपनी सार्थकता में और गहरा हो जाता है।

साथियों बात अगर हम संस्कृति से वैश्विक कूटनीति तकदीपावली का नया आयाम को समझने की करें तो,भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में दीपावली को सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी के रूप में भी प्रस्तुत किया है ।संयुक्त राष्ट्र,

व्हाइट हाउस और डाउनिंग स्ट्रीट जैसी जगहों पर दीपावली समारोह का आयोजन अब सामान्य बात हो गई है ।2025 में, भारत-ब्रिटेन और भारत-अमेरिका संबंधों में सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में दीपावली का उपयोग विशेष महत्व रखेगा। यह संदेश देता है कि भारत केवल आर्थिक या सैन्य शक्ति नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति भी है,जो "विश्व गुरु" की भावना को जीवित रखती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि दीपों की यह रोशनी मानवता का उत्सव है,दीपावली 2025 केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि मानवता के प्रकाश का उत्सव बन चुकी है। यह हमें याद दिलाती है कि चाहे युग बदल जाए, तकनीक आगे बढ़ जाए,लेकिन प्रकाश का मूल्य कभी कम नहीं होता ।जब अयोध्या की सरयू घाट पर 26 लाख दीप जलेंगे, जब टाइम्स स्क्वायर पर भारतवंशी "जय श्रीराम" और "शुभ दीपावली" का उद्घोष करेंगे, तब पूरी दुनिया यह संदेश सुनेगी, "जहाँ प्रकाश है, वहीं जीवन है। जहाँ प्रेम है, वहीं ईश्वर है।"इस दीपावली पर केवल अपने घर ही नहीं, बल्कि अपने हृदय को भी रोशन करें ।क्योंकि सच्ची दीपावली वही है जो अंधकार को मिटाकर आत्मा को प्रकाशित कर दे।

बदलती दीवाली: दीप नहीं, प्रदर्शन की झिलमिल (दीपावली पर विशेष आलेख)

हमारा देश भारत त्योहारों का देश है, जहां हर पर्व केवल उत्सव ही नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन भी होता है। दीपावली (दीपों की आवलि यानी कि दीप-पंक्ति) उन्हीं में सबसे प्रमुख, बड़ा और पवित्र त्योहार है।संस्कृत में दीपावली का अर्थ होता है-'दीपानाम् आवली' अर्थात दीपों की पंक्ति या दीपों की श्रेणी।संक्षेप में कहा जाए तो 'दीपावलीः इति दीपानां आवली' अर्थात्-दीपावली वह उत्सव है जिसमें दीपों की पंक्तियाँ सजाई जाती हैं। वास्तव में दीपावली केवल दीपों का ही नहीं, बल्कि यह हमारी आत्मा की रौशनी, सत्य, सद्भावना और आनंद का प्रतीक है। दीपावली का पर्व अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देता है। किंतु आज जब हम 20 अक्टूबर (सोमवार) को दीपावली (प्रकाश पर्व) मनाने जा रहे हैं, तो सवाल यह उठता है कि क्या वर्तमान में हमारी दीपावली पहले जैसी रही है ? क्या वह सादगी, अपनापन और हमारे देश की सनातन संस्कृति की सुगंध (सुरभि) अब भी हमारे दीपों में झलकती है ?

भारतीय संस्कृति का अनूठे प्रतीक-मिट्टी के दीपक:-

मिट्टी के दीपक भारतीय सनातन संस्कृति और परंपरा का प्रतीक हैं। ये दीपक न केवल दीपावली बल्कि अनेक धार्मिक (व्रत, उपवास, अनुष्ठान) और सामाजिक अवसरों पर उपयोग किए जाते हैं। मिट्टी के दीपक हमारे पर्यावरण के अनुकूल होते हैं, क्योंकि इनमें कोई हानिकारक पदार्थ नहीं होता। इनको प्रज्ज्वलित करने से धुआं या प्रदूषण नहीं फैलता, बल्कि कीट-पतंगे मर जाते हैं और वायु तथा वातावरण शुद्ध होता है। पाठकों को बताता चलूं कि दीप प्रज्ज्वलन (दीया जलाने) के समय हमारे यहां दीप प्रज्ज्वलन श्लोक बोला जाता है-'शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा। शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥' इसका भावार्थ यह है कि 'हे दीपज्योति! आप शुभ, कल्याण, आरोग्य और धन-संपदा देने वाली हैं।आप शत्रुओं की बुद्धि का विनाश करती हैं-आपको मेरा नमस्कार है।' इसी प्रकार से एक और श्लोक भी हमारे यहां प्रचलित है— 'दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।दीपो हरतु मे पापं संध्यादीप नमोऽस्तुते॥' मतलब यह है कि 'दीपक स्वयं परम ब्रह्म हैं, भगवान जनार्दन के प्रतीक हैं। यह दीप मेरे पापों का नाश करे — उस संध्यादीप को मेरा नमस्कार है।' अतः दीपावली पर दीप प्रज्ज्वलित करने की परंपरा के महत्व को बखूबी समझा जा सकता है।और तो और दीप (दीपक) कुम्हारों की आजीविका का महत्वपूर्ण साधन भी हैं। मिट्टी के दीपक सादगी, पवित्रता और स्वदेशी भावना का भी संदेश देते हैं। आज के इस आधुनिक युग में भी इनका महत्व कम नहीं हुआ है। चाइनीज़ झालरों और बिजली की रोशनी के बीच ये दीपक अपनी परंपरागत चमक बनाए रखते हैं। मिट्टी के दीप जलाने से वातावरण में सकारात्मक (पाज़िटिव) ऊर्जा फैलती है। ये दीपक अंधकार पर प्रकाश की विजय और आशा का प्रतीक हैं। कभी दीपावली का अर्थ ही था- 'मिट्टी के दीपक और घर की चौखट पर जगमगाती रौशनी।' हर घर-आंगन में कुम्हार के हाथों से बने सैकड़ों दीपक सजते थे। मिट्टी के दीपक, तेल-बाती की बात ही कुछ और थी। दिन में बाजार या कुम्हार के घर से मिट्टी के दीपक खरीद कर घर लाना, घर लाकर उन्हें थोड़ी देर के लिए पानी में भिगोकर रखना, बाद में उन्हें सुखाकर तैयार करना, रूई की बातियां बनाना और शाम ढ़लते ही घर-आंगन, दहलीज़, कंगूरे पर दीपक जलाकर सजाना। कितना आनंद, ख़ुशी व सादगी थी दीपावली के त्योहार में ? उन दीपकों की मिट्टी में न केवल मिट्टी की खुशबू होती थी, बल्कि उसमें हमारे देश के किसानों, मजदूरों और कलाकारों की मेहनत का उजाला भी बसता था। कुम्हार परिवार दीपावली से महीनों पहले ही दीप बनाने में जुट जाते थे। यह त्योहार उनके लिए केवल धार्मिक नहीं, बल्कि आर्थिक आधार भी था। लेकिन आज के दौर में, जब हम चकाचौंध और चमक-दमक के पीछे भाग रहे हैं, मिट्टी के इन दीपकों की रौशनी धीरे-धीरे धुंधली पड़ती जा रही है।

समय की धार के साथ चाइनीज़ लाइटों का बढ़ता प्रचलन:-

आज के बाजारों में दीपक नहीं, बल्कि 'झालरें', 'एलईडी चेन', 'चाइनीज़ लाइटें' बिकती हैं। ये लाइटें सस्ती, रंगीन और बिजली से चलने वाली हैं। इन्हें जलाना आसान है, संभालना भी। लेकिन यहां प्रश्न यह उठता है कि क्या ये हमारे घरों में वही आत्मिक उजाला फैलाती हैं, जो मिट्टी के दीपक करते थे ?मिट्टी का दीपक जब जलता है तो उसकी लौ में श्रद्धा, शांति और परंपरा की गंध होती है। उसकी रौशनी में 'संस्कार' झलकते हैं, जबकि बिजली की झालरें केवल और केवल 'दिखावा' या 'प्रदर्शन' करती हैं। दूसरे शब्दों में यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के त्योहारों में दिखावे की चमक बढ़ गई है।लोग भक्ति से अधिक भौतिक सजावट पर ध्यान देते हैं।सादगी और आत्मिक शांति तो जैसे कहीं खो सी गई है। पवित्रता का स्थान प्रतिस्पर्धा और आडंबर ने ले लिया है।सच तो यह है कि त्योहार अब आनंद

से अधिक प्रदर्शन का माध्यम बन गए हैं। हमारी संस्कृति और हमारी परंपराएं आज पीछे छूटती चलीं जा रहीं हैं।

कुम्हारों की दुर्दशा:-

आज के युग में कुम्हारों की दीपावली फीकी पड़ गई है। दरअसल, आज मिट्टी के दीपकों की जगह इलेक्ट्रॉनिक लाइट्स ने ले ली है। कुम्हारों की मेहनत का अब उचित मूल्य भी नहीं मिलता है। चाईनीज झालरों, इलैक्ट्रिक आइटम्स ने उनकी रोज़ी-रोटी छीन ली है। परंपरा और कला धीरे-धीरे मिटती जा रही है। बढ़ते शहरीकरण, आधुनिकीकरण के कारण कुम्हारों के समक्ष मिट्टी की भी समस्या है। महंगाई भी पहले की तुलना में आज काफी बढ़ चुकी है।मिट्टी, तेल, घी, बाती-सब महंगे हो चुके हैं। मिट्टी के दाम बढ़ने से मिट्टी के दीयों और मिट्टी के बर्तनों की लागत बढ़ गई है। ईंधन और रंगों की कीमतें भी बढ़ने से उत्पादन महंगा हो गया है। आज से 10-20 साल पहले गांवों और कस्बों में कुम्हारों के बनाए दीये की मांग इतनी होती थी कि कई बार ऑर्डर पूरे करना भी मुश्किल हो जाता था, लेकिन अब वही कुम्हार अपने बने हुए दीप बेचने के लिए तरस रहे हैं।मिट्टी के दीये अब ऑनलाइन कंपनियों के जरिए बाजार में उतरने लगे हैं। सच तो यह है कि कुम्हारों की मेहनत और कला को अब मशीनें निगल रही हैं।मशीनों से बने दीये सस्ते और जल्दी तैयार हो जाते हैं।महंगाई और मशीनों के इस युग में हाथ से बनी चीजों का मूल्य कम होता जा रहा है। इससे स्थानीय कुम्हारों की बिक्री पर गहरा असर पड़ रहा है और ग्रामीण कलाकारों की आजीविका संकट में है। दूसरे शब्दों में कहें तो मशीनी युग में कुम्हार अपनी पहचान बचाने की जद्दोजहद में हैं।इधर, चाइनीज़ लाइटें सस्ती और आकर्षक दिखती हैं। परिणामस्वरूप, लोग 'सस्ता और चमकदार' चुन लेते हैं, जबकि 'अपना और पारंपरिक' (स्वदेशी) पीछे छूट जाता है।

आज दीपोत्सव पर सादगी नहीं, रह गया है दिखावा:-

पहले दीपावली सादगी और भावनाओं का पर्व थी। लोग अपने घरों की सफाई करते थे, गोबर से लीपकर रंगोली व मांडणे बनाते थे, मिट्टी के दीप जलाते थे और मिठाई घर पर तैयार करते थे। अब वह स्थान रेडीमेड मिठाइयों, चाइनीज़ झालरों और महंगे सजावटी सामान ने ले ली है।आज का दीपोत्सव 'उत्सव' कम और 'प्रदर्शन' अधिक बन गया है।

मिट्टी के दीपक : पर्यावरण के लिए वरदान:-

मिट्टी के दीपक न केवल हमारी सनातन संस्कृति का प्रतीक है, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी श्रेष्ठ हैं।ये पूरी तरह प्राकृतिक और जैविक रूप से नष्ट होने योग्य है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें बिजली की खपत नहीं होती तथा किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं फैलता।इनका उपयोग करने से स्थानीय कलाकारों को रोजगार मिलता है। इसके विपरीत, बिजली से चलने वाली लाइटें ऊर्जा की खपत बढ़ाती हैं और उनके तारों में प्रयुक्त प्लास्टिक व धातुएं पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।

आधुनिकता बनाम परंपरा:-

आधुनिकता का अर्थ यह नहीं कि हम अपनी परंपराओं व हमारी संस्कृति को भूल जाएं। प्रगति तब सार्थक होती है जब वह अपनी जड़ों से जुड़ी रहे। दीपावली केवल रौशनी का त्योहार नहीं, यह 'संवेदनाओं का प्रकाश' है। दीपावली के इस पावन पर्व पर हम अपने भीतर के दीप को प्रकाशमान करें। हमारी युवा पीढ़ी को यह समझाना बहुत ही जरूरी व आवश्यक है कि मिट्टी का दीपक केवल सजावट मात्र ही नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र संस्कार है। जब हम दीप जलाते हैं, तो वह हमें हमारी प्रकृति, श्रम और हमारी सनातन संस्कृति से जोड़ता है।

अपनाएं लोकल फॉर वोकल की भावना:-

दीपावली का पर्व (दीपोत्सव) केवल रौशनी और खुशियों का ही प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भर भारत का संदेश देने का अवसर भी है। इस दीपावली हमें 'लोकल फॉर वोकल' की भावना को अपनाना चाहिए। विदेशी सामानों की बजाय हमें अपने देश में बने उत्पादों को प्राथमिकता देनी चाहिए। मिट्टी के दीये, हस्तनिर्मित सजावट, स्थानीय मिठाइयां और स्वदेशी कपड़ों से त्योहार मनाने से न केवल हमारी परंपरा सशक्त होगी, बल्कि कारीगरों, कुम्हारों और छोटे व्यापारियों की आजीविका भी सुरक्षित रहेगी। जब हर घर में स्वदेशी दीप जलेगा, तभी सच में 'आत्मनिर्भर भारत' का प्रकाश फैलेगा।

अंत में यही कहूंगा कि दीपावली की असली रौशनी केवल बिजली की चमक, चकाचौंध में नहीं, बल्कि हमारे देश की मिट्टी की गंध में है, जो हमारी मिट्टी से, हमारे दिलों से मजबूती से जुड़ी है। मिट्टी का दीपक छोटा भले हो, पर उसकी लौ में परंपरा, संस्कृति और अपनत्व की आभा होती है। जब हम अपने घर में मिट्टी का दीप जलाते हैं, तो वह केवल अंधकार नहीं मिटाता, बल्कि हमारी सोच, हमारे समाज और हमारी आत्मा में भी रौशनी भर देता है। तो आइए ! इस दीपावली, हम सभी ये संकल्प लें कि 'हम मिट्टी के दीप जलाएंगे, संस्कृति का दीप जलाएंगे, और उस सच्ची दीपावली को पुनः जीवित करेंगे, जो सादगी, प्रेम और भारतीयता की प्रतीक है।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

न्यू इंडिया का न्यू नॉर्मल : छुट्टा घूमते जहरखुरान ! : (आलेख : बादल सरोज)

जहर खुरानी न्यू इंडिया का न्यू नॉर्मल है। नफ़रती जहर फैलाने की प्रतियोगिता-सी शुरू हो गयी है। एक तरह से देखें तो ऐसा होना ही था। जब ऊंचाई तक पहुँचने के लिए कटखना और जहरीला होना एकमात्र योग्यता बना दी गयी हो, जब शर्मो-हया, लोक-लाज, सामाजिक बर्ताव की समस्त सीमाओं को लांघते फलांगते हुए किये जाने वाला व्यवहार बेहतर पद पाने, विधायक सांसद यहाँ तक कि मंत्री, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के पद तक पहुँचने के पुरस्कार का आधार बन जाए, तो इसे ही जीवन की पूर्णता का लक्ष्य मानने वालों के लिए उठ-उठ कर, उचक-उचक कर विषवमन करना चौबीस घंटा सातों दिन किये जाने वाला काम बन जाता है।

मध्यप्रदेश – जो अपने अतीत में आमतौर से इससे दूर रहा, कम से कम खुले रूप में कभी विषपायी नहीं रहा – इन दिनों जहरखुरानों का चारागाह बना हुआ है। इस बार सिलसिला ग्वालियर से शुरू हुआ है, मगर न तो यह सिर्फ ग्वालियर तक महदूद है और ना ही यह सिर्फ ग्वालियर तक सीमित मसला है। फिर भी शुरुआत यहीं से करते हैं। कुछ महीने पहले हाईकोर्ट के परिसर में डॉ. अम्बेडकर की मूर्ति लगाए जाने को लेकर कुछ मूर्ति विरोधियों ने उत्पात मचाया। ये न तो मूर्तिपूजा को मनुष्य की गरिमा के विरुद्ध मानने वाले आर्यसमाजी थे, न बुतपरस्ती से नाइत्तफाकी रखने वाले मजहब को मानने वाले थे। ये सब संघी थे – ऐसे संघी, जो खुद को मनुवादी कहने से कतई नहीं शर्माते। जो शूद्रों को मनुस्मृति सम्मत वर्णाश्रमी हैसियत पर पहुंचाए जाने के खुले पक्षधर हैं। सारी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद भी मूर्ति नहीं लगने दी गयी।

जाहिर है, इसका प्रतिवाद हुआ ; आम तौर से यह प्रतिवाद लोकतान्त्रिक तरीके से उन संगठनों की अगुआई में हुआ, जो इस उत्पात की असली वजह समझते थे और संविधान की ओर लपकते भेड़ियों की आंख में आँख डालकर देखने की ताब रखते थे। हालांकि जातिवाद के कुछ दुकानदार अपनी रेहड़ी लेकर इधर भी आये, मगर कुल मिलाकर उनके मंसूबे पूरे नहीं हुए।

प्रतियोगितात्मक उन्माद विकसित करने की अपनी कोशिशों को व्यर्थ जाते देख मूर्ति लगाने के विरोधियों ने अपने मुखौटे उतार दिए और सीधे-सीधे गाली-गलौज पर आ गए। डॉ. अम्बेडकर से लेकर दमित और दलित जातियों के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया। सत्ता में उन्हीं के सहोदर बैठे हैं, प्रशासन उन्हीं की जकड़न में हैं। लिहाजा जब ऊपर वाला मेहरबान, तो इन्हें पहलवान होना ही था। जिनका इस पूरे प्रपंच में कोई रोल ही नहीं था, हताशा में आकर उन राम जी का नाम लेकर गटर गहरी करने की तिकड़म आजमाई, मगर उसे भी मुस्लिम नाम वाली युवती पुलिस अधिकारी ने कामयाब नहीं होने दिया। अब खुले आम संघी आई टी सैल ब्राह्मणों, क्षत्रियों से बन्दूक तलवार उठाकर यलगार करने की हुंकार कर रही है, उन्माद को टकराव तक ले जाने की कोशिश की जा रही है। किस तारीख के आव्हान का क्या हुआ, कितने लोग आने थे, कितने आये, इस आधार पर जो जहर फ़ैल चुका है, उसकी अनदेखी करना स्वयं को धोखे में रखना होगा।

इसे भ्रष्ट, कुपढ़ और शाखा दक्ष, राजनीतिक महत्वाकांक्षा की गलाजत से भरे किसी कुंठित वकील या उसके मुंशियों की कारगुजारी मानना खतरे को कम करके आंकना होगा। जो जहर ये गिरोह यहाँ फैला रहा है, वह इनका अपना उत्पाद नहीं है : इसके थोक उत्पादक और वितरक ऊपर बैठे हैं। सर्वोच्च न्यायालय के सर्वोच्च जज जैसे सर्वोच्च संवैधानिक पदों में से एक पर बैठे न्यायमूर्ति गवई की तरफ उछला जूता किसी व्यक्ति पर नहीं, संविधान और सभ्य समाज पर उछला जूता था। इसके बाद – भले कई घंटों बाद – देश-दुनिया को दिखाने के लिए प्रधानमंत्री ने दुःख और अफ़सोस जता दिया हो, मगर उनकी पार्टी के एक भी मंत्री, एक भी पदाधिकारी ने उफ़ तक नहीं की।

हर तीसरे दिन सामाजिक समरसता और हिन्दू एकता पर प्रवचन देने वाले आर एस एस प्रमुख भी कुछ नहीं बोले । मगर इनके नियंत्रित मीडिया और उनकी विषाक्त आईटी सैल ने उसी दिन से जो कुत्सा अभियान छेडा हुआ है, उसकी नीचाई की कोई सीमा नहीं है। सिर्फ गवई ही नहीं गरियाए जा रहे, उनके बहाने न्यायपालिका और संविधान और सामाजिक न्याय सब पर जहरीली मिसाइलें दागी जा रही हैं।

अब जब विषप्रक्षालन के घाट पर इनके 'ठठ के ठठ इकठ्ठा होकर ठट्ठा और लट्ठम लट्ठा करने भीड़ की भीड़ लगाए बैठे है, तो गंगोत्री उससे वंचित कैसे रह सकती है : सो भी तब, जब अभी बिहार और उसके बाद बंगाल में चुनाव हो रहे हों। शीर्ष पर दो नम्बर – जहां गिनती पूरी हो जाती है – पर विराजे गृह मंत्री अमित शाह ने घुसपैठियों की बाढ़ आने और मुसलमानों की आबादी बढ़ोत्तरी की दर 24% हो जाने का शिगूफा छोड़ा। अपने ट्विटर अकाउंट से भी साझा किया ; कुछ दिन बाद डिलीट भी कर दिया। मगर जो होना था, वह तो हो ही गया, सच आंकड़ो की किताब में रह गया, झूठ मटरगश्ती कर आया।

यह बात अलग है कि ठीक उन्ही दिनों अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार के तालिबान के स्वागत के लिए लाल कालीन बिछाया जा रहा था। कहते हैं कि इसके पीछे भी दोहरा मकसद था : तालिबानी सरकार के जरिये पाकिस्तान पर दवाब बनाने की "समझदारी", वहीँ उनके बहाने भारत में अपना ध्रुवीकरण का एजेंडा आगे ले जाने की उम्मीद !! मगर अमित शाह अभी भी पहले चरण तक ही हैं। जबकि उनका कुनबा अगले चरण – शूद्रों को उनकी हैसियत दिखाने और संविधान की जगह मनु को पधराने के लिए पीठिका बनाने के मुकाम तक आ चुका है। यह जुगलबंदी उसी का हिस्सा है।

हरियाणा में आत्महत्या करने वाले वरिष्ठ आई पी एस की मृत देह अंतिम संस्कार के लिए 9 दिन तक इन्तजार करती रही। उनकी जीवन संगिनी खुद एक वरिष्ठ आई ए एस अधिकारी होने के बावजूद अपने पति को अंतिम विदा नहीं दे पाई, क्योंकि उन्हें आत्महत्या के लिए विवश करने वाले नामजद अधिकारियों के खिलाफ हरियाणा सरकार कार्यवाही करने के लिए तैयार नहीं है। इधर एक लाश मुर्दाघर में हैं, उधर नफरती अभियान में सिद्ध प्रेत उसके खिलाफ अभियान छेड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। एक मरे हुए व्यक्ति के प्रति सम्मान का दिखावा भी नहीं किया जा रहा है। ध्यान रहे आत्महत्या करने वाले एडी जी पी का नाम पूरण कुमार है और जैसा कि उन्होंने अपने लम्बे सुसाईड नोट में लिखा है, उनका एकमात्र अपराध उनका दलित होना है।

इस तरह के नफरती उन्माद को हवा देने वाले यह भूल जाते हैं कि जहर जब हवाओं में घुलता है, तो अपना-पराया नहीं देखता। अलीगढ का व्यवसायी परिवार का प्रोफेसर अभिषेक गुप्ता इसका उदाहरण है। उन्हें उन्ही साध्वी शकुन पाण्डेय ने मरवा डाला जो कथित रूप से उनके साथ संबंधों में थीं। मरने, मारने और मरवाने वाले तीनों के तीनों पक्के हिन्दू थे। इनमें से साध्वी तो इत्ती पक्की वाली सनातनी थीं कि बिना किसी नागा के हर 30 जनवरी को सनातनी गाँधी के पुतले में गोली दाग कर गोडसे की पूजा करती थीं। गांधी का तो खैर क्या बिगड़ना था, मगर उनके इस शौर्य पर प्रमुदित और गौरवान्वित होने वाला अभिषेक जरूर उनका शिकार बन गया।

अब यही विधि डॉ अम्बेडकर के साथ आजमाई जा रही है। बिगड़ेगा तो उनका भी कुछ नहीं। मगर जो इस बहाने अपना कुछ सुधरने की आस लगाए बैठे हैं, वे खातिर जमा रखें ; जहर उन्हें भी नहीं बख्शने वाला। इसलिए कि मनु जब आयेंगे, तब सिर्फ गरीब गुरबों के लिए नहीं आयेंगे, वे किन-किन के लिए आयेंगे, इसकी पूरी तहरीर श्रेणीक्रम सहित इस कुनबे की किताबों में दर्ज है। जिन्हें खुद के 'सवर्ण' होने का मुगालता और उसके चलते राज सिंहासन पर विराजने का भरम है, वे रामभद्राचार्य के आप्त वचनों को ही सुनकर अपनी गलतफहमी दूर कर सकते हैं।

अगला मोर्चा खुल चुका है। सिर्फ उलूकवंशी ही ऐसे में तटस्थ रहने या बीच का रास्ता निकालने का जोखिम ले सकते हैं। जो इस देश, उसकी आबादी, लम्बे संघर्षों के बाद कम से कम कागज पर हासिल उजाले की सलामती के हिमायती हैं, उन्हें मशाल जलानी पड़ेंगी। इसलिए कि भेड़यिे बाकी जो भी कोशिश कर सकते हैं कर लें, मशाल जलाना, गाँव बसाना नहीं जानते। इतिहास गवाह है कि इतिहास और सभ्यताओं का निर्माण भेड़यिों ने नहीं, अँधेरे के विरुद्ध उठी मशालों ने ही किया है ।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं)

जीएसटी समायोजन से नहीं होगी ट्रंप के टैरिफ़ की काट

: प्रभात पटनायक, अनुवाद : राजेंद्र शर्मा)

भारत के खिलाफ ट्रंप के टैरिफ हमले का भारतीय अर्थव्यवस्था पर संकुचनकारी प्रभाव पड़ने में कोई संदेह नहीं है। अगर ट्रंप इस समय लगाये जा रहे 50 फीसद की दर से अपने टैरिफ को कम भी कर देता है, तब भी यह भारत के अमेरिकी माल पर टैरिफ घटाए जाने के बदले में ही किया जा रहा होगा। ऐसा खासतौर पर उसके कृषि उत्पादों तथा दुग्ध उत्पादों पर टैरिफ घटाए जाने के बदले में ही किया जा रहा होगा, जिसका मतलब होगा अमेरिका से आयात का बढ़ना और इसलिए भारत में आमदनियों का घट जाना।

ट्रंप के टैरिफ के इस संकुचनकारी प्रभाव की काट करने के लिए जरूरत इसकी होगी कि भारतीय अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्रय शक्ति डाली जाए और इसके तीन संभव रूप हो सकते हैं।

पहला, राजकोषीय घाटे का बढ़ाया जाना।

दूसरा, अमीरों पर ज्यादा कर लगाने के जरिए बढ़े हुए सरकारी खर्च के लिए वित्त व्यवस्था किया जाना, जो अमीरों की बचत यानी उनके गैर-व्यय के एक हिस्से को, सरकारी खर्चों में तब्दील कर रहा होगा।

या तीसरा, ऋण की वित्त व्यवस्था से संचालित, निजी उपभोग व्यय में बढ़ोतरी या उसी हिसाब से निजी बचत अनुपात में कमी।

गुड्स एंड सर्विसेज कर की दरों में, 22 सितंबर से लागू हुए जिन समायोजनों की घोषणा की गयी थी, वह अपने आप में अर्थव्यवस्था में कोई क्रय शक्ति नहीं डालते हैं। इस तरह का समायोजन, जो पहले की चार कर दरों– 5, 12, 18 तथा 28 फीसद– की जगह पर सिर्फ दो दरें, 5 तथा 18 फीसद करता है (यह चंद ''कलंकित मालों'' के अलावा है, जिन पर अब 40 फीसद की दंडात्मक दर लागू होगी), निश्चित रूप से उपभोक्ताओं पर कुल बोझ घटाने का काम करेगा, बशर्ते ये रियायतें उन तक ''पहुंचायी जाएं''।

इसके साथ ही, अगर इससे होने वाली सरकार के राजस्व की हानि की भरपाई, खर्च में उसी हिसाब से कटौती कर के की जाती है, न कि राजकोषीय घाटे के आकार में बढ़ोतरी से, तो इस कदम के जरिए अर्थव्यवस्था में क्रय शक्ति में कोई शुद्ध बढ़ोतरी नहीं हो रही होगी। ऐसी सूरत में तो कर रियायतों के बल पर निजी उपभोग में जितनी बढ़ोतरी होगी, सरकारी खर्चों में उतनी ही कटौती हो जाएगी और इस तरह सकल मांग के स्तर में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही होगी। इसलिए, इस तरह के हालात में जीएसटी दर में दी गयी रियायतें, अर्थव्यवस्था पर डोनाल्ड ट्रंप द्वारा थोपे गए सकल मांग के संकुचन की काट नहीं कर सकती हैं।

इतना ही नहीं, इस सूरत में इसका तो दावा किया ही नहीं जा सकता है कि जीएसटी की दरों के घटाए जाने से, मेहनतकश जनता का कुल उपभोग बढ़ जाएगा, जिसका सरकार दावा कर रही है। अगर, उन क्षेत्रों में जिनमें इस तरह की रियायतों से उपभोग बढ़ने जा रहा है, मजदूरी-आमदनियों का हिस्सा उतना ही है, जितना उन क्षेत्रों में है, जिनमें राजस्व हानि के चलते सरकारी खर्चों में कटौतियां की जाने वाली हैं, तो मजदूरों का कुल उपभोग (या और सामान्य रूप से मेहनतकशों का कुल उपभोग), सरकार के राजकोषीय कदमों के चलते अपरिवर्तित ही रहेगा। और यह किसी भी तरह से असंभव पूर्व-कल्पना नहीं है क्योंकि सरकार के खर्चों में कटौतियां मुख्यतः ढांचागत क्षेत्र में होंगी, जिसका निर्माण क्षेत्र एक बड़ा घटक है। और निर्माण बहुत ही रोजगार सघन होता है, जिसमें कुल उत्पाद में मजदूरी-आय का हिस्सा, उसी हिसाब से ज्यादा होता है।

#जीएसटी_रियायतों_के_वित्तपोषण_का_सवाल

इसका अर्थ यह है कि डोनाल्ड ट्रंप द्वारा मेहनतकश जनता की आमदनियों में जो कटौती थोपी जा रही है, उसकी काट सरकार के राजकोषीय कदमों से मेहनतकशों की आमदनियों में किसी भी बढ़ोतरी से नहीं होने वाली है। सरकार के राजकोषीय कदम उनकी आमदनियों को जहां का तहां, उस निचले स्तर पर ही छोड़ देंगे, जिस पर ट्रंप के टैरिफ उन्हें धकेल देंगे। संक्षेप में यह कि ट्रंप के टैरिफों से भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ रहे संकुचनकारी प्रभावों की काट करने के लिए और इन टैरिफ के चलते मेहनतकश जनता की आय में होने वाले संकुचन को निष्प्रभावी बनाने के लिए, मोदी सरकार ने कुछ भी किया ही नहीं है। बहरहाल, ऐसा लग सकता है कि जीएसटी रियायतें देना, मेहनतकश जनता के उपभोग में बढ़ोतरी करने के बराबर है, लेकिन जब तक राजकोषीय घाटा बढ़ाया नहीं जाता है (या इसके विकल्प के तौर पर अमीरों से और ज्यादा प्रत्यक्ष कर इकट्ठा करने के जरिए, इस तरह की जीएसटी रियायतों से होने वाली राजस्व हानि की भरपाई नहीं की जाती है), तब तक सरकार के इन राजकोषीय कदमों से मेहनतकश जनता का कुल उपभोग वास्तव में अपरिवर्तित ही बना रहेगा।

जहां भारतीय अर्थव्यवस्था पर ट्रंप के टैरिफ के संकुचनकारी प्रभावों की मोदी सरकार के राजकोषीय कदमों से तो शायद ही कोई काट हो रही होगी, निजी उपभोक्ता खर्चों में ऐसी बढ़ोतरी का क्या, जो ऋण से संचालित हो सकती है या बचत अनुपात में कटौती से संचालित हो सकती है? अखबार इसकी खबरों से भरे हुए हैं कि जीएसटी की दरों में समायोजन से, सरकार को अनुमानतः कितनी राजस्व हानि होने जा रही है। खुद केंद्र सरकार ने एक पूरे साल में राजस्व हानि का आंकड़ा 48,000 करोड़ रुपये लगाया है। यह इस पूर्वकल्पना पर आधारित है कि जीएसटी की दरों में कमी से कुल 93,000 करोड़ रुपये की राजस्व हानि होने जा रही है, जिसमें से 45,000 करोड़ रुपये की भरपाई ''कलंकित मालों'' पर कर की दरों में होने वाली बढ़ोतरी से हो जाएगी। दूसरी ओर, भारतीय स्टेट बैंक ने पूरे साल का घाटा 3,700 करोड़ रुपये ही लगाया है। इस अनुमान का आधार यह है कि जीएसटी दरों में कटौतियों के चलते कीमतों में गिरावट से उपभोग को इतना ज्यादा उत्प्रेरण मिलेगा कि कर की दरों में कटौती के बावजूद, कुल राजस्व में बहुत मामूली गिरावट ही हो रही होगी। बहरहाल, विभिन्न निजी अनुमानों में, और इसमें क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के अनुमान भी शामिल हैं, जीएसटी दरों में कटौती से राजस्व हानि को कहीं कहीं ज्यादा, 1.2 से 1.5 लाख करोड़ रुपये तक आंका है। बहरहाल, इन अनुमानों के पीछे जो सैद्धांतिक पूर्वकल्पनाएं काम कर रही हैं, उन्हें कभी उजागर ही नहीं किया जाता है, जबकि उन्हें उजागर किया जाना चाहिए।

#अतिरिक्त_क्रय_शक्ति_कहां_से_आएगी ?

यह दावा कि इन कर कटौतियों से उपभोग खर्चों में इतनी जबर्दस्त बढ़ोतरी होगी कि राजस्व हानि मामूली ही होगी (क्योंकि अब कर की घटी हुई दर, कहीं बढ़ी हुई मात्रा पर लागू की जा रही होगी) असली सवाल से बचकर निकल जाता है। सवाल यह है कि इस बढ़े हुए उपभोग के लिए क्रय शक्ति आएगी कहां से ? अगर बेस लेवल उपभोग पर कर रियायतें, मान लीजिए कि 100 रुपये की दी जा रही हों, तो बेस लेवल से ऊपर उपभोग में 100 रुपये की बढ़ोतरी स्पष्ट रूप से समझ में आती है। लेकिन, उस सूरत में राजस्व घाटा 100 रुपये का होगा, इससे एक पैसा कम का नहीं। लेकिन, अगर दावा यह किया जा रहा है कि बेस लेवल पर उपभोग खर्च में 100 रुपये की कर रियायत के चलते 200 रुपये बढ़ोतरी हो जाएगी, जिससे राजस्व का वास्तविक नुकसान बेस लेवल उपभोग पर कर रियायतों से घटकर होगा, तो सवाल यह खड़ा होता है कि 100 रुपये की यह अतिरिक्त क्रय शक्ति आएगी कहां से ? यह तर्क दिया जा सकता है कि इन कर रियायतों से उपभोक्ताओं में ऐसा जोश पैदा होगा कि वे उपभोग बढ़ाने के लिए ऋण लेंगे या फिर इसके लिए अपनी बचत में हाथ डालेंगे। बहरहाल, हम एक क्षण के लिए इसे सच भी मान लें, तब भी यह तथ्य तो अपनी जगह रहता है कि मजदूर वर्ग को न तो इस तरह के ऋणों का पात्र समझा जाएगा और ना उनके पास ऐसी बचत होगी, जिसमें से पैसा निकाल कर, टिकाऊ उपभोक्ता मालों की कीमतों में कमी का फायदा उठा सकें। दूसरे शब्दों में उपभोग में तथाकथित उछाल, मजदूर वर्ग के बीच से आने की उम्मीद तो की नहीं जा सकती है।

मध्यवर्गीय उपभोक्ता, जिनमें वेतनभोगी भी शामिल हैं, यह देखकर कि कर रियायतों के चलते चीजें अचानक पहले से कुछ सस्ती हो गयी हैं, ऋण लेने के बल पर या अपनी बचतों में हाथ डालने के सहारे, शायद पहले से ज्यादा खरीददारी करने के लिए तैयार हो जाएं। लेकिन, उस सूरत में भी उपभोग में यह उछाल अस्थायी ही होगी। जब संबंधित ऋण के भुगतान का समय आएगा या जब ऋण की किस्तें (ईएमआइ) चुकाने का समय आएगा, उन्हें अपने उपभोग में कटौती करनी पड़ रही होगी। दूसरे शब्दों में, उपभोग में ऋण के बल पर बढ़ोतरी न सिर्फ अस्थायी उछाल ही पैदा करती है बल्कि वास्तव में एक प्रक्रिया के जरिए, जिसे अर्थशास्त्री जोज़फ शुम्पीटर ने 'स्व-संकुचन' या ऑटो डिफ्लेशन का नाम दिया था, खुद को पलटती भी है। इस रास्ते के जरिए, जो वह तीसरा रास्ता है जिसका हमने पीछे जिक्र किया था, अर्थव्यवस्था में क्रय शक्ति का डाला जाना, अस्थायी भी होता है और खुद को पलटने वाला भी होता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि मोदी सरकार ने, भारतीय अर्थव्यवस्था पर डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ हमले के संकुचनकारी प्रभावों की काट करने के लिए कुछ भी नहीं किया है। यहां तक कि उसने ऐसे स्वतःस्पष्ट कदम भी नहीं उठाए हैं, जैसे प्रभावित लघु उत्पादकों को वित्तीय सब्सीडियां मुहैया कराना और इसके लिए अमीरों पर कर बढ़ाने के जरिए (जिसमें एक संपदा कर भी शामिल हो सकता है) वित्त जुटाना। उसने जिन जीएसटी रियायतों की घोषणा की है, अपने आप में उपभोग नहीं बढ़ाने जा रही हैं और इस तरह ट्रंप के कदमों की काट करने के लिए अर्थव्यवस्था को उत्प्रेरण मुहैया नहीं कराने जा रही हैं। इसकी वजह यह है कि ये रियायतें अपने आप में अर्थव्यवस्था में कोई क्रय शक्ति नहीं डालती हैं।

#शॉर्ट_कट_जो_मोदी_सरकार_अपनाएगी

बहरहाल, एक रास्ता है जो मोदी सरकार के अपनाने की संभावना है और चाहे सचेत रूप से एक आर्थिक-संकुचन विरोधी कदम के तौर पर नहीं भी हो, उसके इसे अपनाने की संभावना है। इस रास्ते को शासक वर्ग के सभी हिस्सों का अनुमोदन भी मिल जाएगा। यह रास्ता है, ऐसे उपायों से राजकोषीय घाटा बढ़ाना, जिन्हें राजकोषीय घाटे में नहीं गिना जाता है, जैसे कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की हिस्सा पूंजी की बिक्री। किसी कालखंड में सार्वजनिक उद्यमों के निजीकरण के ठीक वही वृहद आर्थिक नतीजे होते हैं, जो नतीजे बढ़े हुए वित्तीय घाटे के होते हैं। इसके जरिए सरकारी हिस्सा पूंजी निजी हाथों में दे दी जाती है, जबकि राजकोषीय घाटा सरकारी बॉन्ड निजी हाथों में देने का काम करता है। उनका असर एकदम एक जैसा होता है। लेकिन, पूरी तरह से फर्जी तथा बेईमानी-भरे कारणों से, आइएमएफ तथा वैश्वीकृत वित्त की अन्य एजेंसियां, इस सरल तथा स्वतःस्पष्ट परिघटना को पहचानती ही नहीं हैं। ये एजेंसियां राजकोषीय घाटे पर तो नाक-भौं सिकोड़ती हैं, लेकिन निजीकरण का अनुमोदन करती हैं, क्यों कि वह उन्हें पसंद है। मोदी सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र की परिसंपत्तियों का निजीकरण करने और इस तरह के निजीकरण से होने वाली प्राप्तियों से वित्त चालित खर्चों के जरिए, वैश्वीकृत वित्तीय पूंजी को भी खुश कर रही होगी और घरेलू बड़े व्यवसाय को भी, जबकि ये प्राप्तियां घाटे की वित्त व्यवस्था से अलग नहीं होती हैं और उनका अर्थव्यवस्था पर उसके चाहे बिना भी वही संकुचन-विरोधी प्रभाव पड़ेगा। लेकिन, इस तरह के निजीकरण से पूंजी का केंद्रीकरण और बढ़ जाएगा और पहले ही ज्यादा संपदा असमानता और बढ़ जाएगी।

प्रकाश अंधकार: बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण भारत में धूप का समय घट रहा है

विजय गर्ग

समाज, संभवतः सौर कमी के युग में प्रवेश कर रहा है। एक ऐसे देश के लिए जिसने अपनी जलवायु रणनीति सौर ऊर्जा पर दांव लगाया है, सौर घटना में कमी सीधे कम बिजली उत्पादन का परिणाम होती है। दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं का अनुमान है कि 2001 से 2018 तक वायु प्रदूषण ने भारत की सौर ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दशकों अरबों डॉलर के अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी। फिर कृषि पर इसका प्रभाव है।

भारत सूर्य की कमी के युग में प्रवेश कर रहा है। एक ऐसे देश के लिए जिसने अपनी जलवायु रणनीति सौर ऊर्जा पर दांव लगाया है, सौर घटना में कमी सीधे कम बिजली उत्पादन का परिणाम होती है

सूर्य की रोशनी एक अथाह संसाधन लग सकती है। लेकिन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान और भारत के मौसम विभाग द्वारा किए गए एक नए अध्ययन में पाया गया है कि पिछले तीन दशकों में घने बादलों और बढ़ते एरोसोल प्रदूषण के कारण पूरे भारत में धूप का समय कम हो रहा है। पश्चिमी तट में धूप के घंटे प्रति वर्ष 8.6 घंटों तक गिरते हुए देखा गया, जबकि उत्तरी मैदानों में सालाना 13.1 घंटों पर सबसे तेज गिरावट दर्ज की गई। पूर्वी तट और डेकन पठार में भी प्रति वर्ष क्रमशः 4.9 और 3.1 घंटे की गिरावट देखी गई। इसका मतलब यह है कि भारत, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा बाजार और एक मुख्य रूप से कृषि समाज, संभवतः सौर कमी के युग में प्रवेश कर रहा है। एक ऐसे देश के लिए जिसने अपनी जलवायु रणनीति सौर ऊर्जा पर दांव लगाया है, सौर घटना में कमी सीधे कम बिजली उत्पादन का परिणाम होती है। दिल्ली के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं का अनुमान है कि 2001 से 2018 तक वायु प्रदूषण ने भारत की सौर ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दशकों अरबों डॉलर के अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता होगी। फिर कृषि पर इसका प्रभाव है। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में जहां अंधेरा बहुत अधिक है, किसान पत्तियों पर धीमी फसल वृद्धि और लंबी आर्द्रता की रिपोर्ट करते हैं - फंगल बीमारी और परिणामस्वरूप फसल हानि का एक नुस्खा।

मानव मन और शरीर भी खतरे में हैं। सूर्योदय में कमी से हार्मोन का स्तर बदल जाता है, सतर्कता कम हो जाती है और नींद के चक्र टूट जाते हैं। भारत का एकल समय क्षेत्र प्रभाव को जोड़ता है। मनोवैज्ञानिक थकान, चिंता और मौसमी अवसाद की उच्च दरों पर ध्यान देते हैं जब सूर्य का प्रकाश कुछ सीमाओं से नीचे गिर जाता है। भारतीय शहरों में विटामिन डी की कमी - पहले से ही व्यापक है - सूर्य के प्रकाश की हानि के साथ बढ़ जाती है। वनस्पतियों और जीव-जंतुओं के लिए परिणाम भी चिंताजनक हैं। मंदी से लड़ने के लिए भारत को सबसे पहले अपने कारण से निपटना होगा: गंदा हवा। इसका मतलब है कि एरोसोल प्रदूषण को केवल स्वास्थ्य के लिए खतरा नहीं बल्कि आर्थिक खतरे के रूप में व्यवहार करना। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम का उद्देश्य कण प्रदूषण को 20-30% कम करना है। इससे प्रति वर्ष 6 से 16 टेरावाट अतिरिक्त सौर ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है, जिसका मूल्य सैकड़ों मिलियन डॉलर होगा। चीन ने पर्यावरण मानकों को सख्ती से लागू करके दशकों की धूप के अंधेरे से उज्ज्वल होने का हालिया चरण पार कर लिया है। निकट आने वाली अंधेरे के विरुद्ध भारत भी इस युद्ध को जीत सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कहानी... भगवान अपने दरवाज़े खोलता

विजय गर्ग

एक दिन एक दंपत्ति अपने 10 साल के बच्चे को लेकर डॉक्टर के पास आया। उन्होंने फ़ाइल डॉक्टर साहब की टेबल पर रखी। डॉक्टर ने फ़ाइल देखी और बच्चे की जाँच की। फिर डॉक्टर ने बच्चे से कहा, "बेटा, तुम थोड़ा बाहर बैठो, मैं तुम्हारे मम्मी-पापा से बात करता हूँ।"

माता-पिता बोले, "साहब, उसे सब पता है, इसलिए आप हमारी चर्चा उसी के सामने कर सकते हैं।"

डॉक्टर बोले, "मैंने पहली बार ऐसा परिवार देखा है जिनके चेहरे पर डर नहीं है।"

उन्होंने कहा, "साहब, शुरू में हम भी बहुत परेशान थे, लेकिन धीरे-धीरे भगवान पर भरोसे और विश्वास से हम तीनों का मनोबल मजबूत होता गया।"

डॉक्टर ने कहा, "देखिए, बच्चे के दिल की सर्जरी करनी पड़ेगी। मामला गंभीर है। 50-50 संभावना है। अगर सफल हुआ तो ज़िंदगी भर दिल की तकलीफ़ नहीं होगी, और अगर सफल न हुआ... तो आप समझ ही रहे हैं..."

माता-पिता बोले, "तो हमें क्या करना चाहिए?"

डॉक्टर ने कहा, "मेरे अनुसार मरते-मरते जीने से बेहतर है कि एक बार जोखिम उठा लिया जाए।"

वे डॉक्टर से सहमत हो गए।

जब उन्होंने डॉक्टर से शुल्क पूछा, तो डॉक्टर बोले, "आम तौर पर मैं एडवांस लेता हूँ, लेकिन आपके केस में ऑपरेशन के बाद बात करेंगे।" और उन्होंने तारीख दे दी।

ऑपरेशन के दिन बच्चा और माता-पिता समय पर पहुँचे। किसी के चेहरे पर डर नहीं था। वे बहुत शांत थे। यह केस डॉक्टर के जीवन का एक उदाहरण बन गया।

ऑपरेशन थिएटर में बच्चे को टेबल पर लिटाया गया। एनेस्थीसिया देने से पहले डॉक्टर ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए प्यार से पूछा,

"बेटा, तुम्हारा नाम क्या है?"

बच्चे ने मुस्कुराकर कहा, "आनंद।"

डॉक्टर ने मज़ाक में कहा, "बेटा, तुम्हारे नाम की तरह ही तुम हमेशा आनंद में रहो। ऑपरेशन शुरू करने से पहले कुछ कहना है?"

बच्चा बोला, "साहब, दिल क्या होता है?"

डॉक्टर बोले, "बेटा, दिल यानी हृदय, जिसकी सर्जरी आज हम करेंगे।"

बच्चा बोला, "साहब, मम्मी-पापा हमेशा कहते हैं कि हर इंसान के दिल में राम रहते हैं। तो जब आप मेरा दिल खोलें, तो ज़रा देखना कि मेरे अंदर बैठे राम कैसे हैं, फिर मुझे बताना कि वे कैसे दिखते हैं।"

डॉक्टर की आँखें भर आईं।

डॉक्टर ने अपने स्टाफ को पूरा केस पहले ही समझा दिया था, इसलिए सबकी आँखें नम हो गईं।

डॉक्टर बोले, "हज़ारों ऑपरेशन मैंने किए हैं, लेकिन पता नहीं क्यों, इस बच्चे का ऑपरेशन करते हुए मेरा मन और हाथ काँप रहे हैं।"

उन्होंने आँखें बंद कीं और भगवान से प्रार्थना की—

"अब तक मैंने हर ऑपरेशन को पेशे की तरह किया है,

पर यह ऑपरेशन श्रद्धा और विश्वास पर आधारित है।

मैं तो बस दिल की सर्जरी करता हूँ,

पर तू ही उसका सर्जन है।

मेरे इस प्रयास को सफल बना।"

कहकर उन्होंने ऑपरेशन शुरू किया।

ऑपरेशन आगे बढ़ रहा था, सफलता की पूरी संभावना थी,

लेकिन अचानक बच्चे का ब्लड प्रेशर गिरने लगा, शरीर ठंडा पड़ने लगा, और अंत में... सब शांत हो गया।

डॉक्टर की आँखों में आँसू आ गए —

"हे भगवान! तू जीत गया, मैं हार गया..."

कहकर उन्होंने थिएटर की सारी लाइटें ऑन कीं और हाथ धोने लगे।

तभी अचानक उन्हें बच्चे के शब्द याद आए —

"जब मेरा दिल खोलो तो देखना, राम कैसे हैं..."

डॉक्टर तुरंत बच्चे के दिल की ओर देखे और ज़ोर से बोले —

"क्या तुम्हें राम दिख रहे हैं?"

इतना कहते ही एक अद्भुत चेतना बच्चे के दिल में लौट आई,

दिल फिर से धड़कने लगा!

पूरा स्टाफ खुशी से चिल्ला उठा —

"जय श्री राम!"

ऑपरेशन पूरा हुआ और बच्चा बच गया।

डॉक्टर ने फीस नहीं ली और कहा —

"हज़ारों ऑपरेशन किए,

पर कभी यह नहीं सोचा कि राम कहाँ हैं?

इस बच्चे ने आज मुझे दिखा दिया कि राम हमारे दिल में रहते हैं।"

जब हम अपनी बुद्धि के दरवाज़े बंद करते हैं, तब भगवान अपने दरवाज़े खोलता है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कोचिंग के बिना भी यूपीएससी में सफलता

विजय गर्ग

भारतीय प्रशासनिक सेवा जॉइन करने के लिए यूपीएससी एग्जाम पास करना जरूरी है। इस परीक्षा में उम्मीदवार को कड़ी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग मानते हैं कि यूपीएससी क्लियर करने को महंगी कोचिंग लेनी कारगर है लेकिन यह सच नहीं। इसमें सफलता खुद के स्तर पर सतत तैयारी, योजनाबद्ध मेहनत व समर्पण के साथ भी संभव है।

यूपीएससी का एग्जाम आप बिना महंगी कोचिंग के भी सफलतापूर्वक पास कर सकते हैं। बस इसकी तैयारी में आपका ज्ञान, अनुशासन और निरंतरता शामिल हो। तो जानिये सिलसिलेवार ढंग से बिना महंगी कोचिंग के कैसे यूपीएससी जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा पास की जा सकती है?

सावधानी से चुनें वैकल्पिक विषय

यूपीएससी का फाइनल एग्जाम पास करने में सबसे बड़ी भूमिका वैकल्पिक विषय में अच्छा करने की होती है। मगर सवाल यह है कि वैकल्पिक विषय पर अच्छा परिणाम आये, इसके लिए आपको क्या सावधानी बरतनी होगी? इसके लिए जरूरी है कि उसी विषय को अपने वैकल्पिक विषय के रूप में चुनें, जिसमें सचमुच आपकी गहरी रुचि हो। विभिन्न कोचिंग संस्थानों या विज्ञापनों के ऐसे सुझावों पर न जाएं कि फलां विषय ज्यादा स्कोरिंग होता है। जिस विषय को पढ़ने में आनंद आता है, वही आपकी रुचि का विषय हो सकता है। खाली समय में अगर लगे कि फलां सब्जेक्ट पढ़ा जाए, तो समझ लीजिए कि वह फलां सब्जेक्ट ही आपकी रुचि का विषय है। आप उसे यूपीएससी की फाइनल परीक्षा के लिए अपना वैकल्पिक विषय चुन सकते हैं। वहीं अपनी परीक्षा का माध्यम उसी भाषा को चुनें, जिस भाषा में आप सबसे सहजता से अभिव्यक्ति कर पाते हों। दरअसल जब बिना कोचिंग के यूपीएससी का एग्जाम क्लियर करना हो तो अपनी तैयारी के लिए किसी दूसरे पर कभी भी निर्भर न रहें। यह काम खुद करें। हां, किसी अनुभवी और गंभीर परीक्षार्थी से परामर्श जरूर हासिल कर सकते हैं, फिर चाहे वह खुद परीक्षा पास कर सका हो या रह गया हो। बिना कोचिंग अगर यूपीएससी जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा को क्रैक करना चाहते हैं, तो कुछ बातें जरूर करें। मसलन- सबसे पहले सिविल सेवा परीक्षा का सिलेबस, संघ लोक सेवा आयोग अथवा डिओपीटी की वेबसाइट से डाउनलोड कर लें। इस सिलेबस को प्रिंट करके अपने पास रख लें ? सिलेबस के अनुसार ही सौ फीसदी तैयारी करें। सेलेक्टिव पढ़ाई से काम नहीं चलता।

कंपल्सरी विषय की पूरी तैयारी

जो विषय कंपल्सरी हों, उनकी तैयारी पूरी करनी चाहिए। चाहे वे अच्छे लगें या न लगें, उनमें कुछ भी छोड़ना नहीं चाहिए। वैकल्किप विषय का स्तर, स्नातकोत्तर स्टैंडर्ड का होता है। कंपलसरी विषय का स्तर सामान्य होता है। इंटरमीडिएट और स्नातक स्तर की पुस्तकें अनिवार्य विषय के लिए पर्याप्त रहेंगी। जब से यूपीएससी परीक्षा का सी-सैट अनिवार्य हिस्सा हो गया है, तब से पढ़ाई का वोल्यूम काफी ज्यादा हो गया है। इसलिए बाजार में उपलब्ध अच्छी पुस्तकों से ही तैयारी करें।

पुराने प्रश्नपत्रों को करें हल

आजकल यूपीएससी और अन्य परीक्षाओं के प्रश्नपत्र तथा उत्तर अकसर तैयारी कराने वाली वेबसाइटों में उपलब्ध होते हैं। इसलिए कम से कम पांच साल के प्रश्नपत्रों को डाउनलोड कर लें और गहन अभ्यास करें। इसी तरह से पांच वर्षों की कटऑफ लिस्ट भी डाउनलोड कर लें, जिससे इस साल की लिस्ट क्या हो सकती है, इसका अंदाजा आपको हो जायेगा। पुराने प्रश्नपत्रों को हल करने से परीक्षा का पैटर्न पता चल जाता है और मालूम हो जाता है कि किस तरह के प्रश्न परीक्षा में आते हैं? पिछले पांच सालों के प्रश्नपत्रों को गहराई से समझें और उनका हर तरह से हल करना जान लें, तो मानिये कम से कम 20 फीसदी आने वाले सवालों की आपने तैयारी कर ली है। लेकिन उनका तरीका हूबहू नहीं होता।

पूरी तरह तैयार होकर पढ़ाई करें

तैयारी का अपना एक मनोविज्ञान भी होता है। यदि आप पूरी तरह से कपड़े पहनकर अपनी हर रोज की पढ़ाई इस तरह करते हैं, मानो परीक्षा हॉल में बैठकर एग्जाम दे रहे हों, तो आपकी पढ़ाई ज्यादा सीरियस और ज्यादा स्पष्ट होगी। इससे निर्धारित समय के अंदर प्रश्नपत्र हल करने की आपको आदत भी पड़ जायेगी और वाकई में परीक्षा वाले दिन आप पर परीक्षा का अतिरिक्त बोझ महसूस नहीं होगा। पूरी तरह से कपड़े पहनकर तैयारी करने का एक फायदा यह भी हो जाता है कि आप बिना अतिरिक्त प्रयास किये आसानी से प्रश्नपत्र हल कर सकेंगे और टाइम मैनेजमेंट पर भी आपका नियंत्रण रहेगा। हर दिन या हर दूसरे तीसरे दिन अपनी तैयारी का खुद से आकलन करते रहें और पुराने कटऑफ से मिलान करके अपनी प्रगति को एक स्तर प्रदान करें। लिखित परीक्षा के प्रश्नपत्र जो निबंधात्मक होते हैं, को बिना हड़बड़ी के हल करें। कोशिश करें कि तय समय सीमा के भीतर सभी प्रश्न हल कर सकें। बार बार ऐसा अभ्यास करने से समय प्रबंधन आपकी प्रैक्टिस का सहज हिस्सा हो जाता है और मुख्य परीक्षा में आप सभी प्रश्नों के लिए उचित व जरूरी समय दे सकेंगे। इस तरह अगर आप नियम से, गंभीरता से और अनुशासन के साथ तैयारी करेंगे तो बिना किसी भारी भरकम कोचिंग के भी यूपीएससी का एग्जाम क्लियर कर सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कीटों की प्रजातियों पर गहराता संकट

विजय गर्ग

धरती पर जितने भी जीव-जंतु हैं, उनमें सबसे बड़ा हिस्सा कीटों का है। लगभग एक करोड़ से अधिक अनुमानित प्रजातियों में से केवल एक छोटा हिस्सा ही वैज्ञानिक रूप से पहचाना जा सका है। कीट मनुष्य के सहायक हैं और ये हमारे खेतों, जंगलों, नदियों तथा घरों तक में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखते हैं। मधुमक्खियां और तितलियां परागण कर फसलों को फलने-फूलने में मदद करती हैं। चींटियां मिट्टी को हवादार और उर्वर बनाती हैं। कई कीट अपशिष्ट को विघटित कर स्वच्छता बनाए रखते हैं। जबकि अनगिनत कीट अन्य जीवों के भोजन स्रोत के रूप में कार्य करते हैं धरती पर जीवन की विविधता का सबसे बड़ा हिस्सा कीटों से ही बनता है। ये छोटे-छोटे जीव न केवल पारिस्थितिकी संतुलन की आधारशिला हैं, बल्कि मानव जीवन की खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता में भी विशेष योगदान देते हैं। अब यही आधारभूत स्तंभ ढहने लगे हैं।

अब इस हाल के अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि कि दुनिया भर भर में कीटों की संख्या घट रही है। केवल महाद्वीप ही नहीं, बल्कि वे द्वीप भी 61 461, संकट की गिरफ्त में आ चुके हैं, जहां प्रकृति अपेक्षाकृत संतुलित मानी जाती थी। फिजी द्वीपसमूह की चींटी प्रजातियों का जीनोम अध्ययन यह दर्शाता है कि इनकी लगभग 79 फीसद स्थानीय प्रजातियां गायब हो चुकी हैं। इसी तरह अमेरिका में तितलियों की आबादी दो दशकों में बाईस फीसद कम हुई है और की संख्या तीन धूराप के संरक्षित क्षेत्रों में भी उड़ने वाले कीटों में पचहत्तर फीसद ६ घट गई है। इन आंकड़ों को देख कर यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हम एक 'कीट प्रलय' की और बढ़ रहे हैं और परागक संकट में हैं। यह संकट केवल पारिस्थितिकी के के लिए ही नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए भी है।

हाल के वैज्ञानिक अध्ययनों से जो तस्वीर सामने आई है, वह किसी भी दृष्टि से सुखद नहीं कही जा सकती। शोधकर्ताओं का कहना है कि कीटों की आबादी में पिछले डेढ़ सौ वर्षों में भारी गिरावट दर्ज की गई है और अब यह संकट दूरस्थ द्वीपों तक फैल चुका है। जापान के ओकिनावा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कीट विज्ञानी इवन इकोनोमो ने फिजी द्वीपसमूह की चींटी प्रजातियों के जीनोम विश्लेषण आधार पर बताया है।

कि वहां की चींटियों की लगभग उनहत्तर फीसद आबादी लुप्त हो चुकी वर्ष 2000 से 2020 की अवधि में अमेरिका में तितलियों की आबादी बाईस फीसद कम हुई है। कम हुई है। 554 प्रजातियों में से एक तिहाई पचास लगभग प्रजातियों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई है, जिनमें कुछ न फीसद से अधिक की कमी आई। जर्मनी के संरक्षण क्षेत्र में उड़ने वाले कीटों की संख्या पिछले तीस वर्षों में लगभग पचहत्तर फीसद तक घट गई है। इसके अलावा, अमेरिका में पैंतालीस वर्षों में में कीटों के कुछ वर्गों (बीटल्स आदि) में करीब 83 फीसद की गिरावट आई है।

बीते बीस वर्षों में लगभग 72.4 फीसद कीटों की संख्या कम हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि दुनिया भर में कीट प्रजातियों की संख्या लाखों में घट चुकी है और बचे हुए कीटों में भी हर वर्ष करीब एक से ढाई फीसद तक की कमी की जा रही है। यह आंकड़ा केवल वैज्ञानिक चेतावनी नहीं, बल्कि पूरी खाद्य श्रृंखला और पारिस्थितिकी तंत्र पर मंडराते खतरे का संकेत है। कीटों के बिना फसल परागण की प्रक्रिया बाधित होगी। मिट्टी में पोषक तत्त्वों का पुनर्चक्रण प्रभावित होगा और पक्षियों से लेकर अनेक जीवों के लिए भोजन स्रोत कम पड़ जाएंगे कीटों के खत्म होने के पीछे कई कारक जिम्मेदार बताए जा रहे हैं। सबसे बड़ा कारण है आवास का खत्म होना। खेतों और जंगलों का अंधाधुंध दोहन, शहरीकरण का फैलाव और कीटों के

प्राकृतिक घास के मैदानों का संकुचन कीटों के जीवन क्षेत्र को नष्ट कर रहे हैं। इसके अलावा आधुनिक कृषि में रासायनिक कीटनाशकों का व्यापक उपयोग गैर-लक्षित कीटों को भी खत्म कर रहा है। जलवायु परिवर्तन ने भी भूमिका निभाई है। तापमान और वर्षा की बदलती स्थिति प्रजनन और जीवन-चक्र को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। प्रजातियों का का प्रसार भी स्थानीय कीटों पर दबाव बनाता है। उदाहरण के लिए, किसी द्वीप पर बाहरी चींटी या अन्य अन्य कीट पहुंचने पर स्वदेशी प्रजातियों के लिए जीवित रहना कठिन हो जाता है। फिजी द्वीपों का अध्ययन इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि वहां के कीट अपेक्षाकृत छोटे

आक्रामक भौगोलिक क्षेत्र और सीमित संसा पर निर्भर हैं। ₹किसी आबादी में आनुवांशिक विविधता घटती है, तो उनकी अनुकूलन क्षमता और रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। जीनोम विश्लेषण से स्पष्ट हुआ है कि चींटी प्रजातियों में में भारी कमी आ आ चुकी है। यह शोध बताता है कि कीट संकट केवल महाद्वीपीय भूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि दूरस्थ और अलग-थलग द्वीप भी । अब सुरक्षित नहीं रहे। भारत जैसे देश में भी इसका असर दिखाई देने लगा है। परागक मधुमक्खियों की संख्या में गिरावट के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कई अध्ययनों से पता चला है कि परागक कीटों की कमी से फसलों की उपज में दस से बीस फीसद तक नुकसान संभव है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में क नुकसान कीटनाशकों का अत्यधिक इस्तेमाल, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन ने इस संकट को और बढ़ा दिया है। यह स्थिति केवल जैव विविधता का नुकसान नहीं है, बल्कि सीधे तौर पर आर्थिक और सामाजिक संकट है। कीटों की सेवाओं को अनमोल माना गया है। क्योंकि वे कृषि, वानिकी और पारिस्थितिकी को निरंतर गति देते हैं। यदि यह तंत्र कमजोर होता है, तो खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

इस संकट से निपटने के लिए वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं ने कुछ स्पष्ट दिशा-निर्देश सुझाए हैं। सबसे पहले, प्राकृतिक आवासों की रक्षा करनी होगी और वनों, घास भूमि तथा दलदली क्षेत्रों को बचाना होगा। कृषि में एकीकृत कीट प्रबंधन और जैविक तरीकों का अधिकाधिक इस्तेमाल करना होगा, ताकि कीटनाशकों पर निर्भरता घट सके ताजा आंकड़े बताते हैं कि फिजी जैसे छोटे द्वीप हों अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित राष्ट्र, हर जगह कीटों की संख्या घट रही है। इसका सीधा असर फसलों की पैदावार, मिट्टी की गुणवत्ता, वायु और जल की स्वच्छता तथा संपूर्ण खाद्य श्रृंखला पर पड़ रहा है। यदि यह प्रवृत्ति इसी तरह जारी रही, तो अगले कुछ दशकों में कीटों की लाखों और प्रजातियां लुप्त हो जाएंगी और पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर पड़ जाएगा।

सामाजिक स्तर पर भी नागरिकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। घरों और बगीचों में स्थानीय प्रजातियों के फूलों के पौधे लगाना, रासायनिक छिड़काव कम करना और पर्यावरण अनुकूल आचरण छोटे-छोटे कदम हैं, लेकिन इनके व्यापक परिणाम हो सकते हैं। विद्यालयों और समुदायों में बच्चों को कीटों का महत्त्व सिखाना भी आवश्यक है। यह समझना होगा कि कीट केवल छोटे जीव नहीं, बल्कि पृथ्वी की पारिस्थितिकी के अहम स्तंभ हैं। उन्हें लुप्त होने से बचाने के लिए विज्ञान, नीति और समाज तीनों को मिल कर काम करना होगा यही हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है और यही भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारा कर्त्तव्य भी है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

दीवाली विशेष : समृद्ध राष्ट्र की कहानी कहते भारत के लक्ष्मी मंदिर

देशना जैन

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में लक्ष्मी मंदिरों का विशेष स्थान है। देवी लक्ष्मी, जो समृद्धि, धन, सौभाग्य और शक्ति की प्रतीक हैं, के ये मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र हैं, बल्कि स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने भी हैं। हिंदू धर्म में लक्ष्मी को विष्णु की अर्धांगिनी के रूप में पूजा जाता है, और ये मंदिर उनकी विभिन्न रूपों—जैसे महालक्ष्मी, पद्मावती, गजलक्ष्मी, अष्टलक्ष्मी आदि—को समर्पित हैं।

भारत के विभिन्न कोनों में फैले ये मंदिर, दक्षिण से उत्तर तक, द्रविड़, नागर और चालुक्य शैलियों का प्रदर्शन करते हैं। इनकी स्थापना प्राचीन काल से चली आ रही है, जहां राजाओं, संतों और भक्तों ने इन्हें समृद्ध किया। दिवाली और नवरात्रि जैसे त्योहारों पर ये मंदिर भक्तों से पट जाते हैं, जहां प्रार्थना और उत्सव एक साथ फलते-फूलते हैं। ये मंदिर न केवल आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण का प्रतीक भी हैं। ये मंदिर समृद्ध राष्ट्र की कहानी कहते है और हमें भारतीय संस्कृति की विविधता और दिव्य ऊर्जा से परिचित कराते हैं, जहां प्रत्येक पत्थर में भक्ति की गूंज सुनाई देती है।

महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

कोल्हापुर का महालक्ष्मी मंदिर, जिसे अंबाबाई मंदिर भी कहा जाता है, भारत के प्रमुख शक्ति पीठों में से एक है। कहा जाता है कि 7वीं शताब्दी में चालुक्य राजा कर्णदेव ने इसका निर्माण कराया, और बाद में शिलाहार राजा भोज द्वितीय ने इसका पुनर्निर्माण किया। देवी यहां महालक्ष्मी के रूप में विराजमान हैं — एक ऐसी माता जो केवल धन ही नहीं, बल्कि शक्ति और करुणा का भी आशीर्वाद देती हैं। काले पत्थरों से बना यह मंदिर हेमाडपंथी शैली का अद्भुत उदाहरण है। इसकी नक्काशियों में देवत्व की झलक मिलती है। पश्चिममुखी देवी की मूर्ति दुर्लभ है, जो "त्वरित वरदान" का प्रतीक मानी जाती है। नवरात्रि और किरणोत्सव के समय मंदिर में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है। कोल्हापुर का यह धाम आज भी भक्तों को आत्मविश्वास और समृद्धि की अनुभूति कराता है।

श्रीपुरम गोल्डन लक्ष्मी मंदिर, वेल्लोर (तमिलनाडु)

अगर स्वर्ण की चमक और भक्ति का मिलन देखना हो, तो वेल्लोर का श्रीपुरम लक्ष्मी नारायणी मंदिर जाना चाहिए। 2007 में बना यह मंदिर लगभग 1500 किलो सोने से मढ़ा गया है, जो इसे विश्व का सबसे बड़ा स्वर्ण मंदिर बनाता है। 40 एकड़ में फैला यह मंदिर 'श्री चक्र' के आकार में बना है, जहां भक्तों को स्वर्णजटित मूर्तियों और उद्यानों के बीच आत्मिक शांति का अनुभव होता है। यहां की लक्ष्मी नारायणी की मूर्ति न केवल दर्शनीय है, बल्कि श्रद्धा का केंद्र भी। यह मंदिर सोने की आभा से नहीं, बल्कि भक्तों की आस्था से भी जगमगाता है। यह आधुनिक भारत में भी आध्यात्मिकता की शक्ति का प्रमाण है।

पद्मावती मंदिर, तिरुचानूर (आंध्र प्रदेश)

तिरुपति की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है जब तक भक्त देवी पद्मावती के दर्शन न कर लें। कमल से उत्पन्न पद्मावती लक्ष्मी का ही अवतार मानी जाती हैं, जिनका विवाह स्वयं भगवान वेंकटेश्वर से हुआ था। यह मंदिर द्रविड़ शैली में बना है और इसका ऊंचा गोपुरम दूर से ही भक्तों को आकर्षित करता है। यहां की पद्मावती की स्वर्ण मूर्ति और परिसर का शांत वातावरण एक अलौकिक अनुभव देता है। तिरुपति से मात्र पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान वैवाहिक सुख और समृद्धि का आशीर्वाद पाने वालों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

अष्टलक्ष्मी मंदिर, चेन्नई (तमिलनाडु)

चेन्नई का बेसेंट नगर समुद्र तट न केवल सुंदर दृश्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहां स्थित अष्टलक्ष्मी मंदिर भी अद्भुत है। यह मंदिर देवी लक्ष्मी के आठ रूपों — धन, संतति, विजया, धैर्य, गज, विद्य, धान्य और ऐश्वर्य — को समर्पित है। समुद्र की लहरों के साथ जब आरती की ध्वनि गूंजती है, तो वातावरण में अपार सकारात्मक ऊर्जा फैल जाती है। यह मंदिर केवल भक्ति का स्थल नहीं, बल्कि जीवन के आठ मूल्यों की स्मृति दिलाता है।

महालक्ष्मी मंदिर, मुंबई (महाराष्ट्र)

मुंबई का महालक्ष्मी मंदिर अरब सागर के किनारे स्थित है, और शहर के व्यस्त जीवन में यह स्थान भक्ति की शरणस्थली जैसा है। कहा जाता है कि जब ब्रिटिश काल में समुद्र से तीन मूर्तियाँ निकलीं, तो उनके लिए यह मंदिर बनाया गया। यहां देवी महालक्ष्मी के साथ महाकाली और महासरस्वती भी विराजती हैं। दीपावली और नवरात्रि पर यहां का दृश्य अद्भुत होता है — फूलों, दीपों और आरती की ध्वनियों से पूरा वातावरण दैवीय बन जाता है। यह मंदिर बताता है कि भक्ति, चाहे महानगर की भीड़ में क्यों न हो, अपना मार्ग खोज ही लेती है।

लक्ष्मी देवी मंदिर, डोड्डुगद्दावल्ली (कर्नाटक)

कर्नाटक के हासन जिले में स्थित यह मंदिर 1113 ईस्वी में बना था और यह होयसल स्थापत्य का दुर्लभ उदाहरण है। चारों दिशाओं में गर्भगृह वाला यह 'चतुश्कुट' मंदिर अपने आप में अनूठा है। मुख्य देवी लक्ष्मी के साथ यहां काली, विष्णु और शिव की उपासना भी होती है — यह इस भूमि की धार्मिक समरसता का प्रतीक है। नवरात्रि के समय यहां का वातावरण संगीत और श्रद्धा से भर जाता है।

अष्टलक्ष्मी मंदिर, हैदराबाद (तेलंगाना)

चेन्नई के मंदिर से प्रेरित यह अष्टलक्ष्मी मंदिर हैदराबाद में 1996 में बना। इसकी भव्य गोपुरम और देवी के आठ स्वरूपों की मूर्तियाँ इसे विशेष बनाती हैं। यहां की वास्तुकला दक्षिण भारत की समृद्ध परंपरा का दर्पण है।

वरलक्ष्मी मंदिर, मंगलगिरि (आंध्र प्रदेश)

मंगलगिरि का यह मंदिर देवी लक्ष्मी और भगवान नरसिंह के संयुक्त रूप को समर्पित है। यहां की "पानक अभिषेक" परंपरा प्रसिद्ध है — जिसमें भगवान को गुड़ का रस अर्पित किया जाता है। ब्रह्मोत्सव के समय यहां श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है।

गजलक्ष्मी मंदिर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महाकाल की नगरी उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर स्थित गजलक्ष्मी मंदिर देवी लक्ष्मी के गजलक्ष्मी रूप को समर्पित है। इस रूप में देवी हाथी पर विराजमान रहती हैं। जो ऐश्वर्य और सौभाग्य का प्रतीक है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में हुआ था और गुप्त व परमार शासकों ने इसका विस्तार कराया। नागर शैली में बने इस मंदिर का गर्भगृह सरल होते हुए भी भव्य है। दीपावली और नवरात्रि पर यहां विशेष पूजा-अभिषेक होते हैं। गजलक्ष्मी मंदिर उज्जैन की आध्यात्मिक पहचान है, जो भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि का आशीर्वाद देता है। महाकालेश्वर और गजलक्ष्मी — दोनों मिलकर उज्जैन को पूर्णता प्रदान करते हैं।

महालक्ष्मी मंदिर, रतलाम (मध्य प्रदेश)

रतलाम का महालक्ष्मी मंदिर अपनी अनोखी परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। दीपावली के समय भक्त अपने सोने-चांदी के आभूषण और नकदी देवी को अर्पित करते हैं। लाखों की यह सजावट न केवल भव्यता का प्रदर्शन है, बल्कि विश्वास का उत्सव भी है। यह परंपरा दर्शाती है कि सच्ची लक्ष्मी वही है, जो लोककल्याण में प्रयुक्त हो। नवरात्रि और दीपावली पर यहां का दृश्य मन मोह लेता है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर, ओरछा (मध्य प्रदेश)

ओरछा का यह मंदिर अपने स्थापत्य और रहस्यमयी इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। बुंदेला राजा बिर सिंह देव ने 1622 में इसे बनवाया था। मंदिर किले जैसी संरचना में बना है और इसकी दीवारों पर सुंदर भित्तिचित्र अंकित हैं। दीपावली की रात जब यहां आरती होती है, तो पूरा ओर्चा लोककला और भक्ति का जीवंत रूप बन जाता है।

लक्ष्मी मंदिर, खजुराहो (मध्य प्रदेश)

खजुराहो समूह के मंदिरों में यह छोटा-सा मंदिर भी अपनी कला और सौंदर्य के लिए अद्वितीय है। 10वीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर देवी लक्ष्मी को समर्पित है। इसकी भित्तियों पर उकेरी गई नक्काशियाँ प्राचीन भारतीय कला की सजीव झलक हैं। यहां के हर पत्थर में चंदेल युग की दिव्यता और शिल्पकार की भावना बसती है।

भारत के ये लक्ष्मी मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं — वे हमारी आस्था, हमारी कला और हमारी संस्कृति के साक्षात प्रतीक हैं। कहीं स्वर्ण से झिलमिलाते, तो कहीं पत्थरों में गढ़े, ये मंदिर हमें याद दिलाते हैं कि सच्ची लक्ष्मी केवल धन में नहीं, बल्कि श्रद्धा, परिश्रम और करुणा में बसती है। दीपावली के इस पावन अवसर पर जब घर-घर दीप जलेंगे, तो आइए इन मंदिरों की स्मृति में हम भी अपने भीतर एक दीप जलाएं — भक्ति का, करुणा का और समृद्धि का।

सुशिक्षित केरल 'ड्रग्स की दलदल में कैसे जकड़ा गया?

रामस्वरूप रावतसरे

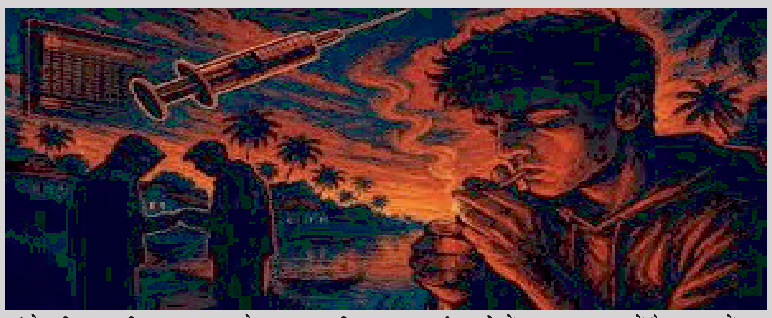

केरल का नाम आते ही जेहन में सबसे पहले शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र आते हैं क्योंकि वामपंथी मीडिया ने इन दोनों को हमेशा आदर्श की तरह पेश किया है। लेकिन क्या अब केरल वाकई एक आदर्श राज्य है? असल में सिर्फ पर्दे के पीछे ही नहीं खुले तौर पर भी केरल ड्रग्स के संकट से जूझ रहा है। शहरों से लेकर गाँवों तक केरल का कोई कोना इस समस्या से अछूता नहीं है। ड्रग्स के कारण सैकड़ों जिंदगियाँ तबाह हो चुकी हैं और अनगिनत परिवार टूट गए हैं।

अब तक पंजाब को भारत का 'ड्रग्स का गढ़' माना जाता था लेकिन ताजा रिपोर्ट्स केरल की एक भयावह तस्वीर पेश करती हैं। सिर्फ साल 2024 में ही राज्य में 27,700 मादक पदार्थों से जुड़े मामले दर्ज किए गए, जो पंजाब से तीन गुना ज्यादा हैं। पंजाब में इसी अवधि में सिर्फ 9,000 के करीब केस दर्ज हुए। आबादी के लिहाज से देखें तो केरल में हर एक लाख लोगों पर मादक पदार्थों से जुड़े 78 केस सामने आए हैं और यह दर पूरे देश में सबसे अधिक है। राज्य के सभी 14 जिले इस संकट से प्रभावित हैं। 2025 के शुरुआती दो महीनों में ही केरल में 30 हत्याएँ हुईं, जिनमें से आधी ड्रग्स से जुड़ी थीं।

राज्यसभा में 12 मार्च 2025 को पेश किए गए आँकड़ों के अनुसार पिछले तीन सालों से एनडीपीएस एक्ट के तहत सबसे अधिक मामले केरल में ही दर्ज हो रहे हैं। साल 2022 में 26,918 केस, 2023 में 30,715 केस और 2024 में 27,701 केस दर्ज हुए। इसकी तुलना में पंजाब में यही आँकड़े 12,423, 11,564 और 9,025 रहे। महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में भी मामले इतने नहीं हैं। यह साफ इशारा करता है कि नशे से जुड़े अपराधों के मामले में केरल अब 'हॉटस्पॉट' पंजाब से कहीं आगे निकल चुका है।

जानकारी के अनुसार सन 1971 में अमेरिका के हाई स्कूल में पढ़ने वाले 5 दोस्तों ने 4 बजकर 20 मिनट का समय अपने 'गांजा सेशन' के कोड के तौर पर तय किया था। आधी सदी से भी ज्यादा वक्त गुजरने के बाद यही '420 कल्चर' अब दुनिया भर के युवाओं में फैल चुका है और केरल की नई पीढ़ी भी इससे अछूती नहीं रही। यहाँ के युवाओं के बीच यह '420 कल्चर' अब एक तरह के 'बगावत के प्रतीक' के रूप में देखा जा रहा है।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, केरल के युवाओं के सोशल मीडिया अकाउंट्स पर '420' शब्द वाले हैशटैग और स्लैंग खुलेआम देखे जा सकते हैं। इंस्टाग्राम, स्नैपचौट और फेसबुक पर '420' से जुड़ी मीम्स और वीडियो यह दर्शाते हैं कि किस तरह नशे की संस्कृति को अब कूल बना दिया गया है और यह युवाओं के बीच लोकप्रिय होता जा रहा है। गांजा को अक्सर एक 'हल्का नशा' मान लिया जाता है। लेकिन जमीनी हकीकत देखने पर समझ आता है कि यह नशे की लत को बढ़ाता ही जाता है। कई किशोर नशेड़ियों ने अधिकारियों को दिए बयानों में बताया कि उनका नशे की लत का सफर स्कूल के दिनों में दोस्तों के साथ गांजा पीने से शुरू हुआ और फिर धीरे-धीरे यह एमडीएमए, कोकीन और मेथ जैसे खतरनाक ड्रग्स तक पहुँच गया।

एक सरकारी अध्ययन में पाया गया कि केरल के 10वीं कक्षा के 37 प्रतिशत और 8वीं कक्षा के करीब 23 प्रतिशत छात्रों ने कभी न कभी कोई अवैध नशा या इनहेलेंट आजमाया है। इनमें सबसे अधिक प्रचलित गांजा ही है। स्थानीय मीडिया ने इस संकट को 'उड़ता केरल' नाम दिया है, ठीक उसी तरह जैसे 'उड़ता पंजाब' फिल्म ने पंजाब के नशे की हकीकत उजागर की थी। अधिकतर मामलों में केरल के युवाओं की नशे की शुरुआत गांजा से होती है लेकिन अब यह आसानी से उपलब्ध भी है। राज्य की पुलिस और एक्साइज विभाग के मुताबिक, आज केरल के बाजार में 'हाइड्रोपोनिक गांजा' नाम की एक बेहद शक्तिशाली किस्म फैली हुई है जिसमें टीएचसी का स्तर 40 प्रतिशत से भी अधिक होता है। यह गांजा खेतों में नहीं बल्कि लैब में तैयार किया जाता है और अधिकतर दक्षिण-पश्चिम एशिया से तस्करी करके लाया जाता है। 2022 में ऐसे गांजे की तस्करी लगभग ना के बराबर थी, लेकिन 2024-25 में ही अधिकारियों ने 89 किलो से अधिक गांजा एयरपोर्ट्स पर पकड़ा। 2025 के शुरुआती 7 महीनों में यह जब्ती 129.7 किलो तक पहुँच गई है।

जानकारों की माने तो केरल में नशे की समस्या कोई रातों-रात नहीं आई। इसके पीछे कई गहरे और आपस में जुड़े कारण हैं, जिन्होंने इस राज्य को नशे की लत के प्रति बेहद संवेदनशील बना दिया है। भौगोलिक स्थिति यहाँ वरदान भी है और अभिशाप भी। केरल का 590 किलोमीटर लंबा समुद्र तट अरब सागर से जुड़ा है। यह जहाँ अंतरराष्ट्रीय व्यापार को आसान बनाता है, वहीं दूसरी ओर मादक पदार्थों की तस्करी के लिए एक खुला दरवाजा भी बन गया है। पिछले कुछ वर्षों में तस्करों ने केरल के तटवर्ती अंतरराष्ट्रीय जहाज मार्गों का खुलकर फायदा उठाया है। इसके अलावा, राज्य की नजदीकी बड़े ट्रांजिट हब्स जैसे बेंगलुरु और चेन्नई से होने के कारण यहाँ जमीन के रास्ते बनी नशे की सप्लाई चेन और भी मजबूत हो गई है।

कुछ मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, केरल में अब नशे की होम डिलीवरी उसी तरह हो रही है जैसे पिज्जा ऑर्डर किया जाता है। बाइक पर घूमने वाले डिलीवरी एजेंट्स ग्राहकों के दरवाजे तक नशा पहुँचा रहे हैं। कई पेडलर (तस्कर) सुपरबाइक्स पर नकली नंबर प्लेट लगाकर घूमते हैं और शक से बचने के लिए खुद को 'युवा जोड़ों' के रूप में पेश करते हैं। इस 'ई-कॉमर्स स्टाइल' नशे के धंधे ने पुलिस की नींद उड़ा दी है क्योंकि उन्हें लगातार अपनी जाँच और ट्रैकिंग तकनीक को अपडेट करना पड़ रहा है ताकि इन स्मार्ट तस्करों से निपटा जा सके। सप्लाई चेन के अलावा, केरल के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं ने भी नशे के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की है।

जानकारी के अनुसार केरल में बेरोजगारी भी इस समस्या को बढ़ाने वाला बड़ा कारण है। राज्य में हर साल हजारों ग्रेजुएट निकलते हैं लेकिन उनके सपनों के मुकाबले अवसर बहुत कम हैं। कई युवा बिना नौकरी के खाली बैठे रहते हैं और इसी खालीपन को नशा भर देता है। धीरे-धीरे कई लोग खुद नशा बेचने लगते हैं ताकि कुछ कमाई कर सकें। इसके अलावा, केरल से बड़ी संख्या में लोग विदेशों खासकर खाड़ी देशों में काम करने जाते हैं। उनके बच्चे यहाँ अकेले रह जाते हैं। माँ-बाप की गैरमौजूदगी में बच्चों को वही भावनात्मक सहारा और मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। ऐसे किशोर अक्सर भावनात्मक खालीपन या विद्रोह के चलते नशे की तरफ मुड़ जाते हैं।

खुफिया एजेंसियों के अनुसार, भारत के कुल नशीले पदार्थों के व्यापार का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान से जुड़ी डी-कंपनी (दाऊद इब्राहिम सिंडिकेट) के नियंत्रण में है, जो परंपरागत रूप से उत्तर भारत के रास्ते ड्रग्स की सप्लाई करती थी। लेकिन अब केरल इस नेटवर्क का नया ठिकाना बन चुका है। 2024 से राज्य सरकार ने नशे के खिलाफ अपने अभियानों को तेज किया है। 'ऑपरेशन डी-हंट' के तहत विशेष दस्तों ने अचानक छापेमारी अभियान चलाए। बताया जाता है कि 22 फरवरी से 1 मार्च 2025 के बीच पुलिस ने 17,256 संदिग्धों की जाँच की, 2,762 एनडीपीएस मामले दर्ज किए और 2,854 लोगों को गिरफ्तार किया। इसी के दौरान, एजेंसियों ने 1.3 किलो एमडीएमए, 153.5 किलो गांजा, और थोड़ी मात्रा में हेरोइन व हैश ऑयल जब्त किया। इसके बाद 11 सितंबर 2025 को पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर छापेमारी की गई, जिसमें 146 गिरफ्तारियाँ और 140 नए केस दर्ज हुए। एमडीएमए और गांजा दोनों बरामद हुए। प्रमुख कार्रवाइयों में अगस्त 2024 में हैदराबाद में एक फार्मा यूनिट के नाम पर चल रही एमडीएमए लैब का भंडाफोड़ और सितंबर 2024 में ओडिशा में गांजा की खेती चला रहे एक केरल निवासी की गिरफ्तारी शामिल थी।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आँकड़ों के मुताबिक, 2022 में केरल में एनडीपीएस कानून के तहत हुई कुल गिरफ्तारियों में से करीब 93.7 प्रतिशत मामले 'निजी इस्तेमाल' के थे। लगभग 26,600 गिरफ्तारियों में से केवल 1,660 तस्कर थे जबकि 24,959 लोग 'कम मात्रा' में ड्रग्स रखने वाले उपभोक्ता थे। नशे के नेटवर्क इस कानून का फायदा उठाते हैं और वे माल को 'व्यावसायिक मात्रा' की सीमा से कम-कम बाँट देते हैं (जैसे 0.5 ग्राम एमडीएमए से कम या 1 किलो गांजा से कम) ताकि गिरफ्तारी होने पर जमानत मिल सके और सजा से बचा जा सके। पुलिस अब फॉलो-अप छापों के जरिए इन छोटी मात्राओं को जोड़कर बड़े केस तैयार कर रही है और सरकार से 'कम मात्रा' की परिभाषा पर पुनर्विचार की माँग कर रही है।

जानकारों के अनुसार सकारात्मक बात यह है कि समाज और धार्मिक संगठन भी अब इस संकट से निपटने के लिए आगे आ रहे हैं। नशामुक्ति केंद्रों में अब तक एक लाख से अधिक बाह्य रोगी और हजारों भर्ती मरीजों का इलाज किया जा चुका है। यह एक अच्छी शुरुआत है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि राज्य में नशे की समस्या नियंत्रण में आ रही है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि केरल की नशे की समस्या से निपटने के लिए केवल पुलिसिया कार्रवाई काफी नहीं है। विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं की राय भी यही है कि अब एक सामूहिक प्रयास की जरूरत है। इसका मुख्य उद्देश्य रोकथाम और जागरूकता पर होना चाहिए। क्योंकि अब स्कूल और कॉलेज नशा तस्करों के निशाने पर हैं, इसलिए शैक्षणिक संस्थानों में संगठित नशा-रोधी शिक्षा कार्यक्रम और छात्रों द्वारा संचालित 'पीयर-एजुकेशन' मॉडल जरूरी हैं ताकि बच्चे खुद जागरूक होकर साथियों को बचा सकें।

सोशल मीडिया भी युवाओं को नशे से दूर रखने में एक बड़ी भूमिका निभा सकता है। राज्य में अब शिक्षकों और अभिभावकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि वे नशे की लत के शुरुआती संकेत पहचान सकें। यह शुरुआती रोकथाम किसी भी तरह की लत को बढ़ने से रोकने में मदद करती है। राज्य सरकार ने स्कूलों में 'रैंडम ड्रग टेस्टिंग' का प्रस्ताव भी रखा है। यह भले विवादित हो लेकिन यह दिखाता है कि अब खुद सरकार भी मानती है कि नशा शिक्षा संस्थानों के भीतर तक घुस चुका है।

प्रवर्तन एजेंसियाँ अब खासकर एमडीएमए और मेथामफेटामाइन जैसे सिंथेटिक ड्रग्स और बड़े सप्लाई नेटवर्क पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। हालाँकि, हैरानी की बात यह है कि 590 किलोमीटर लंबे तट की निगरानी के लिए फिलहाल सिर्फ एक कोस्ट गार्ड पोत ही उपलब्ध है। राज्य अब स्कैनर, ड्रोन और साइबर मॉनिटरिंग सिस्टम में निवेश कर रहा है ताकि तस्करी और डार्कनेट पर हो रही डील्स पर नजर रखी जा सके।

चिंता की बात यह है कि राज्य में नशामुक्ति की क्षमता माँग के अनुपात में बहुत कम है। सरकारी और निजी साझेदारी के तहत अब तक करीब 1.47 लाख लोगों का इलाज हुआ है लेकिन मानसिक स्वास्थ्य सहायता और पुनर्वास की व्यवस्था अभी भी कमजोर बताई जा रही है। जब तक रोकथाम, शिक्षा और सामाजिक हस्तक्षेप की गति तेज नहीं होती, तब तक 'नशामुक्त केरल' का सपना सिर्फ एक नारा बनकर रह जाएगा।

भारत के डेटा पर विदेशी पहरे: यह कैसी आज़ादी?

भारत का डिजिटल परिदृश्य आज एक दोमुंही तलवार सा है। एक ओर, स्मार्टफोन क्रांति ने करोड़ों लोगों को इंटरनेट की सैर कराई, आधार ने डिजिटल पहचान को अटल बनाया, और यूपीआई ने लेन-देन को इतना सरल किया कि उंगलियों के इशारे पर अर्थव्यवस्था नाच उठी। मगर दूसरी ओर, यह डिजिटल उफान विदेशी दिग्गजों—गूगल, फेसबुक, अमेज़न, माइक्रोसॉफ्ट—के लिए डेटा की खुली लूट का अखाड़ा बन गया है। यह 'डेटा कॉलोनियलिज़्म' पुराने औपनिवेशिक युग की छाया है, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के संसाधनों को लूटती थी। आज ये कंपनियां भारतीय यूजर्स के डेटा को कच्चे माल की तरह खनन कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (यूएनसीटीएडी, 2021) की रिपोर्ट चेताती है कि विकासशील देशों से निकलने वाले 80% से अधिक डेटा विकसित देशों के सर्वरों में कैद हो रहा है, जो भारत जैसे देशों के लिए डिजिटल गुलामी का खतरा बन रहा है।

इस लूट की जड़ें गहरे पैठ चुकी हैं। हर भारतीय जो फेसबुक पर पोस्ट डालता है, गूगल पर सर्च करता है, या अपनी लोकेशन साझा करता है, उसका हर क्लिक, हर पसंद, हर कदम डेटा के विशाल भंवर में समा जाता है। यह डेटा केवल विज्ञापनों की भट्टी में नहीं झोंका जाता, बल्कि एल्गोरिदम को प्रशिक्षित करने, बाजार की भविष्यवाणी करने, और यहाँ तक कि राजनीतिक हवाओं को मोड़ने में भी इस्तेमाल होता है। 2018 का कैम्ब्रिज एनालिटिका कांड इसका ज्वलंत सबूत है, जब फेसबुक के 5 करोड़ यूजर्स—लाखों भारतीयों समेत—का डेटा बिना सहमति चुराकर अमेरिकी चुनावों में हथियार बनाया गया। 2020 का पेगासस स्पाइवेयर घोटाला और भी भयावह था, जब इजरायली एनएसओ ग्रुप के सॉफ्टवेयर ने भारतीय नेताओं, पत्रकारों और नागरिकों के फोन हैक किए। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ, 2022) की रिपोर्ट 'डेटा कोलोनियलिज़्म इन द ग्लोबल साउथ' में चेतावनी दी गई है कि एशियाई देशों का डेटा बहुराष्ट्रीय कंपनियों की 'एक्सट्रैक्टिव इकोनॉमी' का शिकार बन रहा है—डेटा लूटा जा रहा है, मगर उसका मूल्य भारत को नहीं मिल रहा।

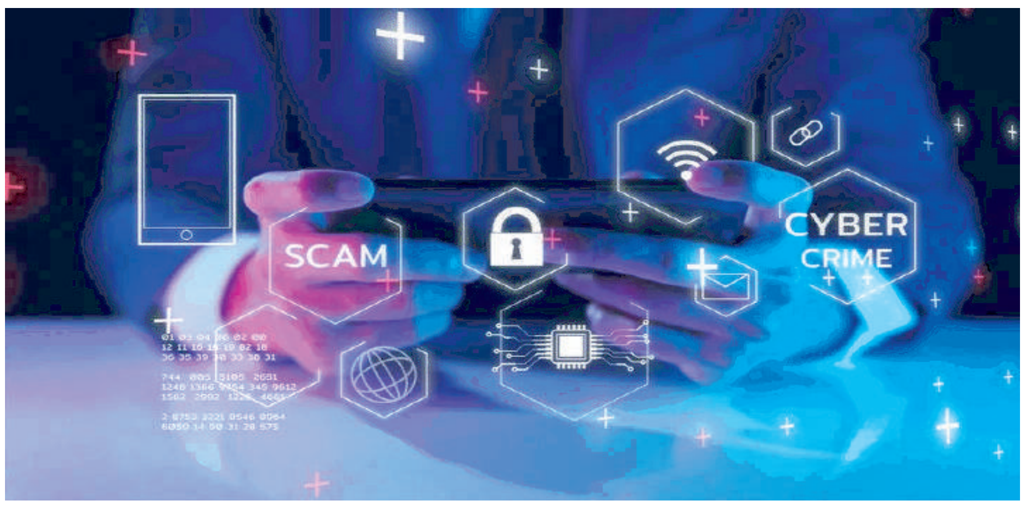

भारत का डिजिटल परिदृश्य आर्थिक लूट का नया रणक्षेत्र बन चुका है। 85 करोड़ से अधिक इंटरनेट यूजर्स के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा डिजिटल बाजार है, मगर इसका 60-70% डेटा अमेरिका और यूरोप के सर्वरों—एडब्ल्यूएस, गूगल क्लाउड—के हवाले है। स्टैनफर्ड डिजिटल इकॉनमी लैब (2021) के मुताबिक, 2025 तक वैश्विक डेटा अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर की हो सकती है, लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों को इसका महज 10-15% ही नसीब होगा। गूगल हर साल भारत से अरबों डॉलर की कमाई करता है, मगर टैक्स के नाम पर चंद टुकड़े देता है। 2017 में यूरोप में गूगल पर 2.4 बिलियन यूरो (2 बिलियन पाउंड) का एंटीट्रस्ट जुर्माना लगा था, लेकिन भारत में ऐसी कार्रवाई नाकाफी रही। डेटा लोकलाइजेशन की कमजोर नीतियाँ इसकी जड़ में हैं। 2019 के डेटा प्रोटेक्शन बिल में लोकलाइजेशन का वादा था, लेकिन 2023 का डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट (डीपीडीपी) इसे वैकल्पिक बनाकर विदेशी कंपनियों को डेटा लूट की खुली छूट दे गया। यह न केवल आर्थिक चोट है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी सवाल खड़े करता है—2021 में टिकटॉक जैसे चीनी ऐप्स के डेटा बीजिंग भेजने का खुलासा इसका सबूत है।

सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर यह डिजिटल उपनिवेशवाद भारत को फिर से गढ़ रहा है। विदेशी एल्गोरिदम हमारी सोच को बांध रहे हैं। व्हाट्सएप पर फेक न्यूज की बाढ़ ने 2018-19 में लिंचिंग की आग भड़काई, जैसा एमनेस्टी इंटरनेशनल ने रेखांकित किया। गूगल सर्च में 'भारतीय' टाइप करें, तो नकारात्मक स्टिरियोटाइप्स की बौछार होती है। प्रोफेसर निकलास थॉर्नबोरो (यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न ओंटारियो, 2017) की 'डेटा कॉलोनियलिज़्म' अवधारणा इसे नया साम्राज्यवाद बताती है, जहां डेटा 'नया तेल' है, मगर इसका मालिक कोई और। आधार डेटा का दुरुपयोग इसका ज्वलंत उदाहरण है—2018 में खबर आई कि ₹500 में 10 लाख आधार रिकॉड्र्स तक अनधिकृत पहुँच बिक रही थी। यूआईडीएआई के दावों के बावजूद, सुप्रीम कोर्ट ने आधार को सीमित किया। कोविड-19 के दौरान आरोग्य सेतु ऐप ने भी डेटा गोपनीयता पर सवाल उठाए, जब इसका डेटा विदेशी सर्वरों पर पाया गया। यह डिजिटल गुलामी भारत की आत्मनिर्भरता को चुनौती है।

डिजिटल लूट के इस अंधेरे में आशा की किरणें भी झिलमिलाती हैं। भारत सरकार ने डेटा सॉवरेन्टी की दिशा में कदम उठाए हैं—2022 में RBI ने पेमेंट डेटा को भारत में रखने का फरमान सुनाया, और DPDP एक्ट ने सहमति-आधारित डेटा प्रोसेसिंग को अनिवार्य किया। मगर इन कदमों का कार्यान्वयन लचर है। विशेषज्ञ चेताते हैं कि सख्त डेटा लोकलाइजेशन नीतियाँ, माईटी (मिनिस्ट्री ऑफ़ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी) जैसे स्वदेशी क्लाउड समाधान, और मजबूत एआई शासन के बिना डिजिटल स्वायत्तता सपना ही रहेगा।

यूरोपीय संघ (ईयू) का जनरल डाटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन (जीडीपीआर) मॉडल प्रेरणा देता है, जहां डेटा उल्लंघन पर 4% वैश्विक टर्नओवर का जुर्माना है। जियो और पेटीएम जैसे स्टार्टअप्स ने स्वदेशी डेटा सेंटर बनाकर हौसला दिखाया, लेकिन विदेशी दिग्गजों का वर्चस्व अटल है। युनेस्को की 2023 रिपोर्ट डिजिटल कोलोनियलिज़्म एंड कल्चरल सॉवरेन्टी ' की सलाह है कि वैश्विक दक्षिण के देश डेटा को 'साझा विरासत' मानें और उस पर सामूहिक नियंत्रण स्थापित करें।

यह लड़ाई अब केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक है। डेटा कॉलोनियलिज़्म को रोकने के लिए जागरूकता, कठोर कानून और तकनीकी स्वावलंबन जरूरी हैं। यदि भारत अपने डेटा की बागडोर नहीं संभालेगा, तो हमारी पहचान, अर्थव्यवस्था और लोकतंत्र विदेशी सर्वरों की कठपुतली बन जाएंगे। विश्व बैंक की 2024 रिपोर्ट का अनुमान है कि डेटा सॉवरेन्टी अपनाने वाले देशों की जीडीपी 2-3% बढ़ सकती है। यह भारत के लिए सुनहरा अवसर है। समय आ गया है कि हम डिजिटल आजादी की जंग लड़ें, जैसी स्वतंत्रता संग्राम में लड़ी थी। वरना इतिहास फिर दोहराएगा—इस बार डिजिटल सर्वरों की जंजीरों में।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बिना रॉयल्टी जंगल की मिट्टी की खुली लूट व बेधड़क पेड़ कटाई : राउरकेला रेलवे प्रोजेक्ट में सैकड़ों ट्रिप अवैध आपूर्ति, एनसीपी प्रदेश अध्यक्ष की सरकारी अधिकारीयों व कर्मचारियों की मिलीभगत पर चिंता

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला, (विशेष संवाददाता): ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में रेलवे के महत्वाकांक्षी ट्रैक निर्माण प्रोजेक्ट के नाम पर जंगलों की मिट्टी की खुलेआम लूट मच रही है। कांसबहाल रेलवे साइडिंग के निकटवर्ती क्षेत्र में बिना किसी रॉयल्टी या अनुमति के सैकड़ों ट्रिप मिट्टी की अवैध आपूर्ति का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ओडिशा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने इसे 'सरकारी अधिकारीयों व कर्मचारियों की मिलीभगत का काला कारनामा' करार देते हुए उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। इस घोटाले से न केवल राज्य का राजस्व करोड़ों में चपत खा रहा है, बल्कि पर्यावरण को अपूरणीय क्षति भी पहुंच रही है—जहां सैकड़ों परिपक्व पेड़ काटे जा चुके हैं और जंगल विभाग की भूमि पर पहाड़ों को चीरकर मिट्टी उजाड़ी जा रही है।

घटनाक्रमः अवैध कार्रवाई का काला अध्याय
यह मामला 2025 की शुरुआत से ही सुर्खियां बटोर रहा है जब विभिन्न निर्माण हेतु राजगंगपुर तहसील के अन्तर्गत कांशबहाल क्षेत्र से पत्थर खनन के साथ अवैध रूप से पहाड़ काटकर मिट्टी आपूर्ति की गई मामला तब गंभीर हुआ जब रेल प्रकल्प के लिए कार्यस्थल से मात्र तीन किलोमीटर दूर जंगल विभाग की संरक्षित भूमि पर अवैध खुदाई का सिलसिला जोरदार तरीके से जारी हो गया। डॉ. यादव के अनुसार, ट्रैक्टर, हाइवा और डंपरों के काफिले दिन-रात जंगल के पहाड़ों को काटकर मिट्टी लोड कर रहे हैं, जो सीधे रेलवे साइट पर पहुंचाई जा रही है।

समयरेखा इस प्रकार है
अप्रैल 2025ः बेधड़क बालूरघाट से बिना नियम व बिना ट्रांजिट परमिट के लाखों टन रेत विभिन्न घाटों से विभिन्न गंतव्य तक पहुंच गए1 टोलबूथों की जांच करने पर इस रहस्य से पर्दा उठ सकता है1
जून-जुलाई 2025ः रेलवे साइट पर मिट्टी की मांग बढ़ी। जंगल विभाग की 200 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर अवैध खुदाई शुरू, जहां सैकड़ों ट्रिप (प्रति ट्रिप औसतन 10-15 क्यूबिक मीटर मिट्टी) रोजाना सप्लाई हो रही है। अनुमानित आंकड़ों के मुताबिक, अब तक 50,000 क्यूबिक मीटर से अधिक मिट्टी अवैध रूप से हटाई जा चुकी है।
सितंबर 2025ः एनसीपी प्रदेश अध्यक्ष डॉ. यादव को वीभिन्न सूत्रों व स्थानीय लोगों से इस बात की जानकारी मिली व आरोप लगाया गया कि यह कार्य बिना रॉयल्टी व बिना किसी अनुमति के हो रहा है, जिससे राज्य को प्रति क्यूबिक मीटर 50-100 रुपये की हानि हो रही है—कुल मिलाकर 25-50 लाख रुपये का राजस्व घाटा एवं जंगल नियमावली की धज्जियाँ उड़ी वह अलग
अक्टूबर 2025 (वर्तमान)ः अवैध सप्लाई जारी। राउरकेला पुलिस ने जून 2020 में इसी तरह के अवैध रेत सैया पर कार्रवाई का दावा किया था, लेकिन राउरकेला व सुंदरगढ़ पुलिस द्वारा फिर वही ढुल्लमुल रवैया।

प्रभावशाली आंकड़े के अनुसार पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त प्रहार - यह अवैध कार्रवाई केवल स्थानीय स्तर की समस्या नहीं, बल्कि ओडिशा के समग्र पर्यावरणीय संकट का प्रतीक है। सुंदरगढ़ जिले, जो राज्य के 30% से अधिक लौह अयस्क भंडार का घर है, पहले से ही अवैध खनन से जूझ रहा है। यहां कुछ चौंकाने वाले आंकड़े हैं जो इस लूट के पैमाने को उजागर करते हैं- पर्यावरणीय क्षति के अंतर्गत अवैध मिट्टी खुदाई से जंगल क्षेत्र में 15-20% मृदा क्षरण हुआ है, जिससे मिट्टी में भारी धातुओं (जैसे एल्यूमीनियम, क्रोमियम और कैडमियम) की सांद्रता 2-3 गुना बढ़ गई है। ओडिशा में खनन गतिविधियों से प्रति वर्ष 500 हेक्टेयर से अधिक वन भूमि नष्ट हो रही है, जिसमें सुंदरगढ़ का योगदान 40% है। इस मामले में कटे पेड़ों की संख्या 500 से अधिक अनुमानित है, जो कार्बन अवशोषण को 20-25 टन प्रति वर्ष कम कर देगा—जंगल के फेफड़ों पर सीधा वार।

आर्थिक नुकसान को आंके तो बिना रॉयल्टी की यह लूट राज्य के खनन राजस्व को 200 करोड़ रुपये सालाना प्रभावित कर रही है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, रेलवे प्रोजेक्ट्स में अवैध मिट्टी निकासी से ओडिशा को 50 करोड़ का अतिरिक्त घाटा हुआ था। वर्तमान मामले में, यदि सप्लाई 100 ट्रिप प्रतिदिन जारी रही, तो अगले तीन माह में 1 लाख क्यूबिक मीटर मिट्टी हट जाएगी, जिसकी बाजार मूल्य 50 लाख रुपये से अधिक होगी—संपूर्ण रूप से सरकारी खजाने पर डाका।

सामाजिक प्रभाव के आईने से स्थानीय निवासी व अन्य समुदाय, जो जंगल पर निर्भर हैं, बेरोजगार हो रहे हैं। मिट्टी क्षरण से जल स्रोत प्रदूषित हो गए हैं, जिससे 10,000 से अधिक परिवारों को पीने के पानी की समस्या हो रही है। अप्रैल 2025 में ब्रह्मणी नदी से अवैध रेत निकासी के मामले में प्रतिदिन 9,000 क्यूबिक मीटर सामग्री हटाई जा रही थी, जो मिट्टी लूट के समान ही विनाशकारी है।

डॉ. राजकुमार यादव ने कहा, ₹सरकारी अधिकारियों व कर्मचारी के मिलीभगत के बिना इस स्तर का अवैध कार्य संभव कतई नहीं। खनन, वन और राजस्व अधिकारीयों ने मौन स्वीकृति के तहत आंखें मूंद रखी हैं।₹ उन्होंने मांग की है कि सभी संलिप्त वाहनों के लाइसेंस रद्द किए जाएं, जिम्मेदार अधिकारियों पर एफआईआर दर्ज हो, और विभागीय जांच के अलावा एनजीटी स्तर पर भी जांच हो। तहसीलदार राजगांगपुर ने मामले से अनभिज्ञता जताई, जबकि संलग्न राजस्व निरीक्षक ने शिकायत के बाद फोन भी उठाना बंद कर दिया। डीएफओ राउरकेला ने स्थान की जानकारी न होने का बहाना बनाया, और खनन अधिकारी राउरकेला ने जांच का आश्वासन देकर संपर्क तोड़ लिया।

राज्य सरकार ने अप्रैल 2025 में सुंदरगढ़ में अवैध खनन पर प्रोब का आदेश दिया था, लेकिन क्रियान्वयन शून्य। एनसीपी ने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र कार्रवाई न हुई, तो राज्यव्यापी आंदोलन छेड़ा जाएगा बल्कि नई दिल्ली के जंतरमंतर पर भी धरना दिया जाएगा

जंगल बचाओ, कानून जगाओ के तहत यह घटना ओडिशा के विकास मॉडल की पोल खोल रही है बल्कि बीते सरकार के अफसर द्वारा इस सरकार को बदनाम करने की साजिश का भी पर्दाफाश कर रही है जहां रेलवे जैसी बुनियादी परियोजनाएं पर्यावरण की बलि चढ़ा रही हैं। अवैध मिट्टी लूट न केवल राजस्व चोरी है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरणीय आपदा का बीज बो रही है। प्रशासन को अब चुप्पी तोड़नी होगी—वरना, जंगल की पुकार अनसुनी रह जाएगी। एनजीटी की 2025 की रिपोर्ट्स स्पष्ट चेतावनी देती हैं कि ऐसे मामलों में सख्ती ही एकमात्र समाधान है किंतु निद्रासिन अफसरों को समझाएं कौन? राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी "जल जंगल जमीन" को बचाने की अपनी मुहिम से कदापि पीछे नहीं हटेगी और संलिप्त अधिकारियों व कर्मचारियों पर उचित कार्रवाई हेतु मांग पर अड़ी रहेगी1

सड़कों पर संविधान, हाथों में उम्मीद — अमेरिका का जन-जागरण

18 अक्टूबर को, जब अमेरिका की सड़कों पर लाखों लोगों की हुंकार एक स्वर में गूँजी, तो यह महज़ एक प्रदर्शन नहीं था—यह एक राष्ट्र के गहरे जज़्बे का सशक्त विद्रोह था। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर की चकाचौंध से शिकागो की संकरी गलियों तक, वाशिंगटन डीसी की पेनसिल्वेनिया एवेन्यू से लॉस एंजेल्स के जीवंत जुलूसों तक, हर कदम पर एक ही नारा गूँजा: "लोकतंत्र ज़िंदाबाद, तानाशाही नहीं!" न कोई पत्थर फेंका गया, न कोई हथकड़ी खनकी—यह थी शांतिपूर्ण क्रांति की अडिग ताकत, जो संविधान की रक्षा के लिए उठी। यह वही अमेरिका है, जिसने कभी तानाशाहों को ठुकराया, जिसकी स्वतंत्रता की मशाल ने दुनिया को राह दिखाई। मगर आज, जब सत्ता का अहंकार लोकतंत्र को निगलने को तैयार है, एक सवाल हवा में गूँजता है: क्या यह जन-जागृति समय रहते विजय का परचम लहराएगी, या इतिहास फिर अपनी काली स्याही से दर्दनाक पन्ना लिखेगा?

आज का अमेरिका एक भीषण तूफान के चक्रव्यूह में फँसा है। नए सरकारी आदेशों ने संसद को हाशिए पर धकेल दिया, जैसे लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा हो। इमीग्रेशन नीतियाँ इतनी क्रूर हो चली हैं कि परिवार बिखर रहे हैं—मासूम बच्चे माता-पिता से छिन रहे हैं, बिना कागज़ वालों को सड़कों से बेरहमी से उठाया जा रहा है। शिकागो की गलियों में गुस्से का ज्वार उमड़ रहा है; लोग अमेरिकी झंडा उल्टा लहराकर चीख रहे हैं, क्योंकि ये नियम सिर्फ़ कागज़ी नहीं, इंसानियत पर तमाचा हैं। भारी टैक्स ने व्यापार को जकड़ लिया, कीमतें आसमान छू रही हैं, और नौकरियाँ रेत की तरह मुट्ठी से फिसल रही हैं। कनाडा और मैक्सिको जैसे पड़ोसियों के साथ व्यापारिक युद्ध ने रिश्तों को तार-तार कर दिया। स्वास्थ्य सेवाओं की कटौती ने लाखों लोगों को बुनियादी इलाज के लिए तरसा दिया, जैसे जीवन का अधिकार भी छीना जा रहा हो।

सबसे भयावह है शहरों का सैन्यीकरण। सरकारों के विरोध को ठेंगा दिखाते हुए सड़कों पर सैनिक उतार दिए गए हैं। इसे "अपराध से लड़ाई" का नाम दिया जा रहा है, मगर आलोचक इसे तानाशाही की ओर बढ़ता खतरनाक कदम करार देते हैं। सरकार ठप्प है, सरकारी कर्मचारी बिना वेतन के खून-पसीना बहा रहे हैं। व्हाइट हाउस ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर साझा की, जिसमें राष्ट्रपति को राजा का मुकुट पहने दिखाया गया—यह कोई हल्का मज़ाक नहीं, बल्कि सत्ता के अहंकार का खुला ऐलान था। कुछ नेताओं ने इसे अमेरिकी इतिहास का सबसे भ्रष्ट नेतृत्व ठहराया, चेतावनी दी कि सरकार बंदी का बहाना बनाकर शक्तियाँ हथियाई जा रही हैं। मगर संविधान की गूँज अटल है: "कोई राजा नहीं बनेगा, कोई अनधिकार शक्ति नहीं पाएगा!" न्यूयॉर्क में एक नेता ने तख्ती थामकर हुंकार भरी: "स्वास्थ्य सेवाएँ लौटाओ!" वाशिंगटन में एक सीनेटर ने भीड़ से कहा: "हम यहाँ हैं, क्योंकि हमारा देश हमारी जान है!"

यह आंदोलन महज़ बड़े शहरों की चकाचौंध तक सीमित नहीं रहा; यह एक राष्ट्रव्यापी ज्वार बन गया, जो छोटे कस्बों तक लहराया। 18 अक्टूबर को न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर में ढोल-नगाड़ों की गूँज के बीच जनसैलाब हुंकार भर रहा था: "यही है सच्चा लोकतंत्र!" शिकागो की सड़कों पर उल्टे झंडों के साथ नारे गूँजे: "हमारा शहर आज़ाद करो!" लॉस एंजेल्स में रंग-बिरंगे लिबास में प्रदर्शनकारी नाचते हुए भी गंभीर थे, उनकी तख्तियाँ चीख-चीखकर कह रही थीं: "संविधान को मज़ाक मत बनाओ!" वाशिंगटन में बिना वेतन के काम कर रहे सरकारी कर्मचारी सड़कों पर उतर आए, उनके चेहरों पर गुस्सा नहीं, बल्कि अपने देश के लिए जुनून था। पूरे देश में हज़ारों रैलियाँ उमड़ीं—महानगरों से लेकर गाँवों तक। आयोजकों ने दृढ़ता से कहा: "हम हिंसा नहीं, अपने हक़ की लड़ाई चाहते हैं!" फिर भी, कुछ लोग इन प्रदर्शनों को "राष्ट्र-विरोधी" ठहराकर बदनाम करने की साज़िश रच रहे हैं। एक बुज़ुर्ग, जिनका बचपन इटली की धरती पर बीता, ने अपनी दिल दहला देने वाली कहानी सुनाई। उनके चाचा ने तानाशाही के खिलाफ़ जंग लड़ी, यातनाएँ सहीं, और अपनी जान गँवाई। उनकी आँखों में डर और दृढ़ता थी, जब उन्होंने कहा: "दशकों बाद, मैंने कभी नहीं सोचा था कि अमेरिका में वही भयावह छाया फिर देखूँगा।" एक लेखिका ने गहरे दर्द के साथ लिखा: "ये नीतियाँ हमें अंधेरे गर्त में धकेल रही हैं, मगर लाखों लोगों का साथ उम्मीद की किरण जगा रहा है।" यह गुस्से का उबाल नहीं था—यह था अपने देश को बचाने का अटल संकल्प।

यह हुंकार सिर्फ़ अमेरिका की सरहदों तक नहीं रुकी। जर्मनी, स्पेन, और इटली की सड़कों पर भी लोग सड़कों पर उतरे। लंदन में अमेरिकी दूतावास के बाहर सैकड़ों की भीड़ ने एकजुटता दिखाई। कनाडा में गूँजा: "हमारी आज़ादी पर हाथ मत डालो!" यह सिर्फ़ एक देश की लड़ाई नहीं—यह वैश्विक स्वतंत्रता की पुकार है। अगर अमेरिका का लोकतंत्र डगमगाया, तो दुनिया भर में आज़ादी की मशाल मद्धम पड़ जाएगी। ये प्रदर्शन चीख-चीखकर बता रहे हैं कि दुनिया अमेरिका के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, क्योंकि उसका लोकतंत्र सिर्फ़ उसका नहीं, बल्कि समूची मानवता का प्रतीक है।

यदि ये नीतियाँ नहीं रुकीं, तो भविष्य के द्वार पर अंधकार ठहाकर हँसेगा। व्यापार युद्ध नौकरियों को लील लेगा, कीमतें आसमान की सैर करेंगी। इमीग्रेशन नियमों की मार से लोग बेघर होंगे, परिवारों की रीढ़ टूट जाएगी। सैनिकों की तैनाती शहरों को लोहे की सलाखों में जकड़ेगी। स्वास्थ्य सेवाओं की किल्लत बीमारियों को न्योता देगी, जैसे जीवन ही दाँव पर हो। मगर इन प्रदर्शनों ने एक नई सुबह का सूरज उगाया है। सड़कों पर जनसैलाब है, अदालतों में हक़ की जंग लड़ी जा रही है। अगले साल के मध्यावधि चुनाव उम्मीद की किरण बन सकते हैं। दुनिया के सहयोगी देश भी दबाव की ललकार बुलंद कर रहे हैं। यह महज़ सियासत की जंग नहीं, बल्कि नैतिकता का युद्ध है। अमेरिका के संस्थापकों ने राजशाही को ठुकराया था, क्योंकि वे जानते थे कि सत्ता का दुरुपयोग स्वतंत्रता को कुचल देता है। आज संविधान फिर गर्जना कर रहा है: "कोई राजा नहीं बनेगा!" सड़कें चीख-चीखकर बता रही हैं कि असली शक्ति जनता के दिलों में धड़कती है। एक बुज़ुर्ग की काँपती मगर दृढ़ आवाज़ गूँजती है: "मैंने तानाशाही की साये में ज़िंदगी जिया, इसे फिर नहीं देख सकता!" लाखों लोग, एक स्वर—यह लोकतंत्र का अटल जज़्बा है। अगर एकजुट रहे, तो अंधेरा छँटेगा। दुनिया की नज़रें टिकी हैं, इतिहास के पन्ने लिखे जा रहे हैं। चुप्पी अब अपराध है—आवाज़ उठाएँ! क्योंकि अमेरिका में राजा नहीं, सिर्फ़ नागरिक हैं, और यही नागरिक देश के सच्चे प्रहरी हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

शाहा स्पंज पोटका में दीपावली पूर्व मजदूर की झुलसकर मौत

फैक्ट्री सुरक्षा की जानकारी लेने व देने वाला अधिकारी उद्योग संपन्न तीनो सिंहभूम में नदारद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड के औधोगिक तीनों सिंहभूम जिलों में नियम पूर्वक फैक्ट्री जांच किस प्रकार होती या नहीं यह किसी को शायद ही मालुम हो । जिस पर सुरक्षा का होना अति आवश्यक है वह राम भरोसे चलता है । आये दिनों विभिन्न फेक्ट्रियों में असुरक्षा के कारण किसी न किसी की जान जाती रही है तथा मृतक परिवार व आश्रितों का क्या मिलता यह जगजाहिर है अन्यथा वे भला आन्दोलन पर क्यो उतरते।

इस क्रम में पोटका की जुड़ी पंचायत स्थित शाह स्पंज एंड पावर लिमिटेड खप्परसाई में काम के दौरान झुलसे मजदूर की इलाज कराते शनिवार को मौत हो गयी. मृतक का नाम राजेन्द्र उपाध्याय है. वह आदित्यपुर का रहने वाला था. वह 10 अक्तूबर को काम के दौरान डीएसई ब्लास्ट हुआ. इसके छींटे से राजेन्द्र बुरी तरह झुलस गया था. आनन-फानन में कंपनी प्रबंधन द्वारा उसे इलाज के लिए टाटा मुख्य अस्पताल में भर्ती कराया गया. जहां इलाज के दौरान राजेन्द्र की मौत हो गयी.

अब बात यहां तक पहुंची है कि एक संगठन ने कहा है सुरक्षा नही मिला तो आंदोलन किया होगा । राजेन्द्र के परिजनों ने आरोप लगाया है कि कंपनी प्रबंधन द्वारा सुरक्षा मानकों में अनदेखी की गयी. इससे राजेंद्र की मौत हो गयी. परिजनों के साथ जोहार झारखंड श्रमिक महासंघ के नेता राजीव पांडे ने उचित मुआवजा की मांग को लेकर टीएमएच अस्पताल में आंदोलन किया. शनिवार को उचित मुआवजा की मांग पूरी नही हो सकी. मुआवजा नहीं मिलने पर रविवार को जोहार झारखंड श्रमिक महासंघ यूनियन ने घोषणा की है कि शाह स्पंज एंड पावर लिमिटेड कंपनी का गेट जाम किया जायेगा. इधर इस संबंध में कंपनी के पदाधिकारी एसएन झा ने कहा है कि कंपनी में काम के दौरान मजदूर राजेन्द्र घायल हो गया था।

मालगाड़ी पटरी से उतरी, कई ट्रेनें रद्द

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर:आंध्र-ओडिशा-छत्तीसगढ़ को जोड़ने वाले केके रेलवे (विशाखापत्तनम-किरंदुल) पर शनिवार देर रात एक हादसा हुआ है। रेलवे (आंध्र) के चिमिडीपाली और तायदा स्टेशनों के पास रेलवे ट्रैक पर गिरी एक विशाल चट्टान से मालगाड़ी 41204 का इंजन भी टकरा गया।परिणामस्वरूप, रेल विभाग ने इस रेलवे लाइन पर रेल यातायात पर रोक लगा दी है। चूँकि पटरी से उतरी मालगाड़ी के सभी डिब्बे और इंजन रेलवे लाइन से हटाए जाने हैं और आवश्यक मरम्मत की जानी है, इसलिए रविवार, 19 तारीख को इस रेलवे लाइन पर चलने वाली कई यात्री ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। विशाखापत्तनम रेल मंडल (कोरापुट) के मुख्य परिवहन निरीक्षक पी. नारायण राव ने बताया कि विशाखापत्तनम-किरंदुल यात्री ट्रेन संख्या 58501 को रद्द कर दिया गया है, जबकि किरंदुल-विशाखापत्तनम यात्री ट्रेन संख्या 58502 को कोरापुट से किरंदुल लौटने का निर्देश दिया गया है। रेलवे ने ऐसी स्थिति के कारण रेल यात्रियों को हुई असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया है और सहयोग का अनुरोध किया है। मालगाड़ी पटरी से उतरी, कई ट्रेनें रद्द

नंदापुर, 1910 (तुषार कांत मोहंती): आंध्र-ओडिशा-छत्तीसगढ़ (विशाखापत्तनम-किरंदुल) को जोड़ने वाले केके रेलवे पर एक घटना घटी है। शनिवार की देर रात, रेलवे (आंध्र) के चिमिडीपाली और तायदा स्टेशन भी रेलवे ट्रैक पर गिरे एक विशाल चट्टान से टकरा गए, जिससे मालगाड़ी 41204 का इंजन पटरी से उतर गया। नतीजतन, रेलवे ने इस रेलमार्ग पर ट्रेन यातायात पर प्रतिबंध लगा दिया है। चूंकि पटरी से उतरी मालगाड़ी के सभी डिब्बे और इंजन रेलवे ट्रैक से हटाए जाने हैं और आवश्यक मरम्मत की जानी है, इसलिए रविवार, 19 तारीख को इस रेलमार्ग पर चलने वाली कई यात्री ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। विशाखापत्तनम रेलवे डिवीजन (कोरापुट) के मुख्य परिवहन निरीक्षक पी. नारायण राव ने कहा कि विशाखापत्तनम-किरंदुल यात्री ट्रेन संख्या 58501 को रद्द कर दिया गया है, जबकि किरंदुल-विशाखापत्तनम यात्री ट्रेन संख्या 58502 को कोरापुट से किरंदुल लौटने का निर्देश दिया गया है। रेलवे विभाग ने ऐसी स्थिति के कारण रेल यात्रियों को हुई असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया है और सहयोग मांगा है।

चक्रधरपुर रेल मंडल स्टेशन से 101 बोरी चोरी के चावल ,3 वाहन बरामद

नीचे बैठे चावल चोर

मौकाये बारदात चार चावल चोर गिरफतार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चक्रधरपुर। चक्रधरपुर रेल मंडल के गोइलकेरा स्टेशन क्षेत्र में मालगाड़ी से चावल चोरी की बड़ी वारदात का खुलासा हुआ है। रेल सुरक्षा बल ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चार लोगों को रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। मौके से 101 बोरी चावल और तीन टाटा मैजिक वाहन बरामद किए गए हैं।

घटना शुक्रवार की आधी रात की है, जब गोइलकेरा और महादेवशाल के बीच पोल संख्या 348/8 के पास बोकारो जाने वाली एक मालगाड़ी को चोरों ने वैक्यूम ड्रॉप कर रोक दिया। इसके बाद गिरोह के सदस्यों ने कई वैगनों का ताला तोड़कर चावल की बोरियां उतारनी शुरू कर दीं ।

सूचना मिलते ही आरपीएफ मनोहरपुर के थाना प्रभारी आरके पांडे और एसआई जय नंदन मिश्रा के नेतृत्व में टीम ने त्वरित छापेमारी की और चार लोगों को चोरी करते हुए पकड़ लिया।

गिरफ्तार आरोपियों में तीन वाहन चालक शामिल हैं, जो चोरी किए गए चावल को टाटा मैजिक वाहनों पर लादकर चक्रधरपुर ले जाने की तैयारी में थे। हालांकि, अंधेरे का फायदा उठाकर गिरोह के कुछ सदस्य मौके से फरार हो गए, जिनकी तलाश जारी है।

आरपीएफ अधिकारियों ने बताया कि इस गिरोह के तार पहले की वारदातों से भी जुड़े हो सकते हैं। गौरतलब है कि 10 सितंबर को सोनुआ स्टेशन क्षेत्र में भी इसी तरह चोरों ने मालगाड़ी के तीन वैगनों का ताला तोड़कर 50 बोरी चावल की चोरी की थी।

समबाय समितियों से सभी जानकारी एकत्र करें और ARCS या RCS डेटा एकत्र करें और नागरिकों को RTI अधिनियम के तहत जानकारी प्रदान करें

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: कई लोग तर्क देते हैं कि केरल के थलापलाम सहकारी बैंक मामले में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार, सहकारी समितियां RTI अधिनियम के दायरे में नहीं आती हैं। इसलिए, ये समितियां नागरिकों को RTI अधिनियम के तहत जानकारी प्रदान नहीं करेंगी। आयोग ने ऐसी दलीलों को स्वीकार किया और सैकड़ों मामलों को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि चूंकि सहकारी समितियां RTI अधिनियम के दायरे में नहीं हैं, इसलिए उन्हें जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन मेरे एक मामले, शिकायत संख्या 2009/2023 (प्रदीप प्रधान बनाम A. R. C. S., ढेंकनाल) में सूचना आयोग की सुनवाई के दौरान लगातार मेरे आवेदन को खारिज करने की कोशिश की जा रही थी, जिसका मैंने कड़ा विरोध किया और सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला नहीं दिया कि सहकारी समितियां बिल्कुल भी जानकारी प्रदान नहीं करेंगी।

सुप्रीम कोर्ट ने सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 2(एफ) के आधार पर पैरा 52 में दिए अपने फैसले में कहा है कि आरसीएस या एआरसीएस सहकारी समितियों से जानकारी एकत्र करने और नागरिकों को उपलब्ध कराने के लिए अपनी प्रशासनिक शक्ति का प्रयोग करेंगे।

सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 2(एफ) ₹सूचना₹ को परिभाषित करती है और सार्वजनिक प्राधिकरण मौजूदा कानून के तहत अपनी शक्तियों के तहत संबंधित निजी निकायों से जानकारी एकत्र करेंगे और आवेदक को जानकारी प्रदान करेंगे।

इसलिए, सहकारी समितियों से संबंधित जानकारी सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार या सहकारी समितियों के सहायक रजिस्ट्रार द्वारा एकत्र की जाएगी, जो इन निकायों के प्रबंधन को नियंत्रित करते हैं और आवेदक को जानकारी प्रदान करते हैं।

मेरी दलील या जानकारी एआरसीएस ने ढेंकनाल को आयोग से जानकारी प्राप्त करने के बाद जानकारी प्रस्तुत करने का निर्देश दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023